राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.)
द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

GOLD MIND

NATIONAL EDUCATION POLICY NEP 2020

निराली हिन्दी

- शिक्षाप्रद कहानियाँ
- शाब्दिक अर्थ
- अभ्यास कार्य

गरिमा सक्सेना
सर्वेश कुमार

सहायक पुस्तिका
6-8

अभिनंदन-6

मातृ-मंदिर (कविता) 1

(क) मौखिक

1. भारत माता के मंदिर में सभी को समानता का अधिकार है। वहाँ सभी का कल्याण होता है और सभी को प्रसाद मिलता है।
2. कवि वैर से प्रेम-उन्माद को भला बताता है।
3. अजातशत्रु बनने के लिए सबको मित्र बनाना पड़ेगा।
4. कवि भारत-माता की प्रसव-वेदना को समझने की बात करता है क्योंकि जो उसकी प्रसव वेदना को समझ जाएगा, वही उसका पुत्र है।

(ख) लिखित

1. शिव कल्याण से आशय 'सबका भला' होने से है।
2. कवि भारत में निहित विविध धर्मों का स्वागत, आदर तथा सबका एक-सा सम्मान बताता है।
3. भारतीय संस्कृति में भिन्न-भिन्न, नव संस्कृतियों का यहाँ पर ज्ञान फैला हुआ है तथा आपस में सभी धर्म मिल-जुलकर रहते हैं। किसी का किसी से कोई वैर नहीं है।
4. कवि सौ-सौ आदर्शों को मिलाकर एक चरित्र गढ़ने पर बल देता है।
5. इस कविता में कवि, एक-साथ मिलकर प्रेम से रहने तथा सभी धर्मों को सम्मान देने की शिक्षा देता है।

(क) विषय-वस्तु का ज्ञान

1. सभी धर्मों का समान सम्मान, सबका आदर, सबका स्वागत यही भारत धर्म की विशेषता हैं।
2. भारत के लोग सम्मान व आदर सभी धर्मों को प्रदान करते हैं।
3. इस कविता के कवि का नाम मैथिलीशरण गुप्त है।
4. आदर — सम्मान सुलभ — आसान (सहज मिलने वाला)
   सम — समान ध्यान — अराधना

(ख) दिए गए पद्यांश का भावार्थ यह है कि हमें सभी से प्रेमपूर्वक व सम्मानपूर्वक व्यवहार कर उन्हें अपना मित्र बना लेना चाहिए। यदि हम किसी को मन से अपनाते हैं तो वह भी मन से हमारा मित्र बन जाता है।

भाषा-बोध

(क)	कल्याण	—	हित	बुद्धि	—	ज्ञान
	पवित्र	—	निर्मल	हर्ष	—	प्रसन्नता
	लाभ	—	फ़ायदा	न्याय	—	इंसाफ
(ख)	आदर	—	अनादर	सुलभ	—	दुर्लभ
	गुण	—	अवगुण	प्रेम	—	घृणा
	हर्ष	—	विषाद	ज्ञान	—	अज्ञान
(ग)	अव	—	अवगुण, अवरोध	निर्	—	निर्दोष, निरोगी
	प्र	—	प्रकार, प्रभात	सम	—	समकालीन, समकक्ष
	उप	—	उपहार, उपयोगी	अ	—	अधर्म, अज्ञान
(घ)	प्रसाद	—	पुल्लिंग	माता	—	स्त्रीलिंग
	शत्रु	—	पुल्लिंग	कंठ	—	पुल्लिग
	चित्र	—	पुल्लिग	कली	—	स्त्रीलिंग
(ङ)	समता	—	समानता (✗)	विषमता (✓)	—	बराबरी (✗)
	सम्मान	—	अपमान (✓)	आदर (✗)	—	मान (✗)
	प्रेम	—	प्यार (✗)	घृणा (✓)	—	अनुराग (✗)
	मित्र	—	शत्रु (✓)	दोस्त (✗)	—	इनसान (✗)
	हर्ष	—	खुशी (✗)	प्रसन्नता (✗)	—	विषाद (✓)

2 हिम्मती सुमेरा (कहानी)

(क) मौखिक

1. सुमेरा साहसी और हिम्मती बालक था।
2. सुमेरा के पिता बस अड्डे पर इधर-उधर माल ढोते थे।
3. सुमेरा ने अपने स्कूल के अध्यापक से तीस रुपये की माँग की ताकि वह अपना कोई काम शुरू कर सके।
4. सुमेरा का सामान कमेटी की गाड़ी में बैठें चार-पाँच लोगों ने उठाया क्योंकि उसके पास लाइसेन्स नहीं था।
5. राजा साहब ने सुमेरा को लाइसेन्स तथा सौ रुपये देकर उसकी सहायता की।

(ख) लिखित

1. सुमेरा के पिता ने उसे शिक्षा दे रखी थी कि चोरी, झूठ और बेइमानी से बढ़कर कोई पाप दुनिया में नहीं है।

2. पढ़ने-लिखने के साथ ही सुमेरा को काम करने के लिए विवश होना पड़ा क्योंकि उसके पिता को लकवा मार गया था और उनके दोनों पैर बेकार हो गये थे और वे अब कुछ काम नहीं कर सकते थे।
3. सुमेरा ने अपना काम शुरू करने के लिए मास्टर साहब से तीस रुपये उधार माँगें। इस पर मास्टर साहब ने उसे तीस रुपये देते हुए कहा कि यह उधार नहीं तुम्हारा इनाम है तब सुमेरा ने कहा कि मैंने कुछ ऐसा काम नहीं किया कि मुझे इनाम दिया जाए इसलिए यह पैसे उधार हैं और मैं इन्हें वापस कर दूँगा। सुमेरा की इस बात पर उन्होंने उसकी पीठ थपथपाई।
4. सब्जी मण्डी में सुमेरा के सामान को कमेटी की गाड़ी उठा कर ले गयी क्योंकि उसके पास लाइसेन्स नहीं था इसलिए सहायता के लिए उसे राजा साहब के पास जाना पड़ा।
5. सुमेरा ने कठिन परिश्रम से अपना कारोबार आगे बढ़ाया। उसने अपने पिता का इलाज करवाकर, उन्हें इस लायक कर दिया कि शाम को जब वह कॉलेज पढ़ने जाता तो उसके पिता दुकान पर बैठकर फल बेचते। कुछ ही वर्षों में उसने अपनी झुग्गी तुड़वाकर, वहाँ दो कमरों का एक पक्का मकान बनवा लिया।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. सुमेरा को संतरे बेचकर धन कमाने की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि उसके पिता को लकवा मार गया था।
2. सुमेरा ने संतरे खरीदने के लिए, पैसे अपने मास्टर जी से उधार लिए।
3. सुमेरा ने शाम तक छत्तीस रुपये के संतरे बेचे।
4. समानार्थी—

मंडी	—	बाजार	एकमात्र	—	अकेला
आखिर	—	आखरी, अन्तिम	शाम	—	संध्या

(ख) 1. सुमेरा ने मास्टर साहब से—क्योंकि उसने कुछ ऐसा काम नहीं किया था कि उसे इनाम दिया जाए।
2. राजा साहब ने सुमेरा से क्योंकि उसका सामान कमेटी के लोग उठा ले गये थे।

भाषा-बोध

(क) हिम्मत — ह् + इ + म् + म् + अ + त् + अ
गरीब — ग् + अ + र् + ई + ब् + अ

बेईमानी — ब् + ए + ई + म् + आ + न् + ई
शिकायत — श् + इ + क् + आ + य् + अ + त् + अ
अस्पताल — अ + स् + प् + अ + त् + आ + ल् + अ
खिड़की — ख् + इ + ड़् + अ + क् + ई

(ख) मन — तौल, इन्सान का मन
पास — करीब, सफल होना
कर — ब्याज, हाथ
मान — आदर, सहमत

(ग)

अच्छा	बालक
बड़ा	बाजार
ताजी	सब्जियाँ
दयालु	मास्टर
मजबूत	दरवाजा

(घ) राजा — राजन
बच्चा — बालक
पिता — जनक
रात — रजनी
दिन — दिवस

(ङ)

बच्चा —	बचपन (✓)	बालक (✗)
इंसान —	मनुष्य (✗)	इंसानियत (✓)
खुश —	नाखुश (✗)	खुशी (✓)
कमाना —	कमाई (✓)	कमाऊ (✗)
ईमानदार —	सच्चा (✗)	ईमानदारी (✓)
गरीब —	गरीबी (✓)	निर्धन (✗)
निपुण —	कामकाजी (✗)	निपुणता (✓)

भिखारिन (कहानी) 3

(क) मौखिक

1. श्वेत वस्त्रधारी अंधी भिखारिन को पैसे देन के बजाय झिड़कियाँ दिया करते थे।
2. अंधी भिखारिन ने अपनी जमा पूँजी धरोहर के रूप में सेठ जी के पास रखी।
3. अंधी भिखारिन ने अपने बेटे मोहन को स्वस्थ करने के लिए दवा-दारु की, झाड़-फूँक से भी काम लिया, टोने-टोटके भी किए।
4. सेठ जी ने अंधी भिखारिन से बच्चे को इसलिए छीन लिया क्योंकि वह उनका पुत्र था, जो सात साल पहले मेले में खो गया था।

5. अंधी को सेठ जी से घृणा इसलिए हो गयी क्योंकि उन्होंने उनकी जमा पूँजी उसे नहीं दी थी ताकि वह अपने बच्चे का इलाज करवा सके।
6. अंधी ने अपनी धरोहर वापस लेने से मना कर दिया क्योंकि वह उसने अपने बच्चे मोहन के लिए जमा की थी। जब मोहन सेठ जी के पास था तो पैसे भी उन्होंने सेठ जी के पास ही रहने दिए ताकि वो मोहन को दे दें।

लिखित

1. अंधी भिखारिन अपने बच्चे का पालन-पोषण भीख माँगकर करती थी।
2. अंधी पैसे अपने बच्चे मोहन के लिए बचाकर रखती थी।
3. अंधी सेठ जी के पास अपने पैसे वापस लेने गयी लेकिन सेठ जी ने पैसे देने से मना कर दिया इसलिए वह निराश हो गयी।
4. सेठ जी ने मोहन को स्वस्थ करने के लिए लाख यत्न किए। अच्छे-अच्छे डॉक्टरों को दिखाया।
5. सेठ जी ने झोपड़ी में जाकर अंधी भिखारिन से कहा कि—"बुढ़िया, तुम्हारा बच्चा मर रहा है। डॉक्टर निराश हो गया है, रह रहकर वह तुम्हें पुकारता है। अब तुम ही उसके प्राण बचा सकती हो। चलो और मेरे.... नहीं, नहीं, अपने बच्चे के प्राण बचा लो।
6. सेठ जी को अंधी की धरोहर वापस न करने वाले अपराध का दुख हुआ, क्योंकि उससे उसके बच्चे के प्राण संकट में पड़ गये।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. मोहन अंधी का बेटा था।
2. सेठ जी ने अंधी को अपने पास रखने की प्रार्थना की क्योंकि उसने उसके बच्चे की रक्षा की थी और वह उसे अपनी माँ समझता था।
3. सेठ जी अंधी को उसका वह धन दे रहे थे, जो उसने उनके पास जमा करके रखा था।
4. स्वस्थ — अस्वस्थ सहमत — असहमत
   विवश — प्रोत्साहन पास — दूर

भाषा-बोध

(क) स्त्री — नारी, औरत बच्चा — शिशु, बालक
जमीन — धरती, धरा आँख — नेत्र, चक्षु

(ख) 1. अंधी मंदिर के पास भीख माँगती थी।
2. अंधी की गोद में वह बालक कौन था?
3. अरे! मोहन मिल गया।

4. सेठ जी के पास धनी, निर्धन, भिखारी, ग्रामीण, शहरी सभी आते-जाते रहते थे।

(ग) सुबह — शाम दयालु — निर्दयी
घृणा — प्रेम

(घ) दिन — रात के बाद दिन और दुख के बाद सुख आता ही है।
दीन — अंधी की दशा दीन हीन थी।

धन की खोज (जातक-कथा) 4

(क) मौखिक

1. आचार्य ने अपने शिष्यों को प्रांगण में बुलाकर कहा कि मेरी कन्या विवाह-योग्य हो गई है, किन्तु उसका विवाह करने के लिए मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है। समझ में नही आता कि क्या करूँ?
2. आचार्य को शिष्यों के परिवार वालों से धन लेने में संकोच हो रहा था।
3. आचार्य ने अपने निर्धन शिष्यों के बारे में सोचकर निर्णय लिया कि तुम भी अपने घर से कुछ न कुछ ले आना, मगर किसी की दृष्टि न पड़े।
4. आचार्य ने ये शब्द अपने उस शिष्य से कहे, जो कुछ भी नहीं लाया था।

(ख) लिखित

1. आचार्य की चिंता का कारण उनकी पुत्री थी, जो विवाह योग्य हो गयी थी।
2. धनवान परिवारों के विद्यार्थियों ने आचार्य को तसल्ली दी कि हम अपने माता-पिता से धन माँग लाएँगे, आप उसे स्वीकार कर लेना क्योंकि उनकी कन्या के विवाह के लिए उनके पास धन नहीं था।
3. आचार्य ने कहा कि इस तरह से धन लाओ कि कोई तुम्हें देखे नहीं।
4. धन न लाने वाले विद्यार्थी ने धन न लाने का कारण बताया कि ऐसे स्थान पर कोई दूसरा रहे या न रहे, मैं तो वहाँ उपस्थित रहता ही हूँ। अन्य कोई देखे या न देखे, मैं तो अपने कुकर्म को देखूँगा ही।''
5. आचार्य ने अपनी कन्या के विवाह के लिए अपने उस शिष्य को चुना, जो कुछ नहीं लाया था क्योंकि गुरु के कहने पर भी, उसने पाप का मार्ग नहीं अपनाया।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. गुरुदेव को अपने विद्यार्थी से शिकायत थी कि वह कन्या के विवाह के लिए कुछ भी नहीं लाया था।

2. विद्यार्थी चुपचाप (चोरी से) धन लाने में असमर्थ रहा।
3. गुरुदेव ने अपने विद्यार्थी की यह बात सुनकर गर्व महसूस किया और उसे गले से लगा लिया।
4. गुरुदेव ने अपनी कन्या के लिए उचित वर की तलाश में शिष्यों की परीक्षा ली।

(ख) 1. गुरु ने अपने शिष्यों से—क्योंकि उन्हें अपनी कन्या के लिए धन की आवश्यकता थी।
2. गुरु ने अपने एक शिष्य से—क्योंकि वह कुछ नहीं लेकर आया था।

भाषा-बोध

(क)	यशस्वी	—	चिरंजीव	वंचित	—	बेदखल
	लाज	—	इज्जत	आचार्य	—	गुरु
	छात्र	—	शिष्य	निर्धन	—	गरीब
(ख)	विद्वान	—	मूर्ख	प्रिय	—	अप्रिय
	प्रसिद्ध	—	अप्रसिद्ध	निर्धन	—	धनवान
(ग)	विद्वान	—	विद्वानी, विद्वता	अच्छा	—	अच्छाई
	वीर	—	वीरता	गुरु	—	गुरुत्व
	योग्य	—	योग्यता	निर्धन	—	निर्धनता

(घ) 1. मैंने — गुरु के लिए
2. उसका — गुरु की कन्या के लिए
3. तुम — शिष्यों के लिए
4. तुम — शिष्य के लिए

(ङ) गुणवान रूपवान
धनवान बलवान
चरित्रवान गाड़ीवान

(च) विशाल प्रसिद्ध विद्वान यशस्वी

(छ) गुरु — शिक्षक, बृहस्पति
पास — करीब, सफल होना
भाव — मतलब, आशय
बस — गाड़ी, समाप्ति

(ज) 1. जिसका विवाह हो गया हो — विवाहित
2. गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा — गुरुदक्षिणा

3. जो संकोच करता हो — संकोची
4. जो विश्वास के योग्य न हो — अविश्वासी
5. गुरु रूपी देवता — देवगुरु या गुरुदेव
6. जिसके पास धन न हो — निर्धन

(झ) प्रकाश — ज्योति, प्रभा, चमक
वृक्ष — वृक्ष, पादप, विटप
शरीर — देह, काया, तन
कपड़ा — वसन, परिधान, वस्त्र
रात — निशा, रात्रि, रजनी

कश्मीर की वादी (रूपक) 5

(क) मौखिक

1. भारतीय कश्मीर जम्मू और कश्मीर प्रान्त का एक हिस्सा है।
2. भारतीय कश्मीर घाटी में छः जिले हैं—श्रीनगर, बड़गाम, अनन्तनाग, पुलवाया, बारामुला और कुपवाड़ा।
3. झील में तैरते हुए घर को 'हाउस वोट' कहा जाता है। उसमें दो या तीन सोने के कमरे, स्नान-घर, बैठक सबकुछ होता है।
4. निशात बाग का अर्थ होता है प्रसन्नता। इसे शाहजहाँ के ससुर आसफ जहाँ ने बनवाया था। यह सीड़ीनुमा बाग है।
5. सोनमर्ग पर्यटकों के लिए निराली सैरगाह है। समुद्र तल से लगभग 3000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित, यह एक रमणीक स्थल है। सिंधु नदी के दोनों ओर फैले, यहाँ के मार्ग सोने जैसे सुन्दर दिखाई देते हैं।

(ख) लिखित

1. कश्मीर के बारे में कवियों ने कहा है कि 'अगर इस धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।
2. प्राचीन काल में यहाँ भगवान शिव की पत्नी सती रहा करती थीं। यहाँ एक राक्षस नाग भी रहता था। जिसे ऋषिकश्यप और देवी सती ने मिलकर हरा दिया था तथा झेलम नदी में बहा दिया था। इसलिए इस जगह का नाम सतीसार से कश्मीर पड़ा। इससे अधिक तर्क संगत प्रसंग यह है कि इसका वास्तविक नाम कश्यप मर (कछुओं की झील) था। इसी से कश्मीर नाम निकला।

3. डल झील में तैरते खेत लकड़ी के बड़े-बड़े फट्टों पर मिट्टी, घास, बुरादा आदि जमाकर तैयार किए जाते हैं। इन खेतों को अपनी नाव के साथ बाँधकर इनके मालिक, इन्हें इधर-उधर कहीं भी ले जा सकते हैं।
4. कश्मीर के बाग बगीचे यहाँ की सुन्दरता को चार चाँद लगा देते हैं। शालीमार बाग सीड़ीनुमा है। यह रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियों, फव्वारों की कतारों तथा हरे-भरे वृक्ष से सजा है। निशात बाग भी सीड़ीनुमा है। चश्मे-शाही बाग में झरने का मीठा पानी इसकी प्रमुख विशेषता है।
5. कश्मीर की घाटी का पर्यटन सम्बन्धी महत्व बहुत अधिक है क्योंकि यहाँ बहुत सुन्दर बाग-बगीचे शालीमार, निशात बाग तथा चश्मे-शाही बाग हैं। सुन्दर सरोवर डल, बुलर और नगीन हैं। यहाँ मौसम गर्मियों में सुहावना और सर्दियों में बर्फीला होता है। इसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है।
6. कश्मीर की जनता आज पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे, भयानक आतंकवाद से जूझ रही है। भारतीय फौज द्वारा चलाए जा रहे आतंकवाद, विरोधी अभियान से कश्मीरियों के कई मानवाधिकारों का हनन ही हुआ है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) ''अगर इस धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।''

(ख) 1. मुश्लिम 2. सतीसार 3. जहाँगीर
4. सोनमर्ग

भाषा-बोध

(क) धरती — धरा, वसुन्धरा दुनिया — संसार, जगत
झील — सर, सरोवर बाग — बगीचा, उद्यान

(ख) कश्मीर — क् + अ + श् + म् + ई + स् + र् + अ
सैरगाह — स् + ऐ + र् + अ + ग् + आ + ह् + अ
कुपवाड़ा — क् + उ + प् + अ + व् + आ + ड़् + आ
भगवान — भ् + अ + ग् + अ + व् + आ + न् + अ

(ग) खूबसूरत — खूबसूरती विशाल — विशालतम
भव्य — भव्यतम सती — सतित्व
सजाना — सजावट मानव — मानवता

(घ) 1. यह — सर्वनामिक विशेषण
2. वे — सर्वनाम
3. वह — सर्वनामिक विशेषण
4. वह — सर्वनाम
5. उस — सर्वनामिक विशेषण

(ङ) कु — कुमारी, कुपवाड़ा, कुरुप
सु — सुकन्या, सुन्दर, सुशील
स्व — स्वरूप, स्वार्थी, स्वर्ग
चिर — चिरंजीव, चिराग, चिरांद
परा — पराया, पराजित, परायी
अन्तर — अन्तरआत्मा, अन्तरयामी, अन्तरदृष्टि,
नि — निरोगी, निस्वार्थ, निश्चल

(च)

अस्त	—	डूब जाना	सैर	—	घूमना
सेर	—	किलो	भाग	—	हिस्सा
बाग	—	फुलवारी	आदी	—	आदत
आदि	—	शुरुआत	हस्त	—	हाथ

घोड़ा (कविता) 6

(क) मौखिक

1. कवि घोड़ा बनने की कल्पना करता है।
2. छाछ और दूध पिलाता से आशय—दूध और मट्ठा पिलाने से है।
3. कवि घोड़ा बनकर बच्चों को भाले—भाले इन्सानों से मिलवाना चाहता है।
4. घोड़े पर सवार होकर, बच्चे जंगल में सूरज कैसे उगता है, तीहड़ कैसे दौड़ता है, पिंडुक कैसे दाना चुगता है; बगुले कैसे ध्यान लगाते हैं, मछली कैसे डोलती है, टिटरी आसमान में कैसे चक्कर काटती है, हिरन झुण्ड में कैसे पानी पीते हैं आदि देखते हैं?

(ख) लिखित

1. कवि घोड़ा बनकर बच्चों को पहाड़ी की वादी में घुमाता है। घर के आगे रुककर दूध और मट्ठा पिलाता है। जंगल की सैर कराकर मीठे फल खिलाता है।

2. बच्चे उगते हुए सूरज के दर्शन जंगल में करते हैं।
3. बच्चे जंगल में कवि के निशान खोजते हुए आते हैं।
4. कवि इसे नकली दुनिया इसलिए बताता है क्योंकि यह सब अपने और ख्वाबों में होता है।
5. इस कविता में कवि घोड़ा बनकर, पहाड़ी की वादियों में घूमने, किसी घर के आगे रुककर दूध-मट्ठा पीने, भोले-भाले इन्सानों से मिलने, जंगल में जाकर मीठे-फल खाने, रंग-बिरंगी चिड़ियों, खरगोश, मेमनों की मस्ती देखने, सुबह सूरज के उगने, तीतर, पिंडुक, बगुले, मछली, टिटरी, हिरन आदि के खाने-पीने के तरीके, चीते के पैरों के निशान छोड़ने तथा अपने पैरों के निशान जंगल में छोड़ने आदि। बच्चों के साथ अपनी मस्ती का वर्णन किया है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

व्याख्या—कवि इन पंक्तियों में हरे-भरे जंगल में किस प्रकार मस्ती कटती है, उसे बच्चों को दिखाने की बात करता है। झाड़ी में छिपकर प्यारे-प्यारे खरगोश दिखाने, उछलते मेमनों के साथ खेल खिलाने तथा पूरी रात ढमाढम ढोल, झमाझम-झाँझ, नाच गाने में काटने की बात कह रहा है।

भाषा-बोध

(क)

घोड़ा	—	घोटक, तुरंग	दूध	—	दुग्ध, पय
जंगल	—	वन, अरण्य	सूरज	—	सूर्य, दिनकर
नदी	—	सरि, सरिता			

(ख)

सुबह	—	प्रात: (✗)	शाम (✓)
शांत	—	अशांत (✓)	खामोश (✗)
खुश	—	नाखुश (✓)	प्रसन्न (✗)

(ग)

मोटा आदमी	कच्ची कली
मीठा फल	लंबी पूँछ
सफेद घोड़ा	चतुर व्यक्ति

(घ)

दिखा + ता	—	दिखाता	महत्व + पूर्ण	—	महत्वपूर्ण
बल + वती	—	बलवती	मस्त + ई	—	मस्ती
पागल + पन	—	पागलपन	गुण + वान	—	गुणवान

लाल अंगारों की मुस्कान (ऐतिहासिक कथा) 7

(क) मौखिक

1. रणथंभौर पर राणा हमीर का राज था।
2. रणथंभौर में शरणागत के रूप में माहमशाह महाराज अलाउद्दीन खिलजी का खादिम आया था।
3. बादशाह ने माहमशाह को फाँसी की सजा सुनाई थी।
4. राणा हमीर के सलाहकारों ने ''महाराज, माहमशाह की तलवार आज आपके द्वारा शरणार्थी है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में ले लें, दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्यौता क्यों दे?'' कहकर अनुत्साहित किया।
5. अलाउद्दीन खिलजी ने राणा के पास संदेश भिजवाया कि—''क्या तुम नहीं जानते, हमीर! जो तुमने माहम को यों अपनी छत दी! खैर, मैं भूलों को माफ करना चाहता हूँ। कोई बात नहीं—माहम को अपनी देख-रेख में मेरे सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफी माँगो।''
6. राणा हमीर ने राजपूती वचन को निभाने के लिए अपना सर्वस्व राज्य, तथा राज्य के लोग बलिदान कर दिए, यहाँ तक कि युद्ध करते-करते राज्य का एक प्राणी साहस के साथ बलिदान हो गया और स्त्रियों ने भी जौहर कर लिया।

(ख) लिखित

1. माहमशाह ने राणा हमीर के सामने हाजिर होकर, उनसे निवेदन किया कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, महाराज।''
2. क्योंकि राणा एक राजपूत थे और शरणार्थी की रक्षा करना राजपूत का कर्तव्य है।'' यह उनका धर्म था।
3. राणा ने माहमशाह को तसल्ली देते हुए कहा कि—''माहमशाह, रणथंभौर अब तुम्हारा घर हैं, आराम से यहाँ रहो और विश्वास रखो कि अब किसी की हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ तिरछी आँखों से देखे। कोई कष्ट हो तो कहना।
4. अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर आक्रमण इसलिए किया क्योंकि राणा हमीर ने माहमशाह को शरण दी थी। और अन्त में रणथम्भौर बलिदान हो गया। रणथंभौर के योद्धा अपनी आखरी साँस तक लड़ें।

औरतों ने भी जौहर किया। रणथंभौर की ये शहादतें, बलिदान, और कुरबानियाँ वीरता के इतिहास में अमर हैं।

5. राणा हमीर एक वीर, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ और वचनपालक योद्धा थे।

विषय-वुस्त का ज्ञान

(क) 1. उक्त कथन राणा हमीर द्वारा कहे गये।

2. माहम अलाउद्दीन खिलजी का खादिम था तथा वह अलाउद्उदीन खिलजी से अपनी रक्षा चाहता था।

3. वह बात राणा हमीर द्वारा माहम को शरण देना था, जिसने दिल्ली के तख्त की क्रोधाग्नि को न्यौता मिला था।

4. न्यौता — निमन्त्रण

स्वर्ग	—	देवलोक	चुभन	—	टीस
पूर्वज	—	प्रवर्तक	अनुभव	—	अहसास

(ख) राणा हमीर के सलाहकार भी महाराज के तर्क को सुनकर अब व्यवहार बुद्धि यानि इस युद्ध का परिणाम सोचे बिना भावनाओं में बहकर बोल पड़े—''धन्य महाराज।''

(ग) 1. माहमशाह ने राणा हमीर से—क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी ने उसे फाँसी की सजा सुनाई थी।

2. अलाउद्दीन खिलजी ने राणा हमीर से—क्योंकि उसे सिर्फ माहमशाह चाहिए था, युद्ध नहीं।

3. हमीर ने माहमशाह से—क्योंकि वह अलाउद्दीन खिलजी के पास आत्मसमर्पण करने के लिए जाने की अनुमति माँगने आया था।

भाषा-बोध

(क)

दीनता	—	दीन (✗)	दैयनीय (✓)
स्वर्ग	—	जन्नत (✗)	स्वर्गिक (✓)
समाज	—	सामाजिक (✓)	सामाजिकता (✗)

(ख)

प्यासी	तृप्त
पवित्र	अपवित्र
उम्मीद	नाउम्मीद
जीवन	मरण
जीत	हार

(ग) शरण में आया हुआ — शरणार्थी

सलाह देने वाला	—	सलाहकार
घमंड करने वाला	—	घमण्डी
जिसकी सीमा न हो	—	असीमित
जो आने वाला	—	आगन्तुक

(घ)	शक्तिवान	—	शक्ति + वान	बहादुरी	—	बहादुर + ई
	पीड़ित	—	पीड़ + इत	पवित्रता	—	पवित्र + ता

पंच परमेश्वर (कहानी) 8

(क) मौखिक

1. जुम्मन तथा अलगू चौधरी के बीच गाढ़ी मित्रता थी।
2. जुम्मन ने अपनी ख़ालाजान को रोटी कपड़ा देने का वचन दिया था।
3. खाला ने जुम्मन से कहा कि तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह नहीं होगा। तुम मुझे रुपये दिया करो। मैं अपना पका-खा लूँगी। जुम्मन द्वारा यह बात न मानने पर खाला को पंचायत बुलानी पड़ी।
4. जुम्मन अलगू चौधरी से नाराज था क्योंकि उसने खाला के पक्ष में निर्णय दिया था।
5. समझू साहू ने सरपंच के रूप में जुम्मन को चुना था।

(ख) लिखित

1. जुम्मन की पत्नी खाला के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह उन्हें रोटियाँ देने के बजाय, कड़वी बातें सुनाती थीं।
2. खाला ने कहा कि पंच न किसी के दोस्त होते हैं और न दुश्मन।
3. अलगू चौधरी के सरपंच चुने जाने पर जुम्मन खुश था क्योंकि उसे लगता था कि अलगू उसका मित्र है और वह उसके पक्ष में निर्णय देगा।
4. समझू साहू ने अलगू चौधरी से बैल लिया था मगर पैसे नहीं दिए थे, ये कहकर कि बैल पहले से बीमार था। दोनों में इसी बात को लेकर विवाद था।
5. सरपंच के आसन पर बैठकर जुम्मन के अंदर जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा—''मैं इस वक्त इंसाफ के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से जो निकलेगा, वह खुदा की जुबान होगी। अत: मेरा सत्य से डिगना उचित नहीं है।''

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. जुम्मन शेख का उनकी खाला से झगड़ा था।

2. जुम्मन शेख को अलगू चौधरी से यह उम्मीद नहीं थी कि वह उनके पक्ष में निर्णय नहीं देगा।
3. इस फैसले ने जुम्मन शेख को अलगू चौधरी का दुश्मन इसलिए बना दिया क्योंकि उनकी मित्रता जड़ से खत्म हो गयी थी और उसको बहुत अपमानित महसूस हुआ था।
4. उम्मीद — नाउम्मीद मित्रता — शत्रुता

(ख) 1. जुम्मन ने खाला से—क्योंकि उसने रुपये देने से इनकार कर दिया और कहा फैसला हो जाए।
2. खाला ने पंचों से—क्योंकि जुम्मन ने खाला को रोटी-कपड़ा देना कबूला था, लेकिन अब न पेट भर रोटी मिलती है और न तन पर कपड़ा।
3. जुम्मन ने अपने आप से—क्योंकि वह अपने अंदर जिम्मेदारी का भाव महसूस कर रहा था।

भाषा-बोध

(क) मित्र — दोस्त, सखा बेटा — पुत्र, सुत
बैल — वृष, वृषभ पानी — जल, नीर

(ख)

भाववाचक संज्ञा	**विशेषण**
मित्रता	बूढ़ी
धृष्टता	गरीब
सच्चाई	दैनिक

(ग)

मित्रता	—	दोस्ती (✗)	शत्रुता (✓)		
दोस्त	—	मित्र (✗)	दुश्मन (✓)		
धरती	—	आकाश (✓)	जमीन (✗)		
सत्य	—	सच (✗)	असत्य (✓)		

(घ)

बस	—	बेबस	हिसाब	—	बेहिसाब
अदब	—	बेअदब	दर्द	—	बेदर्द
वा	—	बेवा	स्वाद	—	बेस्वाद

(ङ)

मित्र	—	मित्रता	नम्र	—	नम्रता
धृष्ट	—	धृष्टता	सफल	—	सफलता
शत्रु	—	शत्रुता	सुंदर	—	सुंदरता

जन्मदिन के बहाने (कहानी) 9

(क) मौखिक

1. अर्पिता तथा अर्चना ने अपनी माँ से पूछा कि माँ हमारा जन्मदिन जून में क्यों पड़ता है?
2. अर्पिता ने अपनी समस्या बताई कि हमारी सभी सहेलियाँ तो छुट्टी पर चली जाती हैं, जन्मदिन का सारा मजा ही खत्म हो जाता है।
3. कामवाली लक्ष्मी की बेटी का नाम कमलेश था।
4. दोनों बहनों ने मिलकर बारह फ्रॉकें बनाई।

(ख) लिखित

1. माँ ने अर्पिता और अर्चना के जन्मदिन की योजना बनाई कि मैं अपनी एक सुन्दर साड़ी की कटिंग कर दूँ तो तुम दोनों एक फ्रॉक बना दो और उस फ्रॉक को कमलेश को गिफ्ट कर दो क्योंकि उस दिन उसका भी जन्मदिन है।
2. माँ अर्पिता और अर्चना से योजना बनवाना चाहती थीं ताकि उनका जन्मदिन यादगार बन जाए।
3. अर्पिता ने कहा कि मम्मी आपने तो अपना उपहार हमें सिलाई का ज्ञान देकर दे दिया।
4. जन्मदिन की शुरुआत लक्ष्मी और कमलेश को खाना खिलाकर तथा कमलेश को फ्रॉक गिफ्ट देकर की गई।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. फ्रॉकें कमलेश के लिए बनाई जा रही थीं।
2. माँ ने साड़ी निकालते हुए कहा कि मैं कटिंग कर दूँ, तुम इसकी फ्रॉक बना कर तैयार कर दो।
3. अर्चना और अर्पिता की खुशी का कारण रंग-बिरंगी फ्रॉकें बनकर तैयार होना था।
4. मम्मी — माँ ग्रहण — स्वीकार
   महीना — माह खुशी — प्रसन्न

(ख)

1. मम्मी ने अर्चना और अर्पिता से—क्योंकि उन्होंने पूछा था कि उनका जन्मदिन जून में क्यों आता है?
2. अर्चना ने माँ से—क्योंकि वह लक्ष्मी की बिटिया के बारे में पूछ रही थीं।
3. अर्पिता ने मम्मी से—क्योंकि वो जन्मदिन में कमलेश को फ्रॉक देने की बात कर रही थीं।

4. मम्मी ने अर्पिता से—क्योंकि उसने कहा था कि आपने उपहार में हमें सिलाई का ज्ञान दिया है।

भाषा-बोध

(क)	बेटी	—	आत्मजा	(✓)	आत्मज	(✗)
	मम्मी	—	अंबु	(✗)	अंबा	(✓)
	रात	—	निशा	(✓)	शशि	(✗)
	लड़की	—	बाला	(✓)	बाल	(✗)

(ख)	स्वीकृति	अस्वीकृति
	खुशी	नाखुशी
	सच	झूठ
	जन्म	मृत्यु

(ग)	मास	—	मासिक	विष्णु	—	वैष्णव
	सुन्दरता	—	सुन्दर	पिता	—	पैतृक
	दिन	—	दैनिक	आदमी	—	आदमियत
	नेकी	—	नेक	लड़की	—	लड़कीपन

(घ) 1. मम्मी, हमारा जन्मदिन जून में क्यों पड़ता है?
2. ओह! तो यह समस्या है।
3. मम्मी बोलीं—अर्चना तुम्हें फ्रॉक बनानी है।
4. अर्चना, अर्पिता और उनकी माँ सभी पिकनिक पर गए।

(ङ)	घर	—	ग्रह, सदन, वासस्थान
	जीवन	—	जिन्दगी, जान, प्राण
	गुण	—	विशेषता, मूल्य, योग्यता
	शरीर	—	देह, काया, तन
	हाथ	—	हस्त, पाणि, कर
	पक्षी	—	विहग, खग, नभचर

कबीर के दोहे (दोहे) 10

(क) मौखिक

1. कबीर दास जी ऐसे कर्म करने के लिए कहते हैं कि ताकि जब हम इस संसार से जाएँ तो हँसते हुए और सारा जगह हमारे जाने पर रोए।
2. हमें ईश्वर को सुख और दुख दोनों में याद करना चाहिए।

3. पाँचवें दोहे में कवि समझाना चाहता है कि—जिस प्रकार कस्तूरी मृग के अंदर होती है और हिरन उसे सभी जगह खोजता है, उसी प्रकार राम तो हमारे मन में और हर जगह हैं, लेकिन दुनिया उन्हें देखती नहीं है। और ढूँढ़ती रहती है।
4. कबीर जी साधु की संगति करने को कहते हैं क्योंकि जिस प्रकार इत्र बेचने वाले के पास खड़े होने से सुगन्ध मिल जाती है, उसी प्रकार साधुओं की संगति से उनके विचारों और कर्म का फल तथा ज्ञान मिल जाता है।
5. धर्म का वास दया में होता है।

(ख) लिखित

1. मनुष्य को ईश्वर से उतना धन माँगना चाहिए, जिसमें वह और उसका परिवार भूखा न रहे और द्वार से कोई भूखा वापस न जाए।
2. साधुओं के कुल को नहीं बल्कि उनके ज्ञान को पूछना चाहिए।
3. कबीर दास जी साधु की संगति का महत्व बताते हैं कि साधुओं की संगति से अच्छा ज्ञान और अच्छे आचरण मिल जाते हैं।
4. लोभ पाप का तथा क्रोध काल का, कारण बनते हैं।
5. जिसने ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ लिया है, कबीर जी उसे ही पंडित मानते हैं। क्योंकि प्रेम ही मनुष्यता का आधार है। वास्तविक पंडित वही है, जिसके मन में दूसरों के लिए प्रेम है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने लोगों की भलाई के लिए कर्म करने को प्रेरित किया है।

जब हम इस संसार में आते हैं तो हम रोते है और संसार हँसता है इसलिए हमें ऐसे कर्म करने चाहिए कि जब हम इस संसार से जाए तो संसार रोए और हम हँसे।

2. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने ज्ञानवान लोगों से ज्ञान प्राप्त करने व मूल्यवान वस्तु की महत्ता मानने के लिए कहा है।

कभी किसी साधु की जात नहीं पूछनी चाहिए बल्कि उसका ज्ञान पूछना चाहिए, ठीक उसी प्रकार तलवार का मोल करना चाहिए, भले ही वह म्यान में पड़ी रहे।

3. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने निंदक की महत्ता को दर्शाया है।

निंदा करने वाले व्यक्ति को सदा अपने साथ रखना चाहिए। अपने घर में कुटी बनाकर क्योंकि वह हमें हमारी कमियाँ बताकर हमें अन्दर से पवित्र

कर देते हैं। बिना साबुन और पानी के और एक नेक इन्सान बनाते हैं।

4. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने दया क्षमा की महत्ता व लोभ, क्रोध की हानि का वर्णन किया है।

जहाँ दया वहाँ धर्म, जहाँ लोभ वहाँ पाप, जहाँ क्रोध वहाँ काल तथा जहाँ क्षमा वहाँ आप (परमात्मा) का वास होता है।

भाषा-बोध

(क)

कुटुम	— परिवार	—	भगवान से उतना माँगना चाहिए ताकि **कुटुम** का पेट भर जाए।
मृग	— हिरन	—	**मृग** की कुण्डलि में कस्तूरी होती है और वह उसे इधर–उधर खोजता रहता है।
संगत	— साथ	—	हमेशा अच्छे इन्सानों की **संगत** करनी चाहिए।
निर्मल	— पवित्र	—	गंगा एक **निर्मल** नदी है।

(ख)

सुख	दु:ख
ज्ञान	अज्ञान
दयालु	निर्दय
क्षमा	दंड
धर्म	अधर्म
प्रेम	घृणा
पंडित	मूर्ख

(ग) **भाववाचक संज्ञा**

भूखा	—	भूख	नारी	—	नारीत्व
जाति	—	जात	बुरा	—	बुराई
पंडित	—	पंडित्य	स्व	—	स्वत्व

(घ)

1. वह घर गया **तथा** उसने खाना खाया।
2. एक **और** एक दो होते हैं।
3. जब मैं घर आया था **तब** तुम कहाँ थे?
4. **यहाँ** एक साँप निकल आया है।
5. **ओह**! तुम भी पास हो गये।
6. **हाय!** तुम कितनी सुन्दर लग रही हो?

ईमानदार बालक (नाटक) 11

(क) मौखिक

1. बसन्त बाजार में छननी, बटन और दियासलाई बेच रहा था।
2. राजकिशोर मजदूरों के नेता थे।
3. कृष्णकुमार ने बसन्त के बारे में कहा कि वह लड़का ठग होगा जो आपके पैसे ले गया, वह अब नहीं आएगा।
4. प्रताप राजकिशोर के घर उनके शेष पैसे वापस करने गया।

(ख) लिखित

1. राजकिशोर ने बसंत को समझाने की कोशिश की कि मेरे पास पूरे पैसे नहीं है, नोट है, अगर होते तो ले लेता।
2. बसंत जब नोट भुनाने गया था तो लौटते वक्त मोटर के नीचे आ गया और दुर्घटना का शिकार हो गया।
3. राजकिशोर बसन्त के विषय में भाव व्यक्त करता है कि वह लड़का मुझे भला लगता था।
4. बसन्त तथा उसका भाई प्रताप भीखू अहीर के घर में रहते थे तथा गुजारे के लिए सामान बेचते थे।
5. राजकिशोर ने बसन्त की सहायता डॉक्टर से इलाज करवाकर की क्योंकि वह एक ईमानदार लड़का था।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. बाजार से छुट्टा लेने बसन्त जाता है।
2. राजकिशोर के परिचित का नाम कृष्णकुमार था।
3. कृष्णकुमार, राजकुमार से कहते हैं कि ऐसे लड़के आजकल बाजार के हर कोने पर मिलते हैं, जिनका काम गिड़गिड़ाकर लोगों को ठगना है।
4. यह गद्यांश ईमानदार बालक नाटक से लिया गया है।

(ख)

1. बसन्त ने राजकिशोर से
2. राजकिशोर ने बसन्त से
3. राजकिशोर ने कृष्णकुमार से
4. प्रताप ने राजकिशोर से
5. राजकिशोर ने अमरसिंह से

भाषा-बोध

(क)

दियासलाई — द् + इ + य् + आ + स् + अ + ल् + आ + ई

परिचित — प् + अ + र् + इ + च् + इ + त् + अ

मजदूर — म् + अ + ज् + अ + द् + ऊ + र् + अ

(ख)	1. लेकिन		2. और	3. तब		4. तो	
(ग)	देशी	—	विदेशी	भला	—	बुरा	
	परिचित	—	अपरिचित	गरीब	—	अमीर	
(घ)	समान	—	समानता	दीन	—	दीनता	
	सफल	—	सफलता	उत्सुक	—	उत्सुकता	
	सहज	—	सहजता	नम्र	—	नम्रता	

शह में मात (कहानी) 12

(क) मौखिक

1. चौधरी ने लकड़ियों की गाड़ी का दाम पाँच रुपये बताया।
2. सेठ ने चौधरी से लकड़ी के साथ-साथ उसकी गाड़ी और बैल भी ले लिए यह कहकर कि उसने पूरी गाड़ी के दाम दिए हैं।
3. चौधरी के तीनों बड़े बेटों ने सेठ को सबक सिखाने के लिए उसे नष्ट-भ्रष्ट करने का फैसला किया।
4. चौधरी के छोटे बेटे ने लकड़ियों की गाड़ी के दाम दो मुट्ठी टके माँगे।
5. सेठ को अपनी करनी का फल मिला कि पैसों के साथ-साथ अपनी इज्जत से भी हाथ धोना पड़ा।

(ख) लिखित

1. सेठ ने चौधरी को आदमी की जबान का वास्ता देते हुए कहा कि—दुनिया में जबान से बढ़कर कुछ भी नहीं है। जबान से ही बरकत होती है। जबान से जो पलट जाए वह आदमी कैसा।
2. जब चौधरी घर खाली हाथ पहुँचा तो उसके बेटों ने पूछा कि "बाबा बैलगाड़ी कहाँ है? रास्ते में खराब तो नहीं हो गयी। बहुत तकलीफ पाई होगी।"
3. चौधरी के बेटों को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि सेठ ने चौधरी को बेवकूफ बनाया था और लकड़ी के साथ उसकी बैलगाड़ी ले ली थी। सेठ से बदला लेने के लिए बेटों ने उसे नष्ट-भ्रष्ट करने की सोची।
4. सेठ ने चौधरी के छोटे बेटे को बुद्धू इसलिए समझा क्योंकि उसने गाड़ी का मूल्य दो मुट्ठी टका माँगा था।
5. चौधरी के छोटे बेटे ने सेठ को सबक सिखाया कि जब वह मुट्ठी से पैसे दे रहा था तो सेठ के बेटे ने मुट्ठी पकड़कर उस पर हँसिए को रख दिया और टके के साथ मुट्ठी भी माँगी थी। क्योंकि उसने लकड़ी के साथ गाड़ी और बैल भी ले लिए थे।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. चौधरी को अपनी गाड़ी तथा बैलों के जाने का दुख था।
2. सेठ चौधरी से लकड़ी के साथ गाड़ी और बैल भी चाहता था।
3. सेठ ने चौधरी से पूरी गाड़ी खरीदी थी।
4. खून — रक्त बैल — वृषभ
दाम — मूल्य

(ख) 1. पाँच 2. आदमी 3. चार
4. मुफ़ीद 5. नाक

भाषा-बोध

(क) खबरदार — खबर + दार खराबी — खराब + ई
सफलता — सफल + ता चतुराई — चतुर + आई
होशियारी — होशियार + ई

(ख) बैल — वृष, वृषभ खून — रक्त, लहू
आदमी — मानव, मनुष्य बेटा — पुत्र, सुत

(ग) कान पर जू न रेंगना — अनसुनी करना
वारे न्यारे होना — बहुत लाभ होना
बाँछें खिलना — बहुत खुश होना
नाक रगड़ना — गिड़गिड़ाकर विनती करना

(घ) सुबह — शाम — सुबह और शाम
रुपया — पैसा — रुपया और पैसा
सुख — दुख — सुख और दुख
बेटा — बेटी — बेटा और बेटी
कमी — बेशी — कमी और बेशी
धनी — निर्धन — धनी और निर्धन

(ङ) चतुर — मूर्ख — वह पढ़ने में तो **चतुर** है लेकिन देखने में **मूर्ख** लगता है।
राजा — रंक — वह **राजा** से रंक बन गया।
जवान — बूढ़ा — राज **जवान** है और उसके बूढ़े है।
नकल — अकल — **नकल** करने के लिए **अकल** की आवश्यकता होती है।

(च) हवेली — हवेलियाँ पगड़ी — पगड़ियाँ
गाड़ी — गाड़ियाँ आँख — आँखें
लकड़ी — लकड़ियाँ गति — गतियाँ

ममता (नाट्य-कथा) 13

(क) मौखिक

1. रोहतास दुर्ग के प्रकोष्ठ में ममता बैठी थी।
2. ममता के सामने रखे थालों में सोना था।
3. मंत्री चूड़ामणि की हत्या दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, पठानों द्वारा की गयी।
4. मुगल ने स्त्री से कहा कि ''ममता! मुझे आश्रय दीजिए।''
5. झोपड़ी में ठहरने वाला मुगल बादशाह हुमायूँ था तथा उसने मिरजा को स्त्री का घर बनवाने का आदेश दिया था।
6. ममता ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में हुमायूँ के विषय में कहा कि मैं नहीं जानती थी कि वह साधारण मुगल है या बादशाह।

(ख) लिखित

1. मंत्री चूड़ामणि की चिंता का कारण उनकी पुत्री ममता थी।
2. ममता ने उत्कोच लेने के सम्बन्ध में चूड़ामणि को समझाया कि—पिताजी यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिता जी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?
3. ममता ने अजनबी मुगल सैनिक को आश्रय अपना कर्तव्य समझकर दिया।
4. ममता ने खंडहर की संधि में से देखा कि सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं।
5. बादशाह हुमायूँ ने मुमता के एहसान का बदला चुकाने के लिए उसका घर बनवाना चाहा।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. ममता से आश्रय एक मुगल ने माँगा था।
2. ममता ने चाहते हुए भी उसे आश्रय देने को तैयार हो गयी क्योंकि वह एक ब्राह्मण कन्या थी और शरणार्थी को शरण देना उसका कर्तव्य था।
3. अतिथि देव के समान है, उनकी पूजा करनी चाहिए।
4. अतिथि — मेहमान उपासना — पूजा
   विद्यर्मी — नास्तिक कर्तव्य — फर्ज

(ख)

1. ममता ने अपने पिता चूड़ामणि से—क्योंकि वह सोना लेकर ममता के पास आए थे।
2. मुगल ने ममता से—क्योंकि वह शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता था।
3. ममता ने आश्रित मुगल से—क्योंकि उन्होंने उसे आश्रय दिया था।

4. एक अश्वारोही ने अपने आप से—क्योंकि वह मिरजा के द्वारा दिए गये चित्र के हिसाब से बुढ़िया की झोपड़ी ढूँढ़ रहा था।

(ग) ममता शरणार्थी मुगल को अपनी झोपड़ी में शरण देने से पहले सोच रही थी कि तुम भी पठानों की तरह क्रूर, रक्त बहाने वाले तथा तुम्हारे मुख भी निष्ठुर है।

भाषा-बोध

(क)

यवक	—	युवती	ब्राह्मण	—	ब्राह्मणी
बेटा	—	बेटी	पिता	—	माता
विधुर	—	विधवा	सम्राट	—	साम्राज्ञी

(ख)

दीपालोक	—	दीप + आलोक
पतनोन्मुख	—	पतन + उन्मुख
निराश्रय	—	निर् + आश्रय
अश्वारोही	—	अश्व + आरोही

(ग) 1. वह 2. मैं 3. वह
4. मुझे 5. वे

(घ)

धर्मी	—	विधर्मी	जय	—	विजय
कार	—	विकार	हार	—	विहार

(ङ)

विधवा	सधवा
आवरण	अनावरण
इच्छा	अनिच्छा
युद्ध	संधि
जल	थल

(च)

माता	—	माँ, जननी, मम्मी
पुत्री	—	सुता, नन्दिनी, आत्मजा
भगवान	—	ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा
दिन	—	वार, दिवस, वासर
स्त्री	—	औरत, वनिता, नारी

स्नेह-शपथ (कविता) 14

(क)(मौखिक)

1. कवि जिह्वा से सख्त बात न कहने की सलाह देता है।
2. कवि किसी गलती करने वाले इन्सान के साथ नेह तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार करने की बात कहता है।
3. प्रेम का असर अपने राह से भटके व्यक्ति तथा भ्रष्ट जमाने पर पड़ता है।

4. दुस्साहसी तथा धृष्ट आदमी प्यार तथा स्नेह से समझाने पर समर्पण करता है।

(ख लिखित

1. पहले पद की पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि कोई शत्रु हो या मित्र, परिचित हो या अपरिचित, जिसे आप बड़ा समझते रहे हो या दीन अगर उसका यश, कभी आपको घटता दिखे तो कभी सख्त बात नहीं कहनी चाहिए।
2. कवि प्यार की महिमा का वर्णन करते हुए कहता है कि चाहें कितना भी भ्रष्ट जमाना हो, हर जगह प्यार भा सकता है तथा हर गलत व्यक्ति को प्यार से सुधारा जा सकता है।
3. कवि हमेशा प्रेम तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार करने की शपथ, लेने की प्रेरणा देता है।
4. इस कविता का सार बस यही है कि हर व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए किसी से कठोर वचन नहीं कहने चाहिए। बुरे से बुरे व्यक्ति को प्यार से सुधारा जा सकता है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. किसी राह भटके हुए इन्सान को, थोड़ा अंदर का नेह देकर तो देखिए।
2. ऐसा कोई पतन नहीं है, जिसे प्यार उठा नहीं सकता अर्थात् कितना भी गिरा हुआ व्यक्ति हो प्यार से सुधर सकता है।
3. हर एक धृष्ट आदमी को, स्नेह देने पर उसका पश्चात् आँसुओं द्वारा होता है।

भाषा-बोध

(क)	मित्र	—	दोस्त, सखा	प्यार	—	स्नेह, प्रेम
	शत्रु	—	दुश्मन, वैरी	आँख	—	नयन, लोचन
(ख)	परिचित	—	परि + चित	दीनता	—	दीन + ता
	धृष्टता	—	धृष्ट + ता	गहराई	—	गहरा + आई
	विहीन	—	वि + हीन	सुगंध	—	सु + गंध
	अनुकरण	—	अनु + करण	अपयश	—	अप + यश
(ग)	मित्र	—	शत्रु	यश	—	अपयश
	प्यार	—	घृणा	दीन	—	धनी
	सख्त	—	मुलायम	पतन	—	उत्थान
(घ)	मित्र	—	मित्रता			
	सख्त	—	सख्त	शत्रु	—	शत्रुता
(ङ)	स्न	—	स्नेह, स्नातक	ष्ट	—	स्पष्ट, कलिष्ट
	प्य	—	प्यार, प्यारी	न्त	—	अन्त, अनन्त

भगत सिंह का पत्र (कहानी) 15

(क) मौखिक

1. क्रान्तिकारियों ने अपना तन, मन, धन न्यौछावर करने की ठान ली थी।
2. भगत सिंह और उनके साथियों पर मुकदमा इसलिए चलाया गया क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश संसद में बम-विस्फोट को अंजाम दिया था।
3. भगत सिंह इस पत्र के जरिए अंग्रेजों और भारतीयों के मध्य युद्ध की बात कर रहे थे।
4. भगत सिंह द्वारा पत्र पंजाब के गवर्नर को लिखा गया था।
5. भगत सिंह के सहयोगी यतीन्द्रनाथ दास तथा भगवतीचरण थे।

(ख) लिखित

1. भगतसिंह के अतिरिक्त यतीन्द्रनाथ तथा भगवतीचरण पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया।
2. भगतसिंह तथा उनके साथियों पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया था।
3. भगत सिंह ने अपने आपको युद्धबंदी बताते हुए अंग्रेजों से गोली से उड़ा देने की बात थी।
4. क्योंकि कुछ मुट्ठीभर शक्तिशाली लोग भारतीय संसाधनों और श्रमिक वर्ग का शोषण करते रहे। और वह उनके विरोध में लड़ रहे थे। इसलिए उन्होंने लिखा कि साम्राज्य तथा पूँजीवाद कुछ समय के मेहमान हैं।
5. भगतसिंह ने पंजाब के गवर्नर से आग्रह किया कि—हम युद्धबंदी हैं और इसी आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा व्यवहार ही किया जाए। हमें फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाए।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. यह गद्यांश भगतसिंह द्वारा लिखे गए पत्र से लिया गया है।
2. यह पत्र पंजाब के गवर्नर को लिखा गया है।
3. साम्राज्यवाद तथ पूँजीवाद से आशय—
   - **साम्राज्य**—किसी राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के प्राकृतिक और मानवीय संसाधन पर नियन्त्रण।
   - **पूँजीवाद**—किसी उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व।
4. इस गद्यांश में यतीन्द्रनाथ, भगवतीचरण और चन्द्रशेखर आजाद के बलिदानों का उल्लेख किया गया है।
5. युद्ध — संधि अन्तिम — प्रारम्भ
   जीवन — मृत्यु आजाद — गुलाम

भाषा-बोध

(क) दिन — दिवस, वार, वासर
युद्ध — लड़ाई, संग्राम द्वंद्व
इच्छा — अभिलाषा, लालसा, चाह
शक्ति — बल, जोर, सार
तन — देह, काया, तन

(ख) राह — हरा दीन — नदी
जरा — राज खीरा — राखी
चना — नाच नाम — मान

(ग) सजा — दंड (✗) इनाम (✓)
युद्ध — संधि (✓) लड़ाई (✗)
भिन्न — अलग (✗) अभिन्न (✓)
आजाद — गुलाम (✓) स्वतन्त्र (✗)

(घ) 1. भगतसिंह ने पत्र लिखा और सिपाही के हाथ गवर्नर तक भेजा।
2. घायल सैनिक उठा और हथियार उठाकर दुश्मन से लड़ने लगा।
3. अंग्रेज भारत में आए और व्यापार करने लगे।
4. वह देर रात तक जागी। इसलिए स्कूल दूर से पहुँची।
5. पिताजी के आएँगे तब हम घूमने चलेंगे।
6. अध्यापक आए और सारी कक्षा चुप हो गयी।
7. गार्ड ने झंडी दिखाई और गाड़ी चल पड़ी।
8. मोहन आया और राम चला गया।
9. उसने भाषण दिया और सारा हॉल तालियों से गड़गड़ा उठा।

(ङ) धर्म — अधर्म सफल — असफल
सत्य — असत्य सुरक्षित — असुरक्षित

तीन प्रश्न (नाट्य-कथा) 16

(क) **मौखिक**

1. राजा तीन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता था—
   (i) कार्य करने के लिए उचित समय कौन-सा है?
   (ii) मेरे लिए परम आवश्यक व्यक्ति कौन है?
   (iii) मेरा परम कर्तव्य क्या है?

2. राजा ने नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि जो आदमी मुझे इन तीन बातों की शिक्षा देगा, उसे मैं बहुत बड़ा पुरस्कार दूँगा।
3. लोगों ने पहले प्रश्न का उत्तर अलग-अलग दिया। किसी ने कहा कि दिवस, मास और वर्षों का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिए तथा किसी ने कहा कि अनावश्यक कार्यों में समय न लगाकर अपने नित्य कर्मों की ओर ध्यान देना चाहिए। इसी तरह सबने अलग-अलग उत्तर दिए पर राजा सहमत नहीं थे।
4. साधु एक जंगल में रहता था और वह अपने ज्ञान के लिए दूर-दूर तक विख्यात था। वह कभी जंगल से बाहर नहीं जाता था और केवल साधारण लोगों से भेंट करता था।
5. राजा साधु के पास अपने प्रश्नों का उत्तर लेने गया।

(ख) लिखित

1. राजा के तीन प्रश्न इस प्रकार हैं—
   (i) कार्य करने के लिए उचित समय कौन-सा है?
   (ii) मेरे लिए परम आवश्यक व्यक्ति कौन है?
   (iii) मेरा परम कर्तव्य क्या है?
2. लोगों ने राजा को पंडितों की समिति बनाने की सलाह दी क्योंकि यह समिति, उसे प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित करने में सहायक होगी।
3. साधु की ख्याति का कारण उसका ज्ञान था।
4. राजा ने साधु की सहायता के लिए धरती की गोड़ाई की।
5. राजा को अपने तीनों प्रश्नों के उत्तर, उस व्यक्ति की मदद करने पर मिले जो उनका शत्रु था।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(ख) 1. पंडित 2. यथार्थ 3. साधु 4. पानी 5. गुलाम

भाषा-बोध

(क)

राजा	—	रंक	आदर	—	अनादर
पुरस्कार	—	दण्ड	अपमान	—	सम्मान
पंडित	—	मूर्ख	कृतज्ञ	—	कृतज्ञघ्न
निर्धारित	—	अनिर्धारित	ईमानदार	—	बेइमान
स्वीकार	—	अस्वीकार	भारी	—	हल्का
विख्यात	—	कुख्यात	आयात	—	निर्यात
दुर्बल	—	सबल	अंधकार	—	प्रकाश
मित्र	—	शत्रु	आना	—	जाना

(ख) आशंका — राजा को **आशंका** थी कि कहीं युद्ध न हो जाए।
योद्धा — हुमायूँ, बाबर आदि कुशल **योद्धा** थे।
दुर्बल — साधु का शरीर **दुर्बल** था।
एकाग्रता — ध्यान के लिए **एकाग्रता** आवश्यक है।

(ग) राजा — प्रजापालक, नृप
साधु — योगी, महात्मा
घोड़ा — घोटक, तुरंग
पानी — नीर, जल
पंडित — विद्वान, विशारद
जंगल — अरण्य, वन

(घ) परमावश्यक — प् + अ + र् + अ + म् + आ + व् + अ + श् + य् + अ + क् + अ
मनुष्य — म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ
जंगल — ज् + अं + ग् + अ + ल् + अ
साधु — स् + आ + ध् + उ

(ङ) वान — धनवान, रूपवान, बलवान
इत — पीड़ित, क्रोधित, अनुमानित
इक — नैतिक, राजनैतिक, प्रारम्भिक
ता — प्रसन्नता, दीनता, धृष्टता

(च)

ताजा	पानी
दयालु	व्यक्ति
कठिन	प्रश्न
ऊँची	इमारत
घना	जंगल
ज्ञानी	महात्मा
तूफानी	रात

पिपीलिका (कविता) 17

(क) (मौखिक)

1. चींटी को देखा? कवि ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह मिलजुल-कर कार्य करती हैं।
2. 'तम के तागे सी' से मतलब काले धागे से है।
3. घर, आँगन और रास्तों को बुहारती हैं।
4. कवि ने चींटियों को परिश्रमी इसलिए कहा है क्योंकि वह अपने अंडे ढोती है। बरसात के लिए खाना इक्ट्ठा करती है, मेहनत करती है तथा वह सुनागरिक है क्योंकि घर, मन्दिर, रास्ता, गौ-ग्रह, भंडार आदि कहीं भी सभी जगह रहती है।

(ख) लिखित

1. इस कविता का प्रतिपाद्य विषय मेहनत और एकता है।
2. है डिंब-सद्म, वर शिविर रचित,
   ड्योढ़ी बहु, राजमार्ग विस्तृत,
   चींटी है प्राणी सामाजिक,
   वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
3. चींटी का निर्माण कला अद्भुद है क्योंकि वह घर, मंदिर, गौ-गृह, भंडार कहीं पर भी घर बनाने की कला रखती है।
4. चींटी गाय चराती है, धूप खिलाती, बच्चों की निगरानी करती है आदि अनेक सामाजिक कार्य करती है। तथा घर आँगन और रास्तों को बुहारती है। ये गुण सुनागरिक के हैं।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)
1. रास्ते में जाती हुई चींटियाँ काले धागे के समान दिखाई देती हैं।
2. चीटियों की पंक्ति धागे के समान हिलती-डुलती प्रतीत होती है।
3. चींटियों पैरों से पैर मिलाकर चलती हैं।
4. विरल — बहुत कम तम — अन्धेरा
   तागा — धागा लघुपद — छोटे पैर

(ख) चींटी गाय चराती है, धूप खिलाती है, बच्चों को निगरानी करती है, बिना डरे पर्वतों पर भी चढ़ जाती है। एक-एक दल करके सेना को सँवारती है। घर, आँगन, रास्तों को साफ करती है।

भाषा-बोध

(क)
1. प्रत्येक 2. एकत्रित करना 3. हरवन
4. जनपथ 5. प्रतिघर 6. युद्ध की कला

(ख)

सरल	—	कठिन	काली	—	सफेद
निर्माण	—	विध्वन्स	विस्तृत	—	संक्षिप्त
बहु	—	अल्प	अंधकार	—	उजाला
लघु	—	दीर्घ	धूप	—	छाँव
भला	—	बुरा	विरल	—	सघन

(ग)

दधि	—	दही	उलूक	—	उल्लू
कपोत	—	कबूतर	काक	—	कौआ
मयूर	—	मोर	घृत	—	घी
दुग्ध	—	दूध	आम्र	—	आम
क्षीर	—	खीर	उष्ट्र	—	ऊँट
चणक	—	चना	पंक्ति	—	लाइन

अभिनंदन-7

इतने ऊँचे उठो (कविता) 1

(क) मौखिक

1. कवि दुनिया को समता के भाव अर्थात् सभी को बिना भेद-भाव के समान रूप में देखना चाहता है।
2. मलय पवन का अर्थ चंदन की तरह ठण्डी हवा से है।
3. कवि युग की नई मूर्ति रचना करने की बात कहता है।
4. कुरुप को रूप सलोना देकर इस पृथ्वी को स्वर्ग बना सकते हैं।

(ख) लिखित

1. कवि संसार में समता की बारिश की कामना करता है।
2. कविता के दूसरे पद्यांश के माध्यम से कवि युग की नयी मूर्ति रचना करना चाहता है।
3. कवि अतीत से अच्छी बातों को ग्रहण करने तथा पुरानी बातों को भूलने की बात करता है।
4. जिस प्रकार आकर्षण की तरफ सब आकर्षित हो जाते हैं, उसी प्रकार अपनी सोच तथा गुणों को अच्छा बनाकर हम सुन्दर हो जाएँगे।
5. कवि उन बंधनों को तोड़ने की बात करता है, जो हमें आगे बढ़ने से रोकते हैं क्योंकि वे हमारे मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) **संदर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'अभिनन्दन' से ली गयी हैं। इस कविता का शीर्षक इतने ऊँचे उठो है। इस कविता के कवि 'श्री द्वारिका प्रसाद महेश्वरी' हैं।

प्रसंग—निम्न पंक्तियों में सभी भेदभावों से ऊपर उठकर समाज में समानता का भाव जगाने की बात कही गयी है।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्य पक्तियों में कवि कहते हैं कि हमें नए समाज निर्माण में अपनी नई सोच को जाति-धर्म, रंग, द्वेष आदि जैसे भेदभावों से ऊपर उठकर सभी को समानता की दृष्टि से देखना चाहिए। जिस प्रकार वर्षा सभी के ऊपर समान रूप से होती है, उसी प्रकार हमें भी सभी के साथ समान रूप से पेश

आना चाहिए। हमें नफरत की आग को समाप्त कर, समाज में मलय पर्वत से आने वाली हवा की तरह शीतलता और शांति लाने का प्रयत्न करना चाहिए।

(ख) **व्याख्या**—कवि कहते हैं कि हमें अपने अतीत में हुई बुरी घटनाओं को छोड़कर केवल अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि ये अच्छी यादें या घटनाएँ ही हमारे भविष्य निर्माण में काम आएँगी जबकि बुरी घटनाएँ हमें सदैव पीछे की ओर ही खींचेंगी। इनसे हमारा विकास अवरुद्ध होगा। कवि कहते हैं कि जिस तरह परिवर्तन सदैव होता रहता है, उसी प्रकार हमें भी सभी बंधनों को तोड़कर हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। क्योंकि आगे बढ़ना ही जीवन है।

भाषा-बोध

(क)

गगन	अंबर, आकाश, आसमान
धरा	पृथ्वी, धरती, वसुंधरा
पवन	हवा, वायु, समीर
सूरज	सूर्य, रवि, भानु
चाँद	चन्द्रमा, शशांक, चन्द्र

(ख)

भाव	— मूल्य, मन का भाव	कर	— हाथ, ब्याज
जीवन	— जीविका, प्राण	जग	— पानी का बर्तन, संसार

(ग)

नई	— पुरानी	राग	— द्वेष
जीवन	— मरण	स्वर्ग	— नरक
अतीत	— वर्तमान	सुन्दर	— कुरूप

(घ)

वृष्टि	— इस बार अधिक ओला **वृष्टि** हुई है।
तूलिका	— कलाकार **तूलिका** से रंग भरता है।
नूतन	— भाषा को **नूतन** अक्षर देना चाहिए।
शाश्वत	— ईश्वर **शाश्वत** सत्य है।
सलोना	— करूप को **सलोना** रूप दो।

(ङ)

शीतल	— श् + ई + त् + अ + ल् + अ
शाश्वत्	— श् + आ + श् + व् + अ + त् + अ
धरती	— ध् + अ + र् + अ + त् + ई
सलोना	— स् + अ + ल् + ओ + न् + आ

प्रायश्चित (कहानी) 2

(क) मौखिक

1. रामू की बहू को कबरी बिल्ली से घृणा थी।
2. रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या करने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उसने उसे बहुत परेशान कर रखा था, घर का घी, दूध, ,खीर सब चट कर जाती थी। जिसकी वजह से उसे सास की मीठी डाँट और पति को सूखा खाना पड़ता था।
3. मिसरानी ने बिल्ली की हत्या के बारे में कहा कि—''माँजी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है। हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।''
4. पंडित ने बिल्ली की हत्या के पाप से मुक्ति के निम्नलिखित तरीके बताए—

(i) 21 तोले की सोने की बिल्ली का दान

(ii) दान के लिए करीब दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन-भर नमक भी लगेगा।

(iii) इक्कीस दिन का पाठ जिसमें इक्कीस रुपये और इक्कीस दिन तक दोनों बखत पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराना।

(ख) लिखित

1. रामू की बहू कबरी बिल्ली से परेशान थी क्योंकि कि वह घर का सारा घी दूध चट कर जाती थी।
2. पंडित परमसुख चौबे छोटे-मोटे आदमी थे। लम्बाई चार फुट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच, चेहरा गोलमटोल, मूँछ बड़ी-बड़ी रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँची हुई थी। उनकी खुराक पाँच पसेरी थी। वह लालची, धोखेबाज ब्राह्मण था।
3. पंडित परमसुख ने पूजा के लिए सामग्री बताते हुए कहा कि हम कम-से-कम सामान में पूजा कर देंगे। दान के लिए करीब दस मन गेहूँ, एक मन चावल एक मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन-भर नमक भी लगेगा।

4. इस कहानी के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि कभी किसी निर्दोष पर वार नहीं करना चाहिए तथा किसी पंडित के झाँसे में नहीं आना चाहिए।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. पूजा रामू की माँ करवाना चाहती थी क्योंकि रामू की बहूँ के हाथों से बिल्ली मर गयी थी।

2. पूजा करने वाले पंडित का नाम परमसुख चौबे था।

3. पूजा के इस सामान के अतिरिक्त उन्होंने दान के लिए, कम-से-कम दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पंसेरी घी और मन-भर नमक भी लगेगा।

4. सामान—माल, सम्पत्ति
पंसेरी—पाँच सेर की एक तौल, लगोटी
करीब—निकट, प्राय: (लगभग)

(ख) 1. महरी ने रामू की माँ से—क्योंकि रामू की बहू ने बिल्ली पर पाटे से वार किया था।

2. रामू की माँ ने महरी से—क्योंकि बिल्ली मर गयी थी।

3. पंडित जी ने रामू की माँ से—प्रायश्चित करने के लिए।

4. महरी ने रामू की माँ से—क्योंकि बिल्ली जिन्दा थी और वह उठकर भाग गयी थी।

भाषा-बोध

(क)	घृणा	—	प्रेम	जिंदा	—	मुर्दा
	मुश्किल	—	आसान	पाप	—	पुण्य
	पवित्र	—	अपिवत्र	पंडित	—	मूर्ख
(ख)	बालिका	—	लड़की, युवती	पति	—	प्राणाधार, प्राणप्रिय
	दूध	—	दुग्ध, पय	आदमी	—	नर, मानव

(ग)

आशा-निराशा	—	आशा और निराशा
भाई-बहन	—	भाई और बहन
अमीर-गरीब	—	अमीर और गरीब
राजा-रंक	—	राजा और रंक
हानि-लाभ	—	हानि और लाभ
ऊँच-नीच	—	ऊँच और नीच

शहीदों की मजारों पर (एकांकी) 3

(क) मौखिक

1. रामप्रसाद बिस्मिल गोरखपुर जेल में बन्द थे।
2. रामप्रसाद बिस्मिल की काल कोठरी नौ फीट लंबी तथा नौ फीट चौड़ी है। कोठरी में एक दरवाजा है। जो सिर्फ छह फीट लंबा और दो फीट चौड़ा है। कोठरी के पीछे की ओर लगभग आठ या नौ फीट की ऊँचाई की एक खिड़की है, जो केवल दो फीट लम्बी और एक फीट चौड़ी थी।
3. सुमेर पढ़कर सुनाते है कि प्राण निकल जाने तक गले में फंदा डालकर लटका दिया जाए।
4. रामप्रसाद को रोते देखकर उसकी माँ उससे कहती है कि—अरे! मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके नाम से अंग्रेजी सरकार काँपती है। मुझे नहीं पता था कि वह मौत से डरता है, तुम्हें यदि रोकर मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में आए।
5. रामप्रसाद बिस्मिल फाँसी के तख्त पर जाने से पहले प्रात: उठकर ईश्वर का स्मरण करते हैं, तदुपरांत नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्नान किया, पूजन कर चंदन की बिंदी लगाई और कुरता-धोती पहनकर पूर्णाहुति के लिए तैयार हो जाते हैं।

(ख) लिखित

1. रामप्रसाद बिस्मिल काल कोठरी में बैठे अपनी आत्मकथा लिख रहे थे।
2. रामप्रसाद बिस्मिल ने संस्कृत का—
   ब्रह्मव्याधाम कर्माणि संग व्यक्त्वा करोति।
   य: लिप्यते न स पापेभ्यो: पद्म पत्रमिवाम्भस:।।
   स्लोक बोला।
3. रामप्रसाद बिस्मिल से जेल में मिलने के लिए उनके माता-पिता आते हैं।
4. रामप्रसाद तथा उनकी माँ, पहले एक-दूसरे से हाल-चाल पूछते हैं फिर माँ उन्हें देश पर मिटने के लिए गर्व महसूस करती हैं और उन्हें समझाती हैं।
5. रामप्रसाद फाँसी पर जाने से पहले गीत गाते हैं कि—
   भारत माता की जय।
   मालिक तेरी रजा रहे और तू-ही-तू रहे,
   बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे।

जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र था तेरी ही जुस्तजू रहे।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) दिए गए गद्यांश की व्याख्या करो–

बिस्मिल कहते हैं कि ईश्वर करे कि मुझे शीघ्र ही शहादत मिले, क्योंकि मेरी शहादत का समाचार सुनकर, अन्य क्रांतिकारी जो कि अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने को तैयार हैं

अपनी गतिविधियाँ तेज कर देंगे। मेरी मृत्यु के बाद मेरी शहादत के समाचार को इस प्रकार फैलाना कि अन्य आजादी के समर्थक लोग भी भारत-माता की स्वतंत्रता में सहयोग करें।

(ख)
1. बिस्मिल के पिता ने जेल अधिकारी से—क्योंकि वो बिस्मिल से जेल में मिलने आए थे।
2. बिस्मिल ने सुमेर से—क्योंकि उसके पास एक सरकारी कागज था।
3. माँ ने बिस्मिल से—क्योंकि वो आँचल में मुँह छिपाकर सुबकने लगे थे।
4. पहरेदार ने बिस्मिल से—क्योंकि फाँसी पर जाने का समय हो रहा था।

भाषा-बोध

(क)

लाश	—	मुर्दा	इशारा	—	संकेत
आबरु	—	इज्जत	मुद्दत	—	बहुत समय
इम्तहां	—	परीक्षा	कातिल	—	हत्यारा
वतन	—	अपना देश	जुदा	—	अलग होना

(ख)

निर्भीक	—	भयभीत	तरल	—	ठोस
कीर्ति	—	अपकीर्ति	मृत्यु	—	जन्म

(ग)

सशस्त्र	—	स + शस्त्र	आबाद	—	आ + बाद
विभोर	—	वि + भोर	परतन्त्रता	—	पर + तंत्रता
विवश	—	वि + वश	विजय	—	वि + जय

(घ)

काल → समय, मौत

पत्र → चिट्ठी, पत्ता

कर → हाथ, ऋण

पास → सफल, समीप

मुक्ति मार्ग (कहानी) 4

(क) मौखिक

1. झींगुर को अपनी तीन बीघे ऊँख का घमण्ड था।
2. झींगुर ने बुद्धू की भेड़ों को मारा था इसलिए वह नाराज था।
3. बुद्धू ने अपने अपमान का बदला, झींगुर के खेत जलाकर लिया।
4. झींगुर ने बुद्धू से बदला लेने के लिए मेल-जोल बढ़ाया।
5. हरिहर ने लक्ष्मी मैया के बारे में विचार प्रकट किए कि—"लक्ष्मी मैया, जिसके घर में आती हैं, उसकी आँखों में सील आ जाता है। पर उसको देखो, धरती पर पैर नहीं रखा। बोलता है तो ऐंठकर बोलता है।"

(ख) लिखित

1. झींगुर अपनी ऊख की फसल देखकर मन ही मन सोच रहा था कि दोनों बैल बुड्ढे हो गए। अब नए बैल मेले से ले आएगा। कहीं दो बीघे खेत और मिल जाए तो लिखा लेगा। रुपये की क्या चिन्ता है?
2. झींगुर सहित सभी गाँव वाले जानते थे कि ऊख के खेत में बुद्धू ने आग लगाई है। वे फिर भी बुद्धू का कुछ न बिगाड़ सके क्योंकि उनके पास इस बात का कोई सबूत नहीं था।
3. झींगुर ने बुद्धू से अपना बदला लेने के लिए उसे एक बछिया दी, यह कहकर कि मेरे पास इसे खिलाने के लिए कुछ नहीं है। तुम इसे अपनी भेड़ों के साथ चरा दिया करो और बाद मे खुद ने उसे इतना टाइट बाँध दिया कि उसका गला घुट गया और उसकी मृत्यु हो गयी और उसने बुद्धू पर गौ हत्या का पाप लगाकर अपना बदला लिया।
4. बुद्धू को बछिया की हत्या के आरोप में प्रायश्चित के लिए तीन मास भिक्षा, फिर सात तीर्थ स्थानों की यात्रा, उस पर पाँच सौ ब्राह्मणों का भोजन और पाँच गउओं का दान करना पड़ा, लेकिन उसके बहुत कहने पर भिक्षा घटाकर दो मास कर दी गयी।
5. इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए तथा किसी की गलती को क्षमा कर देना चाहिए क्योंकि बदले और जलन की भावना से कभी किसी का भला नहीं होता।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. आग झींगुर के ऊख के खेतों में लगाई गयी थी।

2. लोग आग के कारण हुए सर्वनाश के लिए झींगुर को जिम्मेदार ठहरा रहे थे। क्योंकि उसने बुद्धू की भेड़ों को बेरहमी से पीटकर, उससे दुश्मनी मोल ले ली थी।

3. बुद्धू एक गड़रिया था।

4. मुश्किल — आसान गाँव — शहर
दिन — रात धरती — आकाश

(ख) 1. बुद्धू ने झींगुर से—क्योंकि वह अपनी भेड़ें लेकर झींगुर के खेत के पास आ चुका था और वह उसे वापस जाने को कह रहा था।

2. झींगुर ने बुद्धू से—क्योंकि वह अपना बदला लेने के लिए उससे दोस्ती करने गया था।

3. हरिहर ने बुद्धू से—क्योंकि वह झींगुर के साथ मिलकर उस पर गौ हत्या का पाप लगाना चाहता था।

4. बुद्धू ने झींगुर से—क्योंकि वह अपने किए पर शर्मिन्दा था।

भाषा-बोध

(क)

रोगी	—	निरोगी	दंड	—	क्षमा
आदर	—	अनादर	न्याय	—	अन्याय
अंधकार	—	प्रकाश	खुशी	—	गम
छाया	—	धूप	फायदा	—	नुकसान

(ख)

किसान	—	कृषक, खेतिहर	अग्नि	—	आग, पावक
ऊख	—	गन्ना, ईख	दिन	—	दिवस, वासर

(ग)

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
लाल	पगड़ी	दो	बैल
घना	कुहरा	ताजा	भोजन

कड़वी मिठाई (कहानी) 5

(क) मौखिक

1. अतजल सुन्दर लेकिन आलसी बालक था।

2. अतजल स्वर्ग में जाकर रहना चाहता था इसलिए वह मरना चाहता था।

3. अतजल के पिता डॉ० योत्स के पास इसलिए गए क्योंकि अतजल ने खाना-पीना छोड़ दिया था और वह मरना चाहता था।
4. अतजल स्वर्ग में उदास हो गया था क्योंकि उसे खाने के लिए हमेशा मीठा मिलता था और वह नमकीन खाना चाहता था तथा वह अकेला रहता था, उसके पास उसके दोस्त, माता-पिता तथा और कोई नहीं था और उसे घूमने को भी नहीं मिलता था।
5. अंत में अतजल ने स्वर्ग के बारे में कहा कि माँ, मैं स्वर्ग कभी नहीं जाऊँगा, ''स्वर्ग अच्छी जगह नहीं है।''

(ख) लिखित

1. अतजल ने स्वर्ग जाने के लिए, यह तरीका अपनाया कि वह चुपचाप एक बिस्तर पर लेट गया और खाना-पीना छोड़ दिया और जो भी उसके पास आता, उससे वह कह देता कि अतजल तो मर चुका है।
2. अतजल की बेवकूफी भरी जिद के कारण उसके माता-पिता की चिन्ता का ठिकाना न रहा। वे इसी फिक्र में थे कि अपनी इकलौती संतान को बचाएँ कैसे?
3. डॉ० योत्स ने अतजल को रास्ते पर लाने के लिए, उन्होंने एक मकान के कमरे को सुंदर ढंग से सजाया। पलंग पर फूल बिखेर दिए। कई नौकर परियों के पंख लगाकर देवदूत बन गए। कमरें की दीवारों पर लिख दिया स्वर्ग लोक। अत: अतजल को वहाँ रखा गया था।
4. अतजल को स्वर्ग से ऊब हो गयी क्योंकि वहाँ सिर्फ खाने को मीठा मिलता था। उसके साथ खेलने और बात करने को कोई नहीं था। और वह कहीं जा भी नहीं सकता था।
5. देवदूत ने अतजल को स्वर्ग के बारे में बताया कि ''यहाँ समय ठहर जाता है। न रात होती है, न दिन निकलता है। सदा ऐसा ही रहता है।''

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. अतजल स्वर्ग इसलिए जाना चाहता था क्योंकि उसने सुना था कि स्वर्ग में कोई काम नहीं करना पड़ता, हर चीज मिल जाती है, बच्चों को स्कूल नहीं जाना पड़ता, फरिश्ते सारा काम करते हैं और मम्मी डाँटती भी नहीं हैं।
2. अतजल ने स्वर्ग में देखा कि दीवारों पर स्वर्गलोक लिखा हुआ था। परियों के पंख लगाए देवदूत खड़े हुए थे।

3. अतजल ने स्वर्ग जाने के लिए खाना-पीना छोड़ दिया और बिस्तर पर लेट गया। सबसे बोल दिया कि अतजल मर गया।

4. आँख — नेत्र हैरानी — आश्चर्य चकित
खुश — प्रसन्न दोस्त — मित्र

(ख) अतजल डॉ० योत्स देवदूत स्वर्ग

भाषा-बोध

(क) अमीर — धनवान बेवकूफी — मूर्खता
पानी — अंबु माँ — जननी

(ख) 1. माँ, तुम मुझसे कैसे बात कर रही हो?
2. उसने कहा, ''अतजल, स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत है।''
3. अरे! अतजल, तुम आ गये।

(ग) उच्च, कच्चा
स्वामी स्वास्तिक

(घ) संबंध संभाव
संहार संहार
संगम संसार

जलियाँवाला बाग में बसंत (कविता) 6

(क) **मौखिक**

1. जलियाँवाला बाग में कौए शोर मचाते हैं।
2. 'परिमल-हीन पराग' से आशय फूलों पर जमी हुई धूल से है।
3. कवयित्री दुख की आहो को अपने साथ उड़ाकर ले जाने से मना करती है।
4. कवयित्री भँवरों से अनुग्रह करती है कि यदि गुँजार करना तो सिफ कष्ट की कथा सुनाना।
5. कवयित्री, 'जलियाँवाले बाग' को शोक-स्नान कहकर सम्बोधित करती है।

(ख) **लिखित**

1. कवयित्री प्रथम पद्यांश के माध्यम से जलियाँवाला बाग का वर्णन करती है कि यहाँ पर इतना रक्त रंजित हुआ है कि कोयल की जगह कौए शोर मचाते हैं। काले-काले कीट भ्रमर करते हैं, जिससे भ्रम उत्पन्न होता है।

कलियाँ भी आधी खिली काटों जैसी लगती हैं। पौधे, फूल या तो सूखे हुए है या जले हुए हैं।

2. क्योंकि जलियाँवाला बाग खून से सना पड़ा है और सब दुखी हैं इसलिए कवयित्री कोयल से रोने का राग तथा भवरों से कष्ट की कथा सुनाने को कहती है।
3. इन पंक्तियों में कवयित्री दुख से व्यथित होकर कहती है कि यहाँ मासूम बालक गोली खाकर मरे हैं। जिन लोगों के मन में आशाओं की नयी किरणें थी, वो भी टूट गयी हैं, जो प्यारे परिवार थे वो भी खत्म हो गये और देश से जुदा हो गये हैं।
4. कविता का सार यही है कि यह शोक स्थान है। यहाँ पर सभी कार्य दुख और शान्ति के साथ होने चाहिए। सभी को दुख प्रकट करना चाहिए।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. इस कविता की रचना श्रीमती शुभद्रा कुमारी चौहान ने की है।

2. कवयित्री हवा को मन्द चाल से चलने के लिए इसलिए कहती है क्योंकि जलियाँवाला बाग में कई निर्दोषों की हत्या हुई थी और सभी इस दुख में डूबे हुए थे।
3. कवयित्री रोने का राग कोयल से गाने के लिए कहती है।
4.

मंद	—	धीमा	कष्ट	—	दुख
कोकिल	—	कोयल	संग	—	साथ
राग	—	गीत	भ्रमर	—	भौंरा

(ख) **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अभिनन्दन' से ली गयी हैं। इस कविता का शीर्षक 'जलियाँवाला बाग में बसंत' है। इस कविता की लेखिका 'सुभद्रा कुमारी चौहान' हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड से दुखी होकर वहाँ के बसन्त का वर्णन किया था।

व्याख्या—इन पंक्तियों में कवयित्री दुख से व्यथित होकर कहती है कि यहाँ मासूम बालक गोली खाकर मरे हैं। जिन लोगों के मन में आशाओं की नयी किरणें थीं, वो भी टूट गयी हैं, जो प्यारे परिवार थे वो भी खत्म हो गये और देश से जुदा हो गये हैं।

भाषा-बोध

(क)

कोकिला	—	कोयल	पुष्प	—	फूल
काक	—	कौआ	स्मृति	—	याद
भ्रमर	—	भौंरा	अश्रु	—	आँसू
आम्र	—	आम	उलूक	—	उल्लू
घृत	—	घी	अग्नि	—	आग

(ख)

पुष्प	कंटक
प्यारा	दुश्मन
राग	द्वेष
प्रिय	अप्रिय
आशा	निराशा
देश	विदेश

(ग)

कोकिला	—	क् + ओ + क् + इ + ल् + आ
शुष्क	—	श् + उ + ष् + क् + अ
पुष्प	—	प् + उ + ष् + प् + अ
उपहार	—	उ + प् + अ् + ह् + आ + र् + अ
परिवार	—	प् + अ + र् + इ + व् + आ + र् + अ

(घ) (i) शोक (ii) भ्रम (iii) प्रिय
(iv) कष्ट (v) तड़प (vi) दु:ख

(ङ)

तो	—	तुम आए **तो** हो।
भी	—	तुमने वहाँ खाना **भी** खाया था।
मात्र	—	चने की दाल **मात्र** दस रुपये की ही तो थी।
ही	—	शीला ने **ही** तो वो मकान खरीदा है।

पक्षियों का संसार (रूपक) 7

(क) मौखिक

1. संसार में पक्षियों की लगभग 1400 प्रजातियाँ हैं।
2. प्राचीन काल में कबूतर से पोस्टमैन का काम लिया जाता था।
3. (i) पंख होते हुए भी शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकता।

(ii) उसकी टाँगें दो-दो मीटर तक ऊँची होती हैं और यह तेजी से दौड़ सकता है।

4. एमू नामक पक्षी ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।
5. बॉवर और बया पक्षी 'अंत: सज्जाकार' के लिए विख्यात हैं।
6. मोर भारत और श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी है।

(ख) लिखित

1. कबूतर बहुत बुद्धिमान होते हैं। इनकी स्मरण-शक्ति भी तीव्र होती है। प्राचीन काल में जब संसार में कोई साधन नहीं थे, तब कबूतरों से पोस्टमैन की तरह पत्र लाने, ले जाने का काम लिया जाता था।
2. शुतुरमुर्ग अफ्रीका में पाया जाता है। पंख होते हुए भी, वह उड़ नहीं सकता। इसका शरीर बहुत भारी होता है। पंख हल्के होते हैं। इसकी टाँगें दो-दो मीटर तक ऊँची होती हैं और यह तेजी से दोड़ सकता है। आवश्यकता पड़ने पर यह 72 km/घंटा की अधिकतम गति से भाग सकता है।
3. पेंग्विन को पनडुब्बी पक्षी कहते हैं।
4. बॉवर और बया पक्षी अपने घोंसले, इस खूबसूरती से सजाते हैं कि इन्हें पक्षियों में अन्त: सज्जाकार कहा जाता है। नर बॉवर पतली-पतली लकड़ियों, पत्तियों व पंखों की सहायता से घोंसल बनाता है। जिसे बॉवर कहा जाता है। बॉवर अपने घोंसले को रंगीन फूलों और घास से सजाता है। सजाते समय रंग-योजना या कहें मैचिंग का ख्याल भी रखता है। नीले रंग का बॉवर नीले रंग के फूलों से, पीला बॉवर पीले फूलों से घोंसला सजाता है। 'गार्डन बॉवर' तो इनमें से दो कदम आगे है। उसका मिजाज शाही होता है। शहरों के निकट रहने वाले बॉवर अपने घोंसले को सजाने के लिए पेन के ढक्कन, बरतनों के टूटे-टुकड़ों व रबड़ का भी प्रयोग करते हैं। नर बॉवरों में अपने घोंसले को सुंदर बनाने की होड़ होती है, क्योंकि मादा घोंसले की खूबसूरती देखकर ही घोंसला चुनती है।

   बया को हम बुनकर पक्षी कह सकते हैं। यह अपना घोंसला तैयार करने के लिए तिनको को अपनी तीखी चोंच से बहुत ही निपुणता से बुनती है। यह लंबी नली जैसा सँकरा होता है। इसके घोंसले का प्रवेश द्वार, फिर उसमें चौड़ी-सी थैली, जहाँ मुलायम रुई आदि बिछाकर यह अंडे देती है।

5. किंगफिशर, ओल्ड वर्ल्ड एवं ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। इनका पसंदीदा भोजन मछली है। किंगफिशर आमतौर पर शर्मीले पक्षी हैं। किंगफिशर के पास एक लम्बी, चाकू-जैसी चोंच होती है। चोंच आमतौर पर लम्बी होती है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) शुतुरमुर्ग — मध्य पूर्व और अफ्रीका
पेंग्विन — अंटार्कटिका और दक्षिणी महासागर
ऐमू — आस्ट्रेलिया
मोर — दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया
कस्तूरा — हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र
किंगफिशर — ओल्ड वर्ल्ड एवं ऑस्ट्रेलिया

(ख) 1. कबूतर 2. पेंग्विन 3. ऐमू
4. मोर 5. कस्तूरा 6. अंत: सज्जाकार

भाषा-बोध

(क) पक्षी — खग, विहग तोता — सुग्गा, शुक
संसार — लोक, जगत मोर — मयूर, मोधक
(ख) निपुणता — निपुण + ता दरजिन — दर्जी + इन
दक्षिणी — दक्षिण + ई संकुचित — संकुच + इत
(ग) घटा — कम करना, बादल पानी — जल, शर्म
भाग — हिस्सा, गणित का चिह्न काल — समय, मौत
(घ) भागना — भगाना खाना — खवाना
लौटाना — लौटवाना देना — दिलाना
लगना — लगाना पढ़ना — पढ़वाना

स्वामी विवेकानंद (निबंध) 8

(क) मौखिक

1. अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन 1893 में हुआ।
2. स्वामी विवेकानन्द का वास्तविक नाम नरेन्द्र था।
3. युवक नरेन्द्र को रामकृष्ण परमहंस से सुरेनबाबू ने मिलवाया।

4. युवक नरेन्द्र ने रामकृष्ण परमहंस से दो प्रश्न पूछे—
   (i) जगत में अलग-अलग धर्म क्यों हैं? क्या हर धर्म का भगवान अलग होता है?
   (ii) ईश्वर साकार है या निराकार?
5. धीरामाता और मिस मूलर नामक उनकी शिष्याओं ने उन्हें बेलूर मठ बनवाने के लिए जमीन खरीदकर दी।

(ख) लिखित

1. स्वामी विवेकानन्द का जन्म कोलकाता में 12 जनवरी, 1863 को हुआ था।
2. स्वामी विवेकानन्द की मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से सुरेन बाबू के घर पर 'चल रे मन निज निकेतन' गीत सुनाकर हुई।
3. रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द के पहले प्रश्न का उत्तर दिया कि "बर्तन में जल भरा है। इसे कुछ लोग जल कहते हैं, कुछ लोग 'पानी' कहते हैं, अंग्रेजी पढ़े लोग, इसे वाटर कहते हैं। इसे चाहे जो नाम दे दो पर यह तो वही रहता है और एक ही काम करता है, यानी प्यास बुझाना। इसी प्रकार ईश्वर भी एक है, केवल उसे लोग अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।
4. रामकृष्ण ने ईश्वर के साकार और निराकार रूप के बारे में बताया कि 'जल जब बर्फ बनकर जम जाता है, तो वह साकार हो जाता है अर्थात दिखाई देता है। जब उसे भाप बना देते हैं तो वह दिखाई नहीं देता, और जब वह किसी बर्तन में रखा जाता है, तो वह उस बर्तन का आकार ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार ईश्वर हर मनुष्य में निवास करता है। वह अलग-अलग व्यक्तियों के विश्वास के अनुसार अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है।
5. रामकृष्ण मठ की स्थापना स्वामी विवेकानन्द और उनके शिष्यों ने मिलकर की। इस संस्था का कार्य दूसरों की सेवा करना था।

(ग) रिक्त स्थान भरो–

1. विश्वनाथ दत्त
2. रामकृष्ण
3. स्वामी विवेकानन्द
4. रामकृष्ण मठ

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. जन सेवा का आह्वान करने वाले व्यक्ति स्वामी विवेकानन्द थे।

2. 'रामकृष्ण मिशन' नामक संस्था की स्थापना स्वामी विवेकानन्द और उनके साथियों ने की।
3. रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य, जन सेवा था।
4. आह्वान — बुलाना मठ — गुरुकुल
   धन — रुपये, पैसे संस्था — केन्द्र

(ख) 1. रामकृष्ण परमहंस एक बहुत ही पहुँचे हुए महात्मा और ज्ञानी पुरुष थे।
2. नरेन्द्र का प्रश्न सुनकर रामकृष्ण परमहंस मुस्कुराए।
3. उनके आह्वान पर सैकड़ों युवक-युवतियाँ इस काम में लग गए।

भाषा-बोध

(क) आज — वर्तमान मधुर — मीठा
शिष्य — छात्र अंश — हिस्सा

(ख) 1. तुम — मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम
2. मैं — उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम
3. उसकी — अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम
4. उन्होंने — अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम
5. तुमने — मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) 1. जन्म — मृत्यु
जन्म और **मृत्यु** तो जीवन में लगे रहते हैं।
2. मधुर — कड़वा
स्वामी जी को **मधुर** स्वर में नरेन्द्र ने **कड़वा** नहीं, मीठा गीत सुनाया।
3. प्रसन्न — दुःखी
नरेन्द्र से मिलकर स्वामी जी **दुखी** नहीं बल्कि **प्रसन्न** हुए।
4. साकार — निराकार
नरेन्द्र ने स्वामी रामकृष्ण से पूछा ईश्वर **साकार** है या **निराकार**।

(घ) ईश्वर — भगवान, विधाता, प्रभु
पानी — नीर, जल, वारि
शिष्य — छात्र, अनुयायी, विद्यार्थी
मनुष्य — मानव, पुरुष, नर

बाल-लीला (कविता) 9

(क) मौखिक

1. यशोदा पालने में हरि को झुला रही हैं।
2. श्रीकृष्ण सोते समय, कभी आँख खोलते हैं, कभी बन्द करते हैं, कभी होंठ फड़फड़ाते हैं।
3. यशोदा इशारों से कह रही है कि कन्हैया सो गया है, शोर मत करो कोई भी।
4. श्रीकृष्ण के मुख पर दही लगी हुई है।
5. श्रीकृष्ण के माथे पर गोरोचन का तिलक हैं
6. जहाज का पक्षी वापस उड़कर जहाज पर जाता है।

(ख) लिखित

1. यशोदा नींद को निंदरिया कहती हैं।
2. श्रीकृष्ण यशोदा का मधुर गीत सुनकर अकुलाते हैं।
3. श्रीकृष्ण के शरीर पर रज और मस्तक पर गोरोचन का तिलक लगा हुआ है।
4. कवि कहना चाहता है कि कोई व्यक्ति अच्छे को छोड़कर बुरे के पास नहीं जाता है। श्रीकृष्ण की भक्ति में लगा व्यक्ति, खूब भटकने के बाद श्रीकृष्ण के चरणों में ही आता है।
5. श्रीकृष्ण बाल रूप में हाथों में मक्खन लिए हुए घुटनों के बल चलते हैं। पूरे शरीर पर मिट्टी, मुख में दही और मस्तक पर गोरोचन का तिलक है। उनके मुख पर लट लटकती हुई ऐसी लगती है, मानो फूल पर भँवरा रस का पान कर रहा है। तथा गले में पड़ी हुई कंठमाला और शेर का दाँत बहुत सुन्दर लगता था। जिसने श्रीकृष्ण का यह सुन्दर रूप नहीं देखा, उसने कुछ नहीं देखा।
6. यशोदा मइया श्रीकृष्ण को पालने में झुलाती हैं और मधुर लोरी सुनाती हैं और कहती हैं कि मेरे लाल को नींद क्यों नहीं आती है? नींद आजा मेरा लाल तुझे बुला रहा है। कान्हा कभी आँखों को बन्द कर लेते हैं और कभी होंठ हिलाते हैं। यशोदा माँ उन्हें सोते हुए जानकर लोगों से कहती है कि मेरा लाल सो रहा है, शोर मत करो। यशोदा जब गाती हैं तो श्री कृष्ण को अंदर से बेचैनी होती है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. जब यशोदा जी मधुर गीत गाती हैं तो श्रीकृष्ण का अन्तरमन बेचैन हो जाता है।
2. श्रीकृष्ण जब घुटनों चलने लगते हैं, तो उनके गाल पर मिट्टी, नेत्रों पर काजल और गोरोचन का तिलक लगाए हुए हैं। उनके गालों पर बालों की घुँघराली लट ऐसी लगती है मानों कि फूल पर भँवरा रस का पान कर रहा हो।
3. इन पंक्तियों में कवि श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन, मन की बात कर रहा है कि मन कहीं भी भटके पर वापस श्रीकृष्ण के चरणों में ही आएगा। जिस प्रकार जहाज का पक्षी कितना भी उड़ ले, वापस जहाज पर ही आता है।

भाषा-बोध

(क) कर — हाथ; सूर्य — सूरज
दधि — दही; पुष्प — फूल
चारु — मनोहर; दुग्ध — दूध

(ख) उत्कर्ष — उत् + कर्ष; अभिमान — अभि + मान
निश्छल — नि् + छल; प्रसिद्ध — प्र + सिद्ध
निस्संतान — नि् + संतान

(ग) 1. प्रात:काल 2. इधर-उधर 3. तेज
4. कम 5. ऊपर

(घ) पत्नी — अर्धांगिनी, संगिनी; अभिमान — घमंड, गर्व
पंछी — खग, विहग; पानी — जल, नीर

पूस की रात (कहानी) 10

(क) मौखिक

1. हल्कू के घर रुपये लेने सहना आया था।
2. मुन्नी को उन रुपये से कम्बल लेना था इसलिए वह रुपये देने को मना कर रही थी।
3. पूस की अंधेरी रात में हल्कू को खेत में रखवाली करने के लिए जाना पड़ा।
4. हल्कू ने जबरा की पीठ थपथपाते हुए कहा कि—"जाड़ा लगता है क्या जबरा?"

5. हल्कू ने अपनी अकर्मण्यता छुपाने के लिए, मुन्नी के सामने बहाना बनाया कि मेरे पेट में दर्द हो रहा था और मैं मरते-मरते बचा।

(ख) लिखित

1. सहना झगड़ालू व्यक्ति था। हल्कू उससे इसलिए डरता था क्योंकि वह छोटी से छोटी बात पर घुड़कियाँ जमाने तथा गालियाँ देने लगता था।
2. मुन्नी मजदूरी को खेती से अच्छा मानती थी। उसका कहना था कि—''मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो उस पर धौंस।''
3. हल्कू जबरा को समझाते हुए कहता है कि—''कल मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठण्डे हो जाओगे।''
4. हल्कू को अपने खेत में घुसी नीलगायों का आभास, मिल जाने पर भी उसने, अपने खेत को बचाने का प्रयास नहीं किया क्योंकि उसे अकर्मण्यता था। उसे आलस्य के भाव ने घेर रखा था। और उसे ठण्ड भी लग रही थी।
5. पूस की ठण्डी रात को हल्कू तथा जबरा ने ठण्ड से सिकुड़कर, आग जलाकर तथा एक-दूसरे के गले लगकर बितायी।
6. लेखक इस कहानी के माध्यम से 'आलस्य बुरी बला' कहावत को चित्रार्थ करता है क्योंकि अगर हल्कू आलस्य न करता और उठ जाता है तो उसके खेत, नीलगाय बर्बाद द्वारा न होते।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. हल्कू के मन में असमंजस था कि सहना को पैसे दिए हैं या नहीं।
2. हल्कू को सहना की घुड़कियों व गालियों से डर लग रहा था।
3. पूस की रात में ठण्ड से बचने के लिए कम्बल की आवश्यकता थी।
4. दशा — हालत हार — असफल होना
   पूस — सर्दी का हिन्दी महीना खुशामद — जी हुजीरी करना
   उपाय — युक्ति

(ख)

1. मुन्नी ने हल्कू से—क्योंकि ठण्ड 'पूस' का महीना आ गया था।
2. हल्कू ने मुन्नी से—क्योंकि सहना पैसे लेने के लिए आया था।
3. हल्कू ने जबरा से—क्योंकि जबरा उसकी गोद में मूँ डाले कूँ कूँ कर रहा था।
4. मुन्नी ने हल्कू से—क्योंकि खतों को नीलगाय बर्बाद कर गयी थी।

भाषा-बोध

(क) स्त्री — नारी, औरत कुत्ता — कुक्कर, श्रवान
रात — रात्रि, निशा मित्र — दोस्त, सखा

(ख) पास — समीप, सफल होना
मन — ढाई सेर की तौल, मनुष्य का चित्त
उत्तर — प्रश्न का उत्तर तथा उत्तर दिशा

(ग) 1. और 2. परन्तु
3. बल्कि 4. नहीं तो

(घ)

निर्दय	सहना	ऊनी	कंबल
गरीब	किसान	अँधेरी	रात
वफादार	कुत्ता	बड़ा	खेत
लंबी	पूँछ	गर्म	अलाव

(ङ) अँधेरी — उजाला ठंडा — गर्म
मैत्री — शत्रुता दीनता — धनवान
दीर्घ — लघु निर्दय — दयालु

संस्कृति क्या है? (निबंध) 11

(क) **मौखिक**

1. संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है जबकि सभ्यता मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है।
2. आदिमानव को घर बनाना नहीं आता था, उसे खेती करना भी नहीं आता था। वह कंदमूल या जंगली जीवों का गोश्त खाकर, गुजारा करता था। जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था, वह या तो नंगा रहता था। या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर लाज छिपाता था।
3. संस्कृति बहुत ही सूक्ष्म और महीन होती है क्योंकि वह हमारी प्रत्येक पसंद व आदत में छिपी रहती है।
4. आदमी के अन्दर छः विकार–काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर छिपे हुए होते हैं।
5. संस्कृति को बढ़ावा देने वाले गुण विनय और विनम्रता है।

(ख) लिखित

1. मनुष्य की भीतरी उन्नति में संस्कृति सहायक है क्योंकि संस्कृति का काम आदमी के दोष को कम करना और उसके गुण को अधिक बनाना है। आदमी भी एक तरह का जानवर है, लेकिन जानवर के गुण, यानी पशुत्व को छोड़कर वह जितना आगे बढ़ता है, उसकी संस्कृति भी उतनी अच्छी होती जाती है।
2. मनुष्य की बाहरी तरक्की में सभ्यता सहायक होती है क्योंकि हमारे पास घर, कपड़े लत्ते, गाय, भैंस, घोड़े, हाथी, मोटर, हवाई जहाज आदि सभी वस्तुएँ हमारी सभ्यता के सबूत हैं।
3. आदमी काम, क्रोध, लोभ, मोह और मत्सर आदि विकारों के कारण पतन का शिकार होता है।
4. भारतीय संस्कृति एक जाति या कुछ थोड़े से लोगों की संस्कृति नही है बल्कि बहुत पुराने समय से जो अनेक जातियाँ इस देश में आती रही हैं, उन सबकी संस्कृतियों के प्रभाव हमारी भारतीय संस्कृति पर पड़ते रहे हैं और उन्हीं प्रभावों को ठीक से अपने भीतर पचाकर, हमारी संस्कृति इतनी विशाल और उदार हो गयी है कि आज वह सारी दुनिया की संस्कृति का आइना बन सकती है।
5. भारतीय संस्कृति के पहले अध्याय में जब आर्य इस देश में आए और द्रविड जाति से मिलकर उन्होंने उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदु या भारतीय संस्कृति कहते हैं। दूसरा अध्याय वह है जब यह संस्कृति कुछ पुरानी हो गयी और उसके खिलाफ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विरोध किया, जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रुढ़ियाँ दूर हुई और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गयी। तीसरा अध्याय वह है जब इस देश में मुसलमान आए और हिन्दू-धर्म का इस्लाम से संबंध हुआ। और चौथा अध्याय वह है जब भारत की मिट्टी पर हिंदुत्व और इस्लाम, दोनों का सम्बन्ध ईसाई धर्म और यूरोप के विज्ञान और बुद्धिवाद् से हुआ।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. हथियार गढ़ना सभ्यता का काम है।
2. संस्कृति हथियारों के बारे में यह बताती है कि हथियार से किसी को मारना सही है या नहीं।

3. दुनिया के विनाश का खतरा, बम और हथियारों से बढ़ रहा है।

4. दुनिया — जगत, जग काम — कार्य, काज
   धन — दौलत, वित्त

(ख) 1. सभ्य 2. खेती
3. संस्कृति 4. आदत

(ग) 1. सही 2. गलत 3. गलत
4. सही 5. सही 6. सही

भाषा-बोध

(क)

योग्य	—	योग्यता	आदमी	—	आदमियत
ऊँचा	—	ऊँचाई	सभ्य	—	सभ्यता
लोभी	—	संतोषी	उदार	—	अनुदार

(ख)

ओर	—	तरफ	सामान	—	माल
उधार	—	ऋण	और	—	अन्य
वात	—	हवा	समान	—	बराबर
उदार	—	महान			
बात	—	विचार			

(ग) 1. उन्नति — अवनति
जिसकी **उन्नति** होगी, **अवनति** भी तो उसी की होगी।

2. गुण — अवगुण
मनुष्य में **गुण** और **अवगुण** दोनो विद्यमान रहते हैं।

3. आदमी — जानवर
आदमी एक **सभ्य** तथा **जानवर** असभ्य प्राणी है।

4. सूक्ष्म — विशाल
सूक्ष्म चींटी भी जब अपने पर आती हैं तो **विशाल** हाथी को कहीं का नहीं छोड़ती।

(घ) 1. एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था।

2. जिस देश में इनकी, जितनी अधिकता है, उस देश को हम उतना ही अधिक सभ्य मानेंगे।

3. आदमी के भीतर जो छ: विकार हैं, वे प्रकृति के दिए हुए हैं

4. हम जिसको अपनी संस्कृति कहते हैं, वह एक जाति या कुछ थोड़े से

लोगों की संस्कृति नहीं है बल्कि बहुत पुराने समय से जो अनेक जातियाँ इस देश में आती रही हैं, उन संस्कृतियों के प्रभाव हमारी भारतीय संस्कृति पर पड़ते रहे हैं।

भक्ति के पद (पद) 12

(क) मौखिक

1. तुलसीदास जी संसार के मायारुपी भ्रम को दूर करने की बात कहते हैं।
2. भोर होते ही मधुबन में गाय चराने के लिए श्रीकृष्ण जाते हैं।
3. कबीर के अनुसार ईश्वर हमारे अन्दर, हर साँस में निवास करते हैं।
4. गुरु नानक जी ईश्वर को इधर-उधर खोजने से इसलिए मना करते हैं क्योंकि ईश्वर हमारे अन्दर है।
5. साँप का पिटारा मीरा के पास जाकर सालिगराम में बदल गया।

(ख) लिखित

1. तुलसीदास जी रघुपति की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि बिना रघुपति को भजे, कोई विपत्ति टाली नहीं जा सकती।
2. कृष्ण ग्वालों के बालकों की शिकायत करते हुए कहते हैं कि वे सभी मेरे बैरी हो गये हैं, उन्होंने जबरदस्ती मक्खन मेरे मुँह में लगा दिया है।
3. हमें ईश्वर को अपने अन्दर ही खोजना चाहिए क्योंकि वह हमारे अन्दर ही बसते हैं।
4. राणा द्वारा मीरा के लिए भेजा गया जहर का प्याला अमृत में बदल गया।
5. मीरा श्रीकृष्ण के गुण गाने में मस्त रहती हैं क्योंकि वह उन्हें अपना पति मानती है।
6. ईश्वर को जानने के लिए अपने आपको पहचानना आवश्यक है क्योंकि ईश्वर हमारे अन्दर ही तो है। अगर हम अपने आपको नहीं जानेंगे तो ईश्वर को जानना भी असम्भव है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. जिस प्रकार स्वप्न में व्यक्ति अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता है और मृत्यु हो जाती है। वैध अनेक उपाय कर लें पर व्यथा नहीं जाती। जब तक हमारी नींद नहीं खुलती तब तक दुख कम नहीं होते, उसी प्रकार बिना गुरु के रास्ता दिखाए और बिना राम को भजे विपत्ति टाली नहीं जा सकती है।

2. श्रीकृष्ण जी मइया यशोदा से सफाई देते हुए कहते हैं कि मइया मैंने माखन नहीं खाया है। चार पहर से मैं वन में गाय चराता हुआ भटक रहा हूँ, शाम होने पर घर आया हूँ। मैं इतना छोटा बालक हूँ, मैं छींका तक कैसे पहुँच सकता हूँ?
3. इन पंक्तियों में गुरु गोविन्द सिंह जी कहते हैं कि जिस प्रकार फूल में खुशबू और दर्पण में प्रतिबिम्ब रहता है, उसी प्रकार ईश्वर हमारे मन में रहता है, उसे अपने मन में खोजना चाहिए।

भाषा-बोध

(क)	साधु	—	राक्षस	सत्य	—	असत्य
	जहर	—	अमृत	भारी	—	हल्का
	गुण	—	अवगुण	उपस्थिति	—	अनुपस्थिति
(ख)	कमल	—	पुष्कर, अरविन्द	पक्षी	—	खग, विहग
	रघुपति	—	राम, राघव	पीर	—	दर्द, पीड़ा
(ग)	बास	—	गुजर, सुगन्ध	गिरा	—	वाणी, सरस्वती
	मन	—	तौल, मनुष्य का मन	सूल	—	भाला, काँटा
(घ)	वैद	—	वैद्य	पच्छी	—	पंक्षी
	साँझ	—	शाम	हाथ	—	हस्त
	कीर	—	शुक	पीर	—	पीड़ा

ऐसी वाणी बोलिए (निबंध) 13

(क) मौखिक

1. साधारणतया जो भाषा मनोनुकूल होती है जिससे चित्त द्रवित होता है, वही भाषा मधुरवाणी कहलाती है।
2. माधुर्य 'हृदय-द्वार' खोलने की कुँजी है।
3. बाणभट्ट के मरने के समय यह प्रश्न उठा कि 'कादंबरी' कौन पूरी करेगा?
4. वार्तालाप में शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है।
5. किसी काम को कराने के लिए 'कृपया' शब्द का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यह शिष्टता का परिचायक होता है।

(ख) लिखित

1. तुलसीदास जी ने मधुरवाणी के विषय में कहा है कि कोयल किसी को कुछ नहीं देती और कौआ किसी से कुछ नहीं लेता है, बस कोयल मीठे वचन से जग को अपना कर लेती है।
2. साहित्य वह है, जिसमें बात को प्रभावशील भाषा में व्यक्त किया जाता है।
3. वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं तभी मनुष्य वंद्य बनता है।
4. मन, वाणी, कर्म का सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठ पद पर पहुँचाता है।
5. यदि किसी बात के लिए इनकार करना पड़े तो उसका सही तरीका यह है कि यह कहना चाहिए कि मुझे बड़ा खेद है कि मुझे इनकार करना पड़ा आपने यहाँ आने या माँगने का कष्ट किया और मैं इस विषय में आपकी सेवा न कर सका।
6. व्यापारिक बातचीत भी अशिष्ट नहीं होनी चाहिए किन्तु वह नपी-तुली हो सकती है। निजी सम्बन्ध की बातचीत में आत्मीयता का अभाव नहीं रहना चाहिए और थोड़ा-सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्तव्य हो जाता है। कुछ लोग आपके साथ निजी सम्बन्ध की तरह वार्तालाप करते हैं। यह बुरा नहीं है। किन्तु बात उतनी ही की जाए जितनी निभाई जा सके।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. मधुर वचनों के पीछे भाव भी शिष्ट होना चाहिए।
2. हृदय की मलिनता और मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता।
3. वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं तो मनुष्य वंद्य बनता है।
4. समानार्थी शब्द—

मधुर	—	मीठा	मलिनता	—	गन्दा
बेकार	—	अनुपयोगी	वंद्य	—	पूज्य

(ख)

1. सामाजिकता
2. वचनों
3. वार्तालाप
4. कर्म

(ग) भाषा के द्वारा ही मनुष्य ने समाज में अपना स्थान बनाया है। प्यार से बोलने पर दो अनजान लोग भी मित्र बन जाते हैं जबकि कड़वे वचनों से मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।

भाषा-बोध

(क)	उन्नति	—	उत् + इति	सामाजिकता	—	सामाजिक + ता
	सांसारिक	—	संसार + इक	वांछनीय	—	वांछन + ईय
(ख)	सबल	—	निर्बल	मधुर	—	कर्कश
	आदर	—	अनादर	असली	—	नकली
(घ)	भाषा	—	स्त्रीलिंग	सीड़ी	—	स्त्रीलिंग
	लेखक	—	पुल्लिग	वाणी	—	स्त्रीलिंग
	काया	—	स्त्रीलिंग	पोशाक	—	स्त्रीलिंग
	लड़का	—	पुल्लिग	वस्तु	—	स्त्रीलिंग

(ङ)
- मनुष्य — मानव, इन्सान, मनुज
- मित्र — दोस्त, सखा, मीत
- घर — गृह, भवन, आलय
- वन — जंगल, अरण्य, कानन

(च)	समाज	—	सामाजिकता	मिठास	—	मीठा
	दिन	—	दैनिक	कटुता	—	कटु
	मृत्यु	—	मर्त्य	दूध	—	दूधिया

अमरता की प्यास (लोककथा) 14

(क) मौखिक

1. सिकंदर यूनान का बादशाह था।
2. सिकंदर ने ऐसा उपाय पूँछने के लिए बुजुर्गों को दरबार में बुलाया, जिससे वह हमेशा जीवित रह सके।
3. फारस देश के विशाल मरुस्थल को पार करने के बाद जुल्मत नाम का एक अन्धेरा प्रदेश था।
4. झरने के रक्षक ने सिकन्दर, को झरने का पानी पीने की अनुमति दी।
5. सुरंग से बाहर आते ही सिकन्दर और उसके साथियों ने चिरजीवन के पानी से भरे मटके को, पेड़ पर टाँग दिया और सो गये।

(ख) लिखित

1. सिकंदर के मन में शंका थी कि यदि मैं जीवित न रहा तो मेरे साम्राज्य का क्या होगा? यही उनकी चिंता का करण था।

2. बूढ़े ने चिरजीवन पाने की युक्ति बताते हुए कहा—"फारस देश के विशाल मरुस्थल को पार करने पर जुल्मत नाम का एक अन्धेरा प्रदेश आता है। वहाँ चिरजीवन के पानी का झरना है, उस झरने की रखवाली ख्वाजा खिजर नाम का एक बूढ़ा करता है। उस बूढ़े ने भी उस झरने का पानी पिया है इसलिए वह अब भी जिन्दा है। वह बूढ़ा चाहे तो जुल्मत में जाने की अनुमति दे सकता है।"
3. सिकन्दर अपने चालीस घुड़सवारो के साथ चिरजीवन के पानी के झरने की तलाश में निकला क्योंकि वह हमेशा जीवित रहना चाहता था।
4. सिकन्दर झरने तक पहुँचने में सफल रहा किन्तु फिर भी उसका चिरजीवन पाने का सपना सफल नहीं हुआ क्योंकि कौए ने पानी से भरी गगरी लुढ़का दी और गगरी का सारा पानी बह गया।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. सुरंग से बाहर आते ही सिकन्दर व उसके साथियों ने फैसला किया कि यहाँ थोड़ा आराम कर लें।
2. उन्होंने चिरजीवन के पानी से भरी गगरी को पेड़ की डाल पर बाँधा।
3. एक कौआ गगरी पर आकर बैठा। उसने थोड़ा पानी पिया, गगरी लुढ़का दी और उड़ गया। गगरी का सारा पानी बह गया।
4. गगरी — गागर, मटका पेड़ — वृक्ष, तरु
कौआ — काक, ढेड़ पानी — जल, नीर

(ख) 1. एक बूढ़े ने राजा सिकन्दर से—क्योंकि वह हमेशा जीवित रहना चाहता था।
2. सिकन्दर ने उस बूढ़े से—क्योंकि वह झरने के पानी को पीना चाहता था।
3. चिरजीव के रक्षक बूढ़े ने सिकन्दर से—क्योंकि वह उस झरने का पता पूछ रहे थे।
4. सैनिकों ने आपस में—क्योंकि वह जल को बड़ी धूपधाम से और आपस में सबके साथ बाँटकर पीना चाहते थे।

भाषा-बोध

(क)

रात	—	रातें	बादशाह	—	बादशाहों
बूढ़ा	—	बूढ़े	रक्षक	—	रक्षकों
यात्रा	—	यात्राएँ	झरना	—	झरनों

(ख)	दिन	—	वार	बूढ़ा	—	वृद्ध
	पानी	—	जल	सुरंग	—	गुफा
	दीवार	—	प्राचीर			

(ग)	साम्राज्य	ज्य	भाज्य	राज्य
	जुल्मत	ल्म	फिल्म	जुल्म
	रास्ते	स्त	मस्त	सस्ता
	अन्य	न्य	सामान्य	सर्वमान्य
	प्रयत्न	त्न	रत्न	जत्न

(घ) जुल्मत — ज् + उ + ल् + म् + अ + त् + अ

मरुस्थल — म् + अ + र् + उ + स् + थ् + अ + ल् + अ

सिकन्दर — स् + इ + क् + अ + न् + द् + अ + र् + अ

अनुमति — अ + न् + उ + म् + अ + त् + इ

(ङ)	निडर	—	डरपोक	जीवित	—	मृत
	विशाल	—	सूक्ष्म	अनुमति	—	असहमति
	बादशाह	—	भिखारी	बूढ़ा	—	जवान
	खुशी	—	गम	रक्षक	—	भक्षक
(च)	बूढ़ा	—	बुढ़ापा	निडर	—	निडरता
	गरम	—	गरमाहट	अच्छा	—	अच्छाई
	खुश	—	खुशी	निराश	—	निराशा

न्यायमंत्री (कहानी) 15

(क) मौखिक

1. परदेसी ने शिशुपाल से विनती की कि मुझे रात काटने के लिए आपके यहाँ स्थान मिल जाएगा।
2. सिपाही को देखकर शिशुपाल सहम गये। वे समझ नहीं सके कि सम्राट ने उन्हें क्यों बुलाया है? कहीं उस परदेशी ने सम्राट से झूठी सच्ची शिकायत तो नहीं कर दी।
3. सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्यायमंत्री के पद पर नियुक्त किया था।
4. न्यायमन्त्री ने उच्चाधिकारी धनवीर को राजा को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी।
5. सम्राट अशोक के स्थान पर फाँसी पर उनकी सोने की मूर्ति को लटकाया गया।

(ख) लिखित

1. शिशुपाल के घर आनेवाले परदेशी स्वयं सम्राट अशोक थे। उन दोनों के बीच देश की अवस्था को लेकर बातचीत हुई।
2. शिशुपाल को न्यायमन्त्री इसलिए बनाया क्योंकि उसने कहा था कि ब्राह्मण के लिए कोई भी काम कठिन नहीं है। मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।
3. पहरेदार का हत्यारा स्वयं सम्राट अशोक थे और शिशुपाल ने उन्हें मृत्युदण्ड की सजा सुनाई।
4. सम्राट अशोक को एक हत्यारा होते हुए भी मृत्युदण्ड नहीं दिया गया क्योंकि शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना गया है इसलिए उसे ईश्वर ही दण्ड दे सकता है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. पहरेदार की हत्या स्वयं सम्राट अशोक ने की थी।
2. शिशुपाल के लिए सबसे मुश्किल काम सम्राट को अपराधी घोषित करना था।
3. न्याय की दृष्टि से सम्राट और साधारण व्यक्ति में कोई अन्तर नहीं था अत: सम्राट को सजा देना आवश्यक था।
4.
   - अपराधी — दोषी
     सम्राट अशोक **अपराधी** थे। अत: उन्हें दण्ड देना जरूरी था।
   - सम्राट — राजा
     शिशुपाल के घर आने वाला व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं **सम्राट** थे।
   - हत्या — कत्ल
     एक पहरेदार की **हत्या** अचानक हो गयी थी।
   - सेवक — दास
     शिशुपाल ने महाराज से कहा मैं आपका **सेवक** हूँ।
   - न्याय — इन्साफ
     न्यायमन्त्री का **न्याय** देखकर लोग उनकी जय जय कार करने लगे।

(ख)

1. शिशुपाल ने परदेशी से—क्योंकि वो दोनों देश की अवस्था पर बातें कर रहे थे।
2. परदेसी ने शिशुपाल से—क्योंकि वह देश के न्याय पर प्रश्न पूछ रहा था।
3. सम्राट ने ब्राह्मण शिशुपाल से—क्योंकि उसने कहा था कि वह न्याय का डंका बजाकर दिखा देगा।
4. शिशपुाल ने जनता से—क्योंकि वह न्याय कर रहे थे और सम्राट अपराधी थे।

(ग) 1. नवयुवक 2. अतिथि 3. न्याय
4. सम्राट 5. लाल 6. साहस

भाषा-बोध

(क)

अंधकार	प्रकाश
बाहर	भीतर
न्याय	अन्याय
सरल	कठिन
शान्ति	अशान्ति
इच्छा	अनिच्छा

(ख)

बाहर	—	बाहरी	सुन्दरता	—	सुन्दर
पवित्रता	—	पवित्र	अन्याय	—	अन्यायी
परदेश	—	परदेसी	अच्छाई	—	अच्छा
मोटापा	—	मोटा	निर्दयता	—	निर्दयी
झूठ	—	झूठा	सच्चाई	—	सच्चा

बाहरी द्वार, सुन्दर फूल, छोटा बालक
सच्चा मजदूर, अन्यायी राजा, झूठा रिश्ता
ईमानदार सेवक, मोटा व्यक्ति
निर्दयी शिकारी, अच्छा मौसम

(ग) 1. शिशुपाल 2. शिकायत 3. अधिकारी
4. परदेसी 5. धन्यवाद 6. न्याय
7. स्वीकार

(घ)

न्याय करने वाला	—	निर्णायक
हाथों के लिए कड़ी	—	हथकड़ी
न्याय के लिए मन्त्री	—	न्यायमन्त्री
जहाँ पहुँचना कठिन हो	—	दुर्गम
बहुत अधिक बोलने वाला	—	वाचाल
जो सबकुछ जानता हो	—	सर्वज्ञ
दान देने वाला व्यक्ति	—	दानी

(ङ)

ब्राह्मण	—	विप्र, द्विज	सम्राट	—	नरेश, नृप
मृत्यु	—	देहान्त, मौत	हाथ	—	हस्त, कर

(च)

न्यायमंत्री	—	न्याय का मंत्री	सिरदर्द	—	सिर का दर्द
गंगाजल	—	गंगा का जल	यशप्राप्त	—	यश को प्राप्त
महाराज	—	महान है जो राजा	देशभक्ति	—	देश के लिए भक्ति

(छ)	ता प्रत्यय के शब्द	ई प्रत्यय के शब्द
	प्रसन्नता	कामयाबी
	कलुषता	होशियारी
	सुंदरता	बदतमीजी

(ज)	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
	अन्याय	अ	न्याय
	अवगुण	अव	गुण
	निर्दोष	नि:	दोष
	अपमान	अप	मान
	सुप्रबंध	सु	प्रबंध

सुभागी (कहानी) 16

(क) मौखिक

1. सुभागी तुलसी महतो की पुत्री थी।
2. हरिहर ने सुभागी को समझाया कि—'बेटी हम तेरे भले की कहते हैं। माँ बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा? तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?
3. रामू सुभागी से ईर्ष्या करता था क्योंकि वह माँ-बाप की सेवा करती थी और उसका काम नहीं करती थी तथा माँ-बाप सुभागी की प्रशंसा करते थे।
4. गाँव के लोग सुभागी की तारीफ इसलिए करते थे क्योंकि वह मेहनत से कार्य करती थी और माँ-बाप की सेवा करती थी।
5. सुभागी ने एक बेटी नहीं, बल्कि एक बेटे का फर्ज निभाया क्योंकि उसने वृद्ध अवस्था में अपने माँ-बाप की सेवा की और मृत्यु के बाद उनका विधि-विधान से सारा काम किया तथा उनके इलाज के लिए जो पैसे कर्ज लिए थे, वो भी अपनी मेहनत की कमाई से अदा कर दिए थे।
6. सजनसिंह ने सुभागी को तीन हजार रुपये देकर उसकी सहायता की।

(ख) लिखित

1. तुलसी महतो की चिन्ता का कारण उनकी पुत्री सुभागी थी क्योंकि वह बहुत छोटी-सी उम्र में विधवा हो गयी थी।
2. सुभागी ने तुलसी महतो यानि अपने माता-पिता की अन्तिम समय में सेवा करके तथा कार्यभार संभालकर सहारा दिया।
3. तुलसी महतो को बँटवारे के लिए इसलिए विवश होना पड़ा क्योंकि रामू ने ताने सुनाकर बेचारी सुभागी का जीना मुश्किल कर दिया था।

4. पति के देहान्त के बाद ही लक्ष्मी का दाना-पानी छूट गया था। वह बीमार रहने लगी थी। खाँसी ने उसे खाट पर डाल दिया था। अन्त में पन्द्रहवें दिन उसकी मृत्यु हो गयी।
5. सजनसिंह ने सुभागी से प्रार्थना की कि तुम मेरे घर की बहू बनकर, मेरे घर को पवित्र करो। सुभागी ने सजनसिंह की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

(ग) 1. सुभागी 2. सिर, देह 3. आसान
4. रत्न, पापों 5. सजनसिंह 6. दुर्बलता
7. भगवती

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. सुभागी अपनी माँ की सेवा उनके सिर में तेल डालकर और उनके पैर दबाकर करती थी।
2. सुभागी के अपने माता-पिता के प्रति प्रगाढ़ प्रेम का उदाहरण उनकी निस्वार्थ सेवाभाव से मिलता है।
3. सुभागी अपने भाई को काम करने से नहीं रोकती थी क्योंकि वह सोचती थी कि यह तो जवान आदमी है, ये काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी?
4. माँ — माता बाप — पिता
बेटा — पुत्र आदमी — पुरुष

(ख) 1. हरिहर ने सुभागी से—क्योंकि वह उसे दूसरी शादी करने के लिए समझा रहा था।
2. रामू ने अपने माता-पिता से—क्योंकि जब वह सुभागी को बुरा-भला कह रहा था तो उसके माता-पिता बीच में बोल पड़े थे।
3. तुलसी ने अपनी बेटी सुभागी से—क्योंकि वह कह रही थी कि बटवारा मेरी वजह से हो रहा है, मुझे अलग कर दो।
4. सुभागी ने सजनसिंह से—क्योंकि पिता की तेरहवीं के लिए तीन हजार रुपये सजनसिंह के खर्च हुए थे।

(ग) **भावार्थ**—सजनसिंह ने सुभागी से प्रार्थना की कि तुम साक्षात् भगवती का अवतार हो, अगर तुम मेरे बेटे से शादी करके मेरे घर की बहू बन जाओ तो मेरा घर पवित्र हो जाएगा। मेरा लड़का तुम्हारे नाम का पुजारी है। वैसे मैं जात-पात पर विश्वास करता हूँ पर तुमने मेरे सारे बंधन तोड़ दिए।

भाषा-बोध

(क) लड़की — दुहिता, कन्या पिता — बाप, जनक
भाई — भ्राता, बन्धु बेटी — पुत्री, कन्या
पानी — जल, नीर

(ख) भागी — सुभागी फल — सुफल
पुत्र — सुपुत्र गम — सुगम
दूर — सुदूर कर्म — सुकर्म

(ग) भूतकाल
भविष्यत् काल
वर्तमान काल
वर्तमान काल

(घ)
- कामचोर — कामकाजी
  सुभागी **कामकाजी** स्त्री थी। मगर रामू **कामचोर** था।
- विधवा — सधवा
  सुभागी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा और वह **सधवा** से **विधवा** हो गयी।
- विपदा — सम्पदा
  विपदा आने के बाद ही **सम्पदा** का पता चलता है कि उसका महत्व क्या है?
- कड़वी — मीठी
  मिर्च **कड़वी** होती है जबकि गन्ना **मीठा** होता है।
- पाप — पुण्य
  पाप और **पुण्य** कर्म करने वाले, हर तरीके के व्यक्ति इस संसार में हैं।
- सज्जन — दुर्जन
  सजनसिंह बहुत **सज्जन** व्यक्ति थे जबकि रामू एक **दुर्जन** व्यक्ति था।

(ङ) बड़ा — माप, सर्वोत्तम
पानी — शर्म, जल
कर — हाथ, ऋण
जीवन — जल, प्राण
स्वर — बोलने वाले, राग के स्वर

(च) स्वर सहित — प्रार्थना, प्रणाम, प्रकार
स्वर रहित — गर्व, निर्वाह, हर्ष

सत्य की जीत (कहानी) 17

(क) मौखिक

1. घोघा बाबा ऐसे आगे बढ़ रहे थे जैसे कोई तैराक समुद्र की तरंगों को चारों ओर फेंकता हुआ आगे बढ़ता है।
2. गजनी की नजर पत्थर की उस प्रतिमा पर पड़ी, जो मानव-मूर्ति मानो

पराक्रम का प्रतीक हो। आकाश की ओर उठी हुई वे पैनी आँखें। स्वर्ग से अमृत को लाने वाली गरुड़ की दृष्टि थी। वह पैरों में लिपटे हुए नागों को ऐसे मसलकर नष्ट कर रहा था। जैसे—पक्षीराज गरुड़ ही हो।

3. सुल्तान ने पत्थर की मूर्ति बनाने वाले शिल्पी की तलाश करने को कहा।
4. शिल्पी ने मृत्यु के बारे में कहा कि मृत्यु से कौन बच सकता है सुल्तान? अंतर केवल इतना है कि एक सत्कर्म करके कीर्ति अर्जित करता है। दूसरा बर्बरता का व्यवहार करके, लोगों की आहें और चीत्कार बटोरता है।

लिखित

1. केसरिया पगड़ी घोघा बाबा पहने हुए थे।
2. गज़नी ने पत्थर की प्रतिमा में कला-कौशल का उदाहरण आज तक नहीं देखा था। वह प्रस्तर मानवमूर्ति मानो पराक्रम का प्रतीक हो। आकाश की ओर उठी हुई वे पैनी आँखें। स्वर्ग से अमृत को लाने वाली गरुड़ की दृष्टि थी। पैरों में लिपटे नागों को वह मसलकर नष्ट कर रहा था। मानो पक्षीराज गरुड़ ही हो।
3. सुल्तान ने शिल्पी की निर्भीकता पर कहा कि कलाकार! तुम्हारा हाथ पत्थर से स्वर्ग का निर्माण भले करे, किन्तु तुम्हारी जिह्वा तुम्हें रसातल की ओर ले जा सकती है।
4. शिल्पी घोघा राणा की प्रतिमा को अपनी श्रेष्ठतम कृति बताता है क्योंकि उसमें उनकी कला पूर्णतया प्रकट हुई थी।
5. सुल्तान शिल्पी से प्रभावित होकर कहता है कि ''कलाकार! मैंने तुम्हारे राणा को परास्त कर दिया है। शस्त्र की विजय अंतिम विजय होती है, यही मेरा आज तक विश्वास था। परन्तु आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं। शस्त्र की जीत अन्तिम जीत नहीं होती। सत्य की ही विजय होती है—यह ज्ञान मुझे मिल गया।''

(ग)
1. गजनी ने नगरवासियों से—क्योंकि वह मूर्ति मूर्ति को देखकर प्रभावित हुआ था।
2. कलाकार ने गजनी से—क्योंकि वह घोघा बाबा की बुराई कर रहा था।
3. गजनी ने कलाकार से—क्योंकि वह उसकी बात से प्रभावित हुआ था।

(घ)
1. गर्जना 2. प्रतिमा 3. नगर
4. मृत्यु 5. श्रेष्ठतम

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)
1. ये कथन शिल्पी (कलाकार) द्वारा बोले गए।
2. कलाकार वीरांगना कहकर 'राजनीति' को सम्बोधित करता है।
3. परमसत्ता का तात्पर्य पूर्ण प्राधिकार होता है।

4. जिह्वा — जीभ कलाकार — शिल्प
आलोक — प्रकाश वीरांगना — वीर स्त्री

(ख) गजनी शिल्पकार के शब्दों को सुनकर नाराज हो रहा था। इस कारण भीड़ में तहलका मच गया। बहुत समय बीत जाने के बाद भी शिल्पी स्थिर (पर्वत के समान) खड़ा रहा कुछ नहीं बोला, थककर सुल्तान ने ही बाद में बोला कि मेरी आज्ञा स्वीकार है।

भाषा-बोध

(क)

- कठोरता — कोमलता
  कठोरता और **कोमलता** एक-दूसरे के विलोम होते हैं।
- शक्ति — शक्तिहीन
  रावण अपने आपको **शक्तिशाली** व्यक्ति जबकि राम को **शक्तिहीन** समझता था।
- चंचल — स्थिर
  योगी पुरुष का मन **स्थिर** होता है जबकि सामान्य व्यक्ति स्वभाव से **चंचल** होता है।
- नीरोग — रोग
  दवा लेने पर **रोग** सही हो जाता है और व्यक्ति **निरोगी** बन जाता है।
- उपयोगी — अनुपयोगी
  कुछ वस्तुएँ हमारे लिए **उपयोगी** और कुछ **अनुपयोगी** होती हैं।

(ख)

अग्नि	—	स्त्रीलिंग	वाणी	—	स्त्रीलिंग
मसाला	—	पुल्लिंग	विद्यार्थी	—	पुल्लिंग
नदी	—	स्त्रीलिंग	हाथ	—	पुल्लिंग

(ग)

एकाग्रता	एकाग्र	विद्यार्थी
मेहनत	मेहनती	किसान
संयम	संयमी	व्यक्ति
सफलता	सफल	पुरुष
सुख	सुखी	इन्सान

(घ)

भविष्यत् काल	वर्तमान काल
भूतकाल	भविष्यत् काल

(ङ)

सरिता	सरित	प्रवाहिनी
बच्चा	बाल	लड़का
हस्त	पाणि	कर

अभिनंदन-8

वीरों का कैसा हो वसंत? (कविता) 1

(क) मौखिक

1. फूली सरसों से धरती का अंग-अंग पुलकित है।
2. कोयल के गाने और ताशा के बजने से युद्ध की तैयारी के संकेत मिल रहे हैं।
3. कवयित्री के अनुसार सबसे गंभीर समस्या यह है कि वीरों का वसंत कैसा हो?
4. कवयित्री अतीत का मौन तोड़ने की बात करती है।
5. 'है उद्धि गरजता बार-बार' पंक्ति से आशय—समुद्र के बार-बार गरजने और उसकी तरंगें ऊपर उठने से है।

(ख) लिखित

1. हिमालय, सागर, धरती और आकाश सब मिलकर यह पूछ रहे हैं कि वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए।
2. कवयित्री अतीत से मौन त्यागने को कहती है क्योंकि अब युद्ध करने का समय आ गया है।
3. कविता के अंतिम पद्यांश के माध्यम से कवयित्री यह कहना चाहती है कि जिस कविता से वीरों में जोश उत्पन्न नहीं होता है। वह कविता वास्तव में कविता नहीं है।
4. सरसों के फूल खिलने पर मधु लेकर कामदेव आते हैं।
5. इस कविता का सार यह है कि वीरों का वसंत शत्रुओं से अपनी मातृभूमि की रक्षा करके ही मानता है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री युद्ध की तैयारी के विषय में बता रही है।

   व्याख्या—कोयल तान भर रही हैं या कोयल कूक रही हैं, उधर ताशे बज रहे हैं, इन दोनों से युद्ध की तैयारी के संकेत मिल रहे हैं।
2. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री अतीत की घटना 'लंकादहन' से शिक्षा लेने को प्रेरित कर रही है।

व्याख्या—अतीत अब मौन त्याग कर बता दे कि लंका में आग क्यों लगा थी? अत: ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जा और कर्म कर।

3. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री राणा, ताना का स्मरण कर वैसा ही पराक्रम दिखाने के लिए कह रही है।

व्याख्या—हे हल्दी घाटी के पत्थर और ऐ सिंहगढ़ के प्रचंड दुर्ग, अब राणा और ताना का घमंड कर, उनकी स्मृतियाँ याद कर और यह बता दे कि वीरों का वसंत कैसा होना चाहिए।

भाषा-बोध

(क)	उद्धि	—	समुद्र, सागर	नभ	—	आकाश, गगन
	कोकिल	—	कोयल, श्यामा	कृपाण	—	तलवार, कटार
(ख)	रस	—	नीरस	अतीत	—	वर्तमान
	धरती	—	आकाश	समस्या	—	समाधान

(ग) पुलकित — प् + उ + ल् + अ + क् + इ + त् + अ
अतीत — अ + त् + ई + त् + अ
कोकिला — क् + ओ + क् + इ + ल् + आ
विलास — व् + इ + ल् + आ + स् + अ
भूषण — भ् + ऊ + ष् + अ + ण् + अ
स्वच्छंद — स् + व् + अ + च् + छ् + अं + द् + अ

नीलकंठ (संस्मरण) 2

(क) मौखिक

1. बड़े मियाँ ने लेखिका से मोर और मोरनी के बच्चों के दाम पैंतीस रुपये लिए। तीस रुपये चिड़ीमार के तथा पाँच रुपये लेखिका के।
2. लेखिका के परिवार वालों ने उसे ''तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया'' कहकर चिढ़ाया।
3. चित्रा लेखिका की बिल्ली थी।
4. विदेशी मेहमानों ने नीलकंठ को 'परफैक्ट जेंटिलमैन' का नाम दिया।
5. नीलकंठ जालीघर के जंतुओं के बीच सेनापति और संरक्षक की भूमिका निभाता था।
6. कुब्जा नामक मोरनी स्वभाव से भी कुब्जा थी और उसकी जालीघर के किसी भी जंतु के साथ उसकी मित्रता नहीं थी।

(ख) **लिखित**

1. बड़े मियाँ ने कहा कि शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार, दो मोर के बच्चे पकड़कर लाया हूँ। एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोरनी के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इंसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दूँ? टालने के लिए, मैंने कह दिया गुरुजी ने मँगवाए हैं।
2. लेखिका ने अपने कमरे के कायाकल्प का वर्णन चिड़िया खाने के रूप में किया है।
3. लेखिका ने नीलकंठ के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा कि सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूप-छाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वास दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया।
4. नीलकंठ ने जालीघर के जंतुओं के रक्षक के रूप में एक खरगोश के बच्चे की जान बचाई।
5. कुब्जा नीलकंठ और राधा के लिए अभिशाप बनकर आई क्योंकि उसे नीलकंठ और राधा का साथ में रहना अच्छा नहीं लगता था, जब भी राधा नीलकंठ के पास जाती, वह उसे मारने दौड़ पड़ती थी। उसने दोनों को अलग कर दिया, जिससे नीलकंठ की मृत्यु भी हो गई।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. लेखिका ने पिंजरे की तरफ न देखने का संकल्प किया था।
2. लेखिका ने अपना ध्यान बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बँधी ऐनक की ओर किया।
3. मोरनी की अनदेखी करना कठिन था क्योंकि मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थीं कि वह खड़ी नहीं हो सकती थी।
4. समान — असमान विरल — सघन
   बँधी — खुली अनदेखी — देखी
   कठिन — सरल

(ख) 1. बड़े मियाँ ने लेखिका से—क्योंकि मोर के बच्चों को वही खरीदने आते थे, जिनको उनके पंजों से दवा बनानी होती थी।
2. परिवार वालों ने लेखिका से—क्योंकि बच्चे तीतर जैसे लग रहे थे।
3. लेखिका ने परिवारवालों से—क्योंकि वह उसे चिढ़ा रहे थे।
4. बड़े मियाँ ने लेखिका से—क्योंकि कुब्जा मोर घायल थी उसके पैरों की उँगलियाँ टूटी हुई थीं।
5. बड़े मियाँ ने लेखिका से—क्योंकि उनको दवाई बनाने वाले लोग ही खरीदने आते थे।
6. बड़े मियाँ ने लेखिका से—क्योंकि मोरनी घायल थी।

(ग) 1. लेखिका कहती है कि जब नीलकंठ मर गया तो उसे गंगा जी की बीच धारा में प्रवाहित किया गया। उसके पंखों की चंद्रिकाओं से आकृति प्रतिबिंबित होकर, ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो गंगा जी का पाट एक विशाल मोर हो।
2. मोर के बच्चों के बढ़ने पर उनकी खूबसूरती का वर्णन करते हुए लेखिका कहती है कि उनके सिर की कलगी धनी, ऊँची और चमकीली हो गई है। चोंच अधिक बंकिम और नुकीली हो गई है। गोल आँखों में नीलापन झलकने लगा है। गर्दन में धूप, छावँ जैसी कांति चमकने लगी और दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट हो गए।

(घ) 1. मोर के सिर पर कलगी और सघन ऊँची, और चमकीली हो गई।
2. नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी।
3. परिणामत: कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए।

भाषा-बोध

(क) मोर — शिखी, मयूर इंसान — मानव, आदमी
घर — गृह, सदन गुरु — बृहस्पति, अध्यापक
विषधर — साँप, सर्प

(ख) 1. लेखिका 2. नीलकंठ 3. कुब्जा
4. लेखिका 5. राधा

(ग) 1. पूर्णविराम 2. संयोजक चिह्न
3. अल्प विराम 4. विस्मियादिबोधक चिह्न

(घ) पता — किसी के रहने की जगह, मालूम
पाल — पालन करने वाला, नाव के मस्तूल पर बाँधने का मोटा वस्त्र
कर — हाथ, ऋण
पानी — जल, कार्यान्वयन

(ङ)	इंसान	—	हैवान		सजीव	—	निर्जीव
	दुर्बलता	—	सबलता		दंड	—	पुरस्कार
	आरंभ	—	अंत				

(च) क्रम — पंक्ति — बच्चे लंबाई के हिसाब से **क्रम** में थे।

कर्म — कार्य — हमें हमेशा अच्छे **कर्म** करने चाहिए।

पथ — रास्ता — हमें उस **पथ** पर चलना चाहिए जो हमें कामयाबी पर ले जाए।

पथ्य — रोगी के भोजन को **पथ्य** कहते हैं।

धरा — भूमि — हमने इस **धरा** पर जन्म लिया है।

धारा — प्रवाह — गंगा नदी की **धारा** बहुत तेज थी।

(छ)	ऊँचा	—	ऊँचाई		पूर्व	—	पूर्वी
	लंबा	—	लंबाई		उत्तर	—	उत्तरी
	चौड़ा	—	चौड़ाई		दक्षिण	—	दक्षिणी
	गहरा	—	गहराई		पश्चिम	—	पश्चिमी
	लड़ा	—	लड़ाई		सावधान	—	सावधानी

कलिंग विजय (एकांकी) 3

(क) **मौखिक**

1. नंदिनी सभी वस्तुओं को सजाकर ठीक रखने में लीन है।
2. अशोक कलिंग की राजकुमारी के बारे में कहता है कि अभी वह मेरी नजर से परे है, लेकिन सुना है, वह बौद्ध भिक्षुणी हो गई है।
3. ये शब्द रेखा ने कहे।
4. गायिका अपने गीत को कहानी और सम्राट अशोक के जीवन को, कठोर सत्य बताती है।
5. रेखा भुजबल के बारे में उद्गार प्रकट करती हुई कहती है कि जिसके पास भुजबल है, वह मर सकते हैं और मार भी सकते हैं।
6. गायिका सम्राट अशोक को अपना भाई बनाती है।

(ख) **लिखित**

1. तुम जानती हो किससे बातें कर रही हो? इस प्रश्न के उत्तर में गायिका ने कहा कि जानती क्यों नहीं। ..... मैं बात कर रही हूँ, पाटलिपुत्र के राजा

से—जो कल ही एक लाख निर्दोष मनुष्यों का रक्त बहाकर भारतवर्ष का सम्राट हुआ है।

2. सम्राट अशोक एक महान शासक थे, जिन्होंने विजय का सपना देखा था। कलिंग पर विजय प्राप्त करने के बाद, उनका मन परिवर्तित हुआ और उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया।
3. गायिका वास्तव में कलिंग की राजकुमारी थी। अशोक के महल में आने का उनका उद्देश्य, अशोक को अहिंसा के रास्ते पर लाना था।
4. गायिका अशोक को समझाना चाहती थी कि हिंसा से, रक्त बहाने से, राज्यों को जीता जा सकता है, पर वहाँ रहने वाले लोगों के मन को नहीं। लोगों के दिलों को अहिंसा और प्रेम से जीता जा सकता है।
5. अशोक को यह सुनकर हैरानी हुई कि उसे कोई प्यार नहीं करता क्योंकि वह सोचता था, वह राजा है और सभी उससे प्यार करते हैं।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. उपर्युक्त कथन गायिका द्वारा कहे गए हैं।

2. भगवान बुद्ध की करुणामयी किरणों से प्रभात को आलोकित करने की बात कही गई है।
3. आर्यावर्त के हर नगर में शिलालेख और स्तंभ दिखाई दे रहा है।
4.

प्रभात	—	सुबह	उज्ज्वल	—	चमकदार
संदेश	—	सूचना	संसार	—	जग
प्रतिमा	—	मूर्ति	सम्राट	—	राजा

(ख) 1. नंदिनी ने गायिका से 2. अशोक ने रेखा से
3. रेखा ने नंदिनी से 4. गायिका ने सम्राट अशोक से
5. रेखा ने गायिका से 6. गायिका ने सम्राट से

भाषा-बोध

(क) गा — गाय, गायिका, गायक, गाना
भय — अभय, निर्भय, भयानक, भयभीत
दोष — निर्दोष, दोषी, दोषमुक्त, दोषारोपण
भव — भवसागर, भवानी, भवभूति, भवपार

(ख) (i) बच्चा स्कूल जाता है।

(ii) नर्तकी नृत्य करती है।

(i) बच्चे के द्वारा स्कूल जाया जाता है।

(ii) नर्तकी के द्वारा नृत्य किया जाता है।

(i) बच्चे से स्कूल नहीं जाया जाता।

(ii) नर्तकी से नृत्य नहीं किया जाता।

(ग)

सम्राट	—	राजा, नृप	भवन	—	घर, सदन
युद्ध	—	लड़ाई, संघर्ष	फूल	—	पुष्प, सुमन
मनुष्य	—	मानव, व्यक्ति	दुनिया	—	संसार, जगत

(घ)

ओर	—	तरफ			
और	—	दूसरा			
दिन	—	सूर्योदय से सूर्यास्त का समय			
दीन	—	दयनीय			
चपल	—	चंचल	सर	—	तालाब
चप्पल	—	खुली एड़ी का जूता	शर	—	बाण
सजल	—	जल से युक्त	पराग	—	केसर का चूर्ण
विटप	—	वृक्ष			
मर्मर	—	पत्तों के हिलने से होने वाली ध्वनि			

(ङ)

1. **प्रसंग–**प्रस्तुत पंक्तियों में अशोक को उसके विषय में पूर्व की बातों से अवगत बताया गया है।

   व्याख्या–गायिका कहती है, हे सम्राट अशोक, वह मधुर स्वर कहाँ है? वह यौवन क राजसी ठाट-बाट कहाँ है? वह गर्मजोशी की मधुर मुस्कान कहाँ लुप्त हो गई है। अब आपको बस विजय की ही अभिलाषा है। अब आप पत्थर के हृदय के हो गए हो।

2. **प्रसंग–**प्रस्तुत पंक्तियों में अशोक की क्रूरता का उल्लेख किया गया है।

   व्याख्या–गायिका कहती है कि हे सम्राट जिस प्रकार भँवरा फूलों के पंख को नष्ट करता है; कलियों के छोटे शरीर को बेध देता है, पराग के पीले पराग को मसल देता है, उसी प्रकार आप करोड़ों व्यक्तियों का रक्तपात कर चुके हो।

गौरी (कहानी) 4

(क) मौखिक

1. बाबू राधाकृष्ण, अपनी बेटी गौरी के विवाह के कारण चिंतित रहते थे।
2. गौरी मन ही मन सोचती थी कि क्या मैं माता-पिता को इतनी भारी हो गई हूँ? रात-दिन सिवाय विवाह के उन्हें और कुछ सूझता ही नहीं।
3. सीताराम जी बाबू राधाकृष्ण के घर अगले इतवार को गौरी को देखने और खुद को दिखलाने के लिए पधारे।
4. सीताराम जी को बाबू राधाकृष्ण के पत्र की प्रतीक्षा थी क्योंकि वे विवाह की तारीख निश्चित करना चाहते थे।
5. बाबू राधाकृष्ण द्वारा गौरी के लिए चयनित दूसरा वर अभी-अभी नायब तहसीदार के पद पर नियुक्त हुआ था। आगे और भी उन्नति की आशा थी। बी०ए० पास थे, पर देखने में अति सुंदर न थे। बदशक्ल भी कहे जा सकते थे। पर पुरुषों की भी कहीं सुंदरता देखी जाती है। उम्र कुछ अधिक न थी, यही 24-25 साल।
6. गौरी सीताराम जी से विवाह करना चाहती थी क्योंकि वह विनयी, नम्र, और सादगी की प्रतिमा थे। साथ ही वे एक देशभक्त थे और गौरी देश भक्त का सम्मान करती थी।

(ख) लिखित

1. बाबू राधाकृष्ण ने सीताराम के बारे में अपनी पत्नी को बताया कि वह लड़का नहीं आदमी है, तुम्हारी लड़की के साथ मामूली चपरासी-सा दिखेगा। बोलो करोगी ब्याह। उम्र पैंतीस-छत्तीस साल है। साथ ही दो बच्चे भी हैं, उन्हीं बच्चों को सँभालने के लिए विवाह करना चाहते हैं।
2. गौरी स्वयं को अपराधिनी अनुभव कर रही थी क्योंकि उसे लगता था कि सारी कठिनाइयों की जड़ वही है।
3. सीताराम के बच्चों ने गौरी से शिकायतें कीं कि—
   (i) बाबू हमें कभी खिलौने नहीं लेने देते।
   (ii) मिठाई भी कभी नहीं खिलाते।
   (iii) बाबू हमें छोड़कर दफ्तर चले जाते हैं और दिन-भर नहीं आते। बाबू अच्छे नहीं हैं।

4. गौरी नायब तहसीलदार से विवाह नहीं करना चाहती थी क्योंकि नायब तहसीलदार साहब, जिन्हें अपने आराम, अपने ऐश के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट के जरा से इंगित मात्र पर निरीह देशवासियों के गले पर छुरी फेरने में जरा भी संकोच या हिचक नहीं थी। जिनके सामने कुछ चाँदी के टुकड़े फेंक दिए जाते हैं और दुम हिलाते हुए निंद्य से निंद्य कर्म करने में भी कदाचित लज्जित नहीं होते।
5. गौरी अपने नौकर को लेकर, शाम को कानपुर गई क्योंकि सीताराम जी को राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया था और उनके बच्चे वहाँ अकेले थे।
6. गौरी बहुत ही सुंदर, स्वभाव से निर्भीक, दृढ़निश्चयी, हठीली थी तथा वह देशप्रेमियों का आदर करती थी।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. तार में लिखा था कि नायब तहसीलदार के पिता का देहांत हो गया है इसलिए विवाह, सालभर के लिए टल गया है।
2. विवाह एक साल के लिए आगे टल गया था।
3. विवाह के आगे टल जाने के कारण दुख के स्थान पर खुशी गौरी को हुई थी।
4. **भावार्थ**—गौरी नायब तहसीलदार से विवाह नहीं करना चाहती थी। विवाह की तारीख निकट आ रही थी। गौरी को चिंता रहती थी क्या होगा? परंतु नायब तहसीलदार के पिता की मृत्यु के बाद, वह सारी चिंताओं से मुक्त हो गई।

(ख) 1. बाबू राधाकृष्ण ने अपनी पत्नी कुंती से—क्योंकि वह उनसे चाय पीने के लिए कह रही थी।
2. कुंती ने बाबू राधाकृष्ण से—क्योंकि राधाकृष्ण जी, सीताराम जी के बारे में बता रहे थे।
3. सीताराम जी के बच्चों ने गौरी से—क्योंकि सीताराम ने उनसे कहा था कि हम आपकी माँ को देखने चल रहे हैं।
4. कुंती ने अपनी बेटी गौरी से—क्योंकि वह सीताराम जी के गिरफ्तार होने पर कानपुर जाना चाहती थी।
5. गौरी ने अपनी माँ कुंती से—क्योंकि वह जल्द से जल्द, कानपुर, बच्चों के पास जाना चाहती थी।

(ग) **1. प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में पुत्री के प्रति पिता की चिंता तथा पुत्री का

सीताराम के बच्चों के लिए अच्छी सोच को दर्शाया गया है।

व्याख्या—राधाकृष्ण जब अपनी बेटी के लिए, सीताराम जी को देखकर आए तो उन्होंने कुंती को सीताराम जी के बारे में बताया और ये भी बताया कि उनके दो बच्चे हैं। हमारी बेटी तो उनकी आया बनकर जाएगी लेकिन सब सुनने के बाद, कुंती ने मन-ही-मन सोचा कि कोई भी स्त्री, जो इन बच्चों का लालन-पालन करेगी, उसका जीवन सार्थक हो जाएगा।

2. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों मे सीताराम की देशभक्ति के प्रति गौरी की सोच को दर्शाया गया है।

व्याख्या—गौरी अपने विवाह के बारे में सोच रही थी, तभी उसके मन में सीताराम जी का ख्याल आया कि उन्होंने अपना जीवन देश के लिए न्यौछावर कर दिया। नहीं तो बी०ए० पास करने के बाद, उनको भी नायब तहसीलदार की नौकरी मिल जाती। लेकिन सीताराम जी को सरकार की गुलामी करना पसंद नहीं था।

भाषा-बोध

(क)	आवश्यक	—	अनावश्यक	मुश्किल	—	आसान
	सुखी	—	दुखी	मान	—	अपमान

(ख)	पागल व्यक्ति	चतुर युवक	
	ताजा भोजन	विदेशी यात्री	
	भोला बालक	समझदार कुत्ता	
(ग)	बेकार	बेशर्म	बेचारा
	बेअदब	बेपरवाह	बेहिसाब
	बेसहारा	बेदाग	बेअक्ल
	बेईमान	बेवजह	बेरहम

(घ)	ज़रा-सा	—	कभी **जरा-सा** दुख सहन करना ही पड़ता है।
	सुंदर-सा	—	**सुंदर-सा** बालक खेल रहा था।
	पहाड़-सा	—	पिता की मौत सुनकर रोहन पर **पहाड़-सा** टूट पड़ा।
	काला-सा	—	एक **काला-सा** नाग रास्ते में पड़ा हुआ था।
	साधारण-सा	—	सीताराम **साधारण-सा** व्यक्ति था।

(ङ)	निश्छल	भावी	कपटी
	सश्रम	असंतुष्ट	गुप्त
	गुलदस्ता		

दीवानों की हस्ती (कविता) 5

(क) मौखिक

1. दीवानों के साथ मस्ती का आलम चला।
2. दीवाने किस ओर जा रहे हैं? यह पूछने के लिए मना करते हैं।
3. दीवाने उर, हृदय पर असफलता का भार लेकर चले।
4. दीवाने रुकने वालों के बारे में कहते हैं कि वे आबाद रहें।

(ख) लिखित

1. दीवाने अपनी चाल के बारे में कहते हैं कि हम मस्ती से, धूल उड़ाते चलते हैं।
2. कवि चौथे पद्यांश के माध्यम से कहना चाहता है कि दो बात हमने कहीं, दो। बात हमने सुनी, कुछ हँसे कुछ रोए। छककर सुख-दुख की भावनाओं को, एक साथ समान रखते हैं।
3. इस पंक्ति का आशय है कि उन्हें मान और अपमान से कोई फर्क नहीं पड़ता है।
4. दीवाने भलाई-बुराई से मुख मोड़कर, नतमस्तक होकर, आगे चल रहे हैं।
5. दीवानों की हस्ती कविता में कवि भगवतीप्रसाद वर्मा जी ने एक मस्तमौला और बेफिक्र व्यक्ति का स्वभाव दर्शाया है। कवि के अनुसार ऐसे दीवाने और बेफिक्र व्यक्ति जहाँ भी जाते हैं, वहाँ केवल खुशियाँ ही फैलाते हैं। उनका हर रूप मन को प्रसन्न कर देता है। फिर चाहे किसी की आँखों में आँसू ही क्यों न हों।

   कवि कभी भी एक जगह पर ज्यादा समय तक नहीं टिकते। वे तो संसार को कुछ मीठी प्यारी यादें और अहसास देकर अपने सफर पर निकल पड़ते हैं। कवि लोग संसारिक बंधनों से बँधे नहीं होते हैं। इसलिए वो सुख और दुख दोनों को एक समान रूप से स्वीकार करते हैं। यही उनके हमेशा खुश रहने की प्रमुख वजह है।

   कवि के अनुसार, उनके लिए संसार में कोई पराया नहीं होता है। वो अपने जीवन के रास्ते पर चलकर खुश रहते हैं और सदा अपने चुने हुए रास्तों पर ही चलना चाहते हैं।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि दीवानों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति को बता रहा है।

   व्याख्या—कवि कहता है कि दीवाने मस्तमौला लोग जहाँ भी जाते हैं, वहाँ का माहौल खुशियों से भर जाता है। फिर जब वो उस जगह से जाने लगते हैं, तो सब काफी दुखी हो जाते हैं। लोगों को उनके जाने का पता नहीं चलता तो वो मन में ही अफसोस करते रह जाते हैं कि उन्हें मालूम ही नहीं हुआ, कब आए और कब कहाँ चले गए।

2. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि दीवानों द्वारा देश की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने की बात कर रहा है।

   व्याख्या—कवि कहता है कि दीवाने मान और अपमान से रहित हैं, जी भरकर अपना काम करते हैं। देश की रक्षा के लिए, वह कुछ भी कर सकते हैं। वे हँसते-हँसते आज प्राणों की बाजी हार गए हैं।

3. **प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि दीवानों द्वारा सांसारिक बंधनों से मुक्त होने की बात बता रहा है।

   व्याख्या—कवि कहता है कि अब उनके लिए कोई अपना-पराया नहीं है। जो लोग एक मंजर पाकर, वहीं ठहर जाना चाहते हैं। उन्हें कवि ने सुखी और आबाद रहने का आशीर्वाद दिया है। मगर कवि खुद एक जगह बँधकर नहीं रहना चाहते हैं इसलिए उन्होंने अपने सभी सांसारिक बंधन तोड़ दिए हैं और अब वो अपने चुने हुए मार्ग पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। वे इसी में खुश और संतुष्ट हैं।

भाषा-बोध

(क)	उल्लास	—	हर्ष, खुशी	जग	—	संसार, दुनिया
	दृग	—	आँख, नयन	फूल	—	पुष्प, सुमन
(ख)	बस	—	यातायात का साधन, काफी			
	हार	—	माला, पराजय			
	कल	—	बीता हुआ दिन, आने वाला दिन			
(ग)	उल्लास	—	खल्लास, हर्षोल्लास	पक्का	—	चक्का, छक्का
	पत्ता	—	सत्ता, गत्ता	बच्चा	—	सच्चा, कच्चा
(घ)	निरुपाय		निर्धूम			

	निर्मूल		निर्जन			
(ङ)	सुख	—	दुख	मान	—	अपमान
	प्यार	—	नफरत	हार	—	जीत
	सफलता	—	असफलता	वरदान	—	श्राप
	अपना	—	पराया	चलना	—	रुकना

अकबरी लोटा (हास्य-कथा) 6

(क) मौखिक

1. लाला झाऊलाल ने अपनी पत्नी से वादा किया था कि आज से सातवें दिन मुझसे ढाई सौ रुपये ले लेना।
2. पं० बिलवासी मिश्र ने लाला झाऊलाल को तसल्ली दे रखी थी कि—मेरे पास हैं तो नहीं पर मैं कहीं से माँग-जाँचकर लाने की कोशिश करूँगा और अगर मिल गए तो कल शाम तुमसे मकान पर मिलूँगा।
3. लोटा एक अंग्रेज पर जाकर गिरा था।
4. पं० बिलवासी मिश्र ने लाला जी के साधारण लोटे को, अकबरी लोटा बताया क्योंकि वे उसे बेचना चाहते थे ताकि लाला झाऊलाल द्वारा किया गया वादा, पूरा हो सके।
5. अंग्रेज ने लोटे को पाँच सौ रुपये में खरीदा।

(ख) लिखित

1. पत्नी द्वारा ढाई सौ रुपये माँगे जाने पर, लाला जी का जी बैठ गया।
2. लाला जी के हाथ से छूटकर लोटा, एक अंग्रेज को पूरा भिगोता हुआ उसके पैर पर जाकर लगा। गिरने से पूर्व लोटा एक सायबान से टकराया। वहाँ टकराकर उस दुकान पर खड़े उस अंग्रेज को उसने सांगोपांग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर आ गिरा।
3. पं० बिलवासी मिश्र ने आँगन में पहुँचते ही सबसे पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़कर और जितने आदमी आँगन में घुस आए थे, सबको बाहर निकाल दिया।
4. अंग्रेज ने लोटे को पाँच सौ रुपये में खरीदा क्योंकि उसे बताया गया था कि यह एक प्रसिद्ध अकबरी लोटा है, जिसकी तलाश में संसार-भर के म्यूजियम परेशान हैं।

5. अंग्रेज और लाला जी के बीच उत्पन्न कलह को मिटाने में, पं० बिलवासी मिश्र ने अहम भूमिका निभाई। उन्होंने अंग्रेज को बेवकूफ बनाकर, टेढ़े लोटे को, 500 रुपये में बेच दिया।

(ग) 1. खाने-पीने 2. पं० बिलवासी 3. बदन
4. लोटे 5. अंडे

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. भीड़ को चीरते हुए, पं० बिलवासी मिश्र, आँगन में पहुँचे।
2. पंडित जी ने सबसे पहले अंग्रेज को छोड़कर सबको बाहर निकाल दिया।
3. आँगन में कुर्सी अंग्रेज के लिए रखी गई थी।
4. आँगन — प्रांगण पैर — चरण
आराम — विश्राम चोट — घाव

(ख) 1. अंग्रेज ने पं० बिलवासी मिश्र से—क्योंकि उन्होंने उसे बैठने के लिए कहा था और भीड़ को बाहर भगाया था।
2. अंग्रेज ने पं० बिलवासी मिश्र से—क्योंकि वह लाला झाऊलाल के खिलाफ रिपोर्ट कराना चाहते थे।
3. अंग्रेज ने पं० बिलवासी मिश्र से—क्योंकि वह पानी से भीगा था और उसके चोट लगी थी इसलिए वह उसे अपना हक समझता था।
4. अंग्रेज ने पं० बिलवासी मिश्र से—क्योंकि वह उस अकबरी लोटे को खरीदना चाहता था।
5. लाला झाऊलाल ने पं० बिलवासी मिश्र से—क्योंकि वह उसे धन्यवाद देना चाहते थे।

भाषा-बोध

(क) अधिकांश — अधिक + अंश प्रत्येक — प्रति + एक
तथैव — तथा + एव अत्यधिक — अति + अधिक
वीरांगना — वीर + अंगना न्यायाधीश — न्याय + आधीश

(ख) आँख — नयन, लोचन
विपदा — मुसीबत, विपत्ति
पानी — जल, नीर
पत्नी — अर्धांगिनी, भार्या

(ग) 1. आँखें सेंकना — किसी व्यक्ति को एकटक देखना।

चिड़िया सुंदर थी इसलिए वह **आँखें उस पर सेक** रहा था।

2. दिल बैठ जाना — भय के कारण साहस न रहना।
   भय के कारण राघव का **दिल बैठा जा** रहा था क्योंकि वह परीक्षा में फेल हो गया था।
3. आँखों से ओझल होना — गायब होना
   चोर पुलिस को देखकर **आँखों से ओझल हो गया**।
4. काशीवास की खबर आना — मृत्यु की खबर आना
   राहुल के दादा के **काशीवास की खबर आई**।
5. किरकिरा होना — खटकना
   तुम सभी की आँखों में **किरकिरे हो** गए हो।
6. बाँछ खिलना — अत्यधिक खुशी होना
   लाला झाऊलाल का लोटा पाँच सौ रुपये में बिक जाने के कारण उसकी तो **बाँछ खिल** गई।
7. बात का धनी होना — वादे का पक्का होना
   सच्चे और अच्छे व्यक्ति अपनी **बात के धनी होते** हैं।

(घ)

पक्का	—	कच्चा	पसंद	—	नापसंद
आदमी	—	राक्षस	समर्थ	—	असमर्थ
अर्थ	—	अनर्थ	उग्र	—	शांत

(ङ)

प्रतिष्ठा — हमें दूसरों की **प्रतिष्ठा** का ख्याल रखना चाहिए।
खुराफ़ाती — कुछ बच्चे **खुराफ़ाती** होते हैं।
सहेजना — हमें अपनी यादों को **सहेजना** चाहिए।
अदब — हमें दूसरों से **अदब** से बात करनी चाहिए।

स्नेह (कहानी) 7

(क) मौखिक

1. कोठरी में से उमा को देखने वाली दो आँखें शशि की थीं।
2. निरुपमा ने उमा के बहू बनकर आते ही, पहले दिन उसे समझाया था कि इस अभागे बालक को मुँह न लगाना।
3. अमूल्य और उमा ने अलग घर में रहने का फैसला, उमा के बीमार पड़ने पर किया क्योंकि वो दोनों शशि की खुशी चाहते थे।

4. निरुपमा ने शशि को उसके मामा के घर भेजने की बात इसलिए की क्योंकि वह उस अभागे बालक के कारण, अपनी चाँद-सी बहू को नहीं खोना चाहती थी।
5. श्यामा ने उमा को जानकारी दी कि—तुम्हारी जेठानी ने जब से जाना है कि शशि तुम्हारे पास आता है तो उन्होंने उसका स्कूल जाना बंदकर दिया है। उसे खूब मारती हैं। बेचारा बालक शायद अधिक जी न सकेगा।

(ख) लिखित

1. निरुपमा शशि को अभागा बालक इसलिए समझती थी क्योंकि वह सोचती थी कि शशि के पैदा होते ही, उसके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया और थोड़ा बड़े होते ही, उसके ताऊ जी का स्वर्गवास हो गया।
2. शशि ने रसगुल्ला इसलिए चुराया था क्योंकि उसे भूख लगी थी। उसके लिए निरुपमा ने उसे बहुत पीटा।
3. अमूल्य तथा उमा ने अलग घर में रहने में ही शशि की भलाई समझी क्योंकि वह शशि से प्रेम दिखाती थी तो निरुपमा को अच्छा नहीं लगता था और वह उसे मारती थी।
4. निरुपमा ने शशि का स्कूल जाना इसलिए बंद करा दिया क्योंकि वह स्कूल जाते वक्त उमा से मिलता था।
5. उमा ने शशि को निरुपमा के अत्याचार से मुक्त कराने का अंतिम निर्णय तब लिया जब शशि मौत की कगार पर पहुँच गया। इसके लिए उसने अपने बच्चे को उठाकर, उसके चरणों में डाल दिया और आर्द्र स्वर में बोली, ''जीजी! इसे खाकर अपनी आग शांत कर लो, मेरे शशि को मुझे दे दो।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)
1. उमा के बच्चे की आयु 1 साल थी।
2. उमा शशि के बारे में सोचने लगी थी कि शशि अब प्रसन्न है।
3. उमा सही वक्त पर, खिड़की पर आकर खड़ी हो जाती थी।
4. बालक — शिशु, बच्चा मकान — घर, गृह
   प्रसन्न — खुश, हर्षित

(ख)
1. उमा ने शशि से
2. उमा ने निरुपमा से
3. निरुपमा ने उमा से
4. उमा ने अपने पति अमूल्य से
5. श्यामा ने उमा से।

(ग)	1. पूजा	2. व्याकुल	3. साँप
	4. चार	5. मामा	6. जिह्वा

भाषा-बोध

(क)	वेग	—	आवेग	जन	—	दुर्जन
	जन्म	—	आजन्म	गम	—	दुर्गम
	गमन	—	आगमन	घटना	—	दुर्घटना
	मूल	—	आमूल	दशा	—	दुर्दशा
	मरण	—	आमरण	बल	—	दुर्बल
	कंठ	—	आकंठ	भाग्य	—	दुर्भाग्य
	जीवन	—	आजीवन	आचार	—	दुराचार
(ख)	व्याकुलता	—	व्याकुल	दिन	—	दैनिक
	अंत	—	अंतिम	अहंकार	—	अहंकारी
	कठोरता	—	कठोर	परख	—	पारखी
(ग)	हाथ	—	हस्त, कर	बालक	—	लड़का, बाल
	दिन	—	वासर, वार	माँ	—	अंबा, माता
	मकान	—	आलय, गृह			
(घ)	दिन	—	रात	आरोह	—	अवरोह
	क्रोध	—	प्रसन्नता	कठोर	—	कोमल
	अक्षम	—	सक्षम	प्रेम	—	घृणा
	कठोरता	—	कोमलता	उग्र	—	शांत
	दिन	—	रात			
(ङ)	भयंकर	—	भ् + अ + य् + अं + क् + अ + र् + अ			
	भूमिका	—	भ् + ऊ + म् + इ + क् + आ			
	चकित	—	च् + अ् + क् + इ + त् + अ			
	भावना	—	भ् + आ + व् + अ + न् + आ			
	सहसा	—	स् + अ + ह् + अ + स् + आ			
	शैतान	—	श् + ए + त् + आ + न् + अ			

क्या निराश हुआ जाए (निबंध) 8

(क) मौखिक

1. आजकल देश में भ्रष्टाचार का माहौल है।

2. लेखक का मन कहता है, कि लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है।
3. आजकल ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।
4. कानून और धर्म में अंतर होने का कारण यह है कि धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है।
5. रेलवे स्टेशन पर लेखक के साथ यह घटना घटी कि टिकट लेते वक्त उसने धोखे से सौ का नोट दे दिया और सीट पर आकर बैठ गया लेकिन थोड़ी देर में टिकट-बाबू उन दिनों के सेकेंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला ''यह बहुत बड़ी गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा मैंने भी नहीं देखा।''
6. कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से विनती की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

(ख) लिखित

1. लेखक भारतीय आदर्शों की विशेषता बताता है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी भारतवर्ष मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है। झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है।
2. भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है।
3. भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं।
4. बस के यात्री ड्राइवर को इसलिए पीटना चाहते थे क्योंकि उन्हें लग रहा था कि ड्राइवर डाकुओं से मिला हुआ है और वह उन्हें लुटवाना चाहता है।

5. मानवता कम हो गई है, परन्तु समाप्त नहीं हुई है क्योंकि आज भी भारतवर्ष मनुष्य से प्रेम करता है। महिलाओं का सम्मान करता है। झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है।

(ग) खाली स्थान भरो–

1. तिलक, गाँधी 2. मनीषियों 3. क्रोध
4. आदर्शों 5. सच्चाई और ईमानदारी

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. भारतवर्ष कानून को धर्म के रूप में देखता रहा है।
2. धोखा कानून को दिया जा सकता है, पर धर्म को नहीं।
3. कानून की त्रुटियों का लाभ, धर्म-भीरु उठाते हैं।
4. सदा — हमेशा भीरु — डरपोक
एकाएक — अचानक त्रुटि — गलती
अंतर — अलग

(ख) आर्य, द्रविड़, हिंदू, मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन भूमि और मनुष्य का मन जो इतना विशाल है, जिसमें सभी धर्मों के लिए समान भाव हैं। और जिसे कवि ने समुद्र की संज्ञा दी है कि क्या वह सूख गया है?

भाषा-बोध

(क) हाथ — हस्त दूध — दुग्ध
भूख — क्षुदा रात — रात्रि
बादल — वारिद पानी — जल

(ख) बेबस — बे + बस आजीवन — आ + जीवन
सुविधा — सु + विधा उपस्थित — उप + स्थित
विनम्रता — वि + नम्रता वियोग — वि + योग

(ग) 1. और 2. और 3. और
4. लेकिन

(घ) सुखी — दुखी गुण — अवगुण
धर्म — अधर्म उचित — अनुचित
उपेक्षा — अपेक्षा मान — अपमान
वांछित — अवांछित समर्थ — असमर्थ

(ङ) तस्कर — तस्करी दरिद्र — दरिद्रता

विनम्र	—	विनम्रता	मनुष्य	—	मनुष्यता
अच्छा	—	अच्छाई	बच्चा	—	बचपन

बाँस (कथा) 9

(क) मौखिक

1. महात्मा बुद्ध को शास्ता और तथागत भी कहकर पुकारा जाता था।
2. आदमी शेर से डरकर भागा क्योंकि वह शेर भूखा और आदमखोर था तथा उसे फाड़ खाने को आतुर था।
3. आदमी जब शेर से बचकर भाग रहा था तो सामने एक नदी आ गयी। उसके सामने नदी थी और पीछे शेर, दोनों तरफ मौत थी इसलिए उसने सोचा, जब मरना है तो ऐसे ही मरते हैं और नदी में कूद गया।
4. आदमी ने बाँस को घर ले जाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि बाँस को पकड़ने के कारण, उसकी जान बची थी और वह उसे ईश्वर समझता था।
5. भगवान तथागत ने आदमी को समझाया कि इसे जो करना था कर चुका, अब यह मात्र बोझ है। इसे ढोते जाने का कोई अर्थ नहीं, विवेक से काम ले। इस बाँस को अपने सिर से उतार फेंक और आराम से घर जा।

(ख) लिखित

1. लेखक कहानियों की विशेषता बताते हुए कहता है कि कुछ कहानियाँ होती हैं, जो इस कान से आती हैं और उस कान से निकल जाती हैं। कुछ कहानियाँ होती हैं, जो कान में आती तो हैं कुछ समय के लिए, अंदर पड़ाव डालती हैं और अंत में डेरा-डंडा उठाकर चल देती हैं। मगर कुछ कहानियाँ ऐसी भी होती हैं जो दिल और दिमाग में अपना घर बनाती हैं और वहीं बस जाती हैं।
2. आदमी ने बाँस में ईश्वर का रूप देखा क्योंकि उस बाँस को पकड़ने के बाद ही, उसकी जान बची थी और वह नदी पार कर गया था।
3. भगवान बुद्ध के द्वारा आदमी से पूछे गये प्रश्न तथा आदमी द्वारा दिए गए उत्तर निम्न प्रकार हैं—

   भगवान बुद्ध — आर्य क्या पत्तन ग्राम में बाँस नहीं होते?

   आदमी — क्यों नहीं होते भंते! पत्तनग्राम तो बाँसों के वन में ही अवस्थित है।

भगवान बुद्ध — तो क्या यह किसी विशेष जाति का बाँस है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं है?

आदमी — ऐसा भी नहीं है भंते, यह हर जगह उपलब्ध है।

4. भगवान बुद्ध ने मनुष्य जीवन के बारे में विचार प्रकट किए कि जीवन सर्वोपरि है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. आदमी अगर पीछे जाता था तो शेर उसे खा जाता और अगर आगे जाता है तो नदी में डूबा जाता इसलिए आदमी के आगे-पीछे मौत थी।

2. आदमी सोचने में वक्त नहीं गवाना चाहता था क्योंकि जब तक सोचेगा, तब तक शेर उसे खा जाएगा।

3. आदमी ने यह इसलिए सोचा क्योंकि शेर के द्वारा मारे जाने से तो नदी में कूदकर मरना ज्यादा अच्छा है।

4. शेर — सिंह, वनराज नदी — सरिता, तटिनी
मौत — मृत्यु, निधन वक्त — समय, काल

(ख) 1. भगवान बुद्ध ने आदमी से—क्योंकि उसने उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था।

2. आदमी ने भगवान बुद्ध से—क्योंकि भगवान बुद्ध ने उससे पूछा था कि क्या पत्तनग्राम में बाँस नहीं होते?

3. आदमी ने भगवान बुद्ध से—क्योंकि बाँस की वजह से आदमी की जान बची थी।

4. भगवान बुद्ध ने आदमी से—क्योंकि वह उसे जीवन के महत्व की बात बता रहे थे।

भाषा-बोध

(क)

जंगल	—	जंगली	घर	—	घरेलू
दया	—	दयालु	मृत्यु	—	मृत्य

(ख)

जंगल	—	वन, अरण्य	नदी	—	सरिता, सलिला
रास्ता	—	डगर, पथ	शाम	—	संध्या, साँझ
पानी	—	जल, नीर	आदमी	—	नर, पुरुष
घर	—	ग्रह, आलय	ईश्वर	—	भगवान, प्रभु

(ग) 1. निरंतर 2. बार-बार
3. कहाँ 4. केवल

(घ)

अंदर	बाहर
जीवित	मृत
कृतज्ञ	कृतघ्न
मुश्किल	आसान
उद्देश्य	निरुद्देश्य

2. गिद्ध **मृत** जानवरों को अपना भोजन बनाता है।
3. वह व्यक्ति **कृतघ्न** है।
4. परीक्षा के प्रश्न **आसान** हैं।
5. किसी-किसी व्यक्ति का जीवन **निरुद्देश्य** होता है।

(ङ)

भूखा	—	भूख	कृतज्ञ	—	कृतज्ञता
आतुर	—	आतुरता	लंबा	—	लंबाई
नेक	—	नेकी	भारी	—	भार
आदमी	—	आदमीयत	प्यासा	—	प्यास
पशु	—	पशुता	शांत	—	शांति

कुश्ती का मुकाबला (कहानी) 10

(क) मौखिक

1. सम्राट कृष्णदेव राय न्यायप्रिय और दयालु व्यक्ति थे।
2. वसंतोत्सव पर सम्राट कृष्णदेव राय एक महान प्रदर्शनी का आयोजन करते थे। जिसमें उत्तम चित्रों तथा मूर्तियों पर सम्राट अपने हाथों से कलाकार को पुरस्कृत करते थे।
3. तेनालीराम के गुणों से प्रभावित होकर महाराज कृष्णदेव राय, उनका बहुत सम्मान करते थे इसलिए दरबारी तेनालीराम से ईर्ष्या करते थे।
4. लंका से राजदरबार में एक कुश्तीबाज उपस्थित हुआ था क्योंकि वह विश्व के कई कुश्तीबाजों को पराजित कर चुका था और अब वह महाराज कृष्णदेव राय के कुश्तीबाजों के साथ, कुश्ती करना चाहता था।
5. कृष्णदेव राय ने दरबार में घोषणा की कि ''जो व्यक्ति कुश्ती के मुकाबले में इस कुश्तीबाज को परास्त कर देगा, उसे एक हजार स्वर्ण-मुद्राएँ भेंट स्वरूप दी जाएँगी। क्योंकि उनके राज्य का कोई भी व्यक्ति उससे कुश्ती नहीं करना चाहता था।

(ख) लिखित

1. लोग सम्राट कृष्णदेव राय की तुलना राजा भोज और सम्राट अशोक से करते थे क्योंकि वह कलाकारों को अपने हाथ से सम्मानित करते थे।
2. तेनाली को लोग तेनालीराम, तेनालीरामा, तेनाली रामाकृष्ण और तेनाली रामाकृष्णुडु इत्यादि नामों से पुकारते थे।
3. तेनालीराम की तीव्र बुद्धि और हाजिर जवाबी के कारण कृष्णदेवराय उससे सर्वाधिक प्रेम करते थे।
4. कुश्तीबाज ने दरबार में उपस्थित होकर आह्वान किया कि क्या आपके दरबार में कोई ऐसा कुश्तीबाज है, जो कुश्ती के मुकाबले में मुझे परास्त कर सके।
5. महाराज की घोषणा होने के बाद भी, जब दरबार में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो दरबार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, तेनालीराम ने कुश्ती लड़ने की चुनौती स्वीकार की।
6. तेनालीराम ने पहले संकेत में धरती को प्रणाम किया और फिर वे आगे की ओर झुके। इसके बाद दूसरे संकेत में अपने बाएँ हाथ का घूँसा बनाकर, उन्होंने अपनी छाती पर मारा तथा तीसरे संकेत में फिर स्वयं जोर-जारे से हिलने लगे। जिसमें पहले संकेत का अर्थ था कि कुश्ती बाज मेरी छाती पर जोर से घूँसा मारेगा, जिससे मुझे पूरी पृथ्वी काँपती नजर आएगी। दूसरे संकेत का अर्थ था कि मैं सहायता के लिए वहाँ उपस्थित सभी लोगों तथा ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। तथा तीसरे संकेत का अर्थ था कि कुश्तीबाज आव देखेगा न ताव, झटपट मेरी गर्दन पकड़ लेगा और मेरी गर्दन टूट जाएगी।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. दरबार में उपस्थित लोगों को लग रहा था कि आज तेनालीराम का काम तमाम हो जाएगा।
2. महाराज कृष्णदेव राय इसलिए चिंतित थे क्योंकि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि तेनालीराम, यह प्रतियोगिता कैसे जीतेंगे?
3. महाराज खामोश थे क्योंकि उन्हें तेनालीराम की बुद्धिमानी पर पूर्ण विश्वास था।
4. विपरीत — महाराज सारी बातों के **विपरीत** चिंतित थे।

चिंता — महाराज के मुखमण्डल पर **चिंता** की गंभीर रेखाएँ दृष्टिगोचर हो रही थीं।

प्रतिस्पर्धा — महाराज यह समझ नहीं पा रहे थे कि तेनालीराम इस **प्रतिस्पर्धा** को कैसे जीतेंगे?

बुद्धिमानी — महाराज को तेनालीराम की **बुद्धिमानी** पर पूर्ण विश्वास था।

(ख) 1. कुश्तीबाज ने महाराज से
2. महाराज कृष्णदेव राय ने अपने राज्य के लोगों से
3. तेनालीराम ने महाराज से
4. कुश्तीबाज ने तेनालीराम से
5. तेनालीराम ने कुश्तीबाज से

भाषा-बोध

(क)

लोकप्रियता	दयालुता
संपन्नता	वास्तविकता
वीरता	पूर्णता
विशेषज्ञता	मानवता

(ख)

जो कठिनाई से मिले	—	दुर्लभ
जिसके समान कोई दूसरा न हो	—	अद्‌वितीय
साथ में काम करने वाला	—	सहकर्मी

(ग)

भोज	—	भोजन	आदि	—	आरम्भ
भोग	—	प्रसाद	आदी	—	आदत
नीर	—	पानी	चिर	—	दीर्घकालीन
नीड़	—	घोंसला	चीर	—	कपड़ा

(घ)

वीर	—	हिम्मतवाला, बहादुर, साहसी
शौक	—	चाह, रुचि, प्रवृत्ति
सम्राट	—	राजा, शासक, प्रजापालक
विद्वान	—	ज्ञानी, पंडित, विज्ञ
देह	—	काया, तन, शरीर

(ङ) मुँह ताकना — **दूसरे पर आश्रित होना**

कामचोर व्यक्ति सिर्फ दूसरे का **मुँह ताकता** है।

एकटक देखना — **लगातार देखना**

अध्यापक रोहित को उसकी गलती पर **एक टक देख** रहे थे।

फूला न समाना — **बहुत खुश होना।**

विद्यार्थी अपनी सफलता पर **फूला न समाया**।

भयभीत होना — **डर जाना**

राहुल ने काँच का गिलास तोड़ा इसलिए वह **भयभीत हो गया** था।

ईश्वर को प्यारा होना — **मर जाना**

दरबार के लोगों का सोचना था कि तेनालीराम कुश्तीबाज से कुश्ती करने के बाद **ईश्वर को प्यारा हो जाएगा**।

चल पड़े जिधर दो पग (कविता) 11

(क) मौखिक

1. कवि के अनुसार जिस मार्ग पर गाँधी जी के दो कदम चल पड़ते हैं, उसी ओर हजारों कदम चलते हैं, सभी लोग उसी तरफ चलते हैं।
2. करोड़ों हाथ उसके रक्षक बन जाते हैं, जिसके सर पर गाँधी जी हाथ रख देते हैं।
3. कवि गाँधीजी को भूमि की स्थिर, कमरबन्द बताता है जो भूमि की खाल पर अमिट लेख खींच देती है।
4. कवि ने गाँधीजी को युगपरिवर्तक इसलिए कहा है कि उन्होंने लोगों की सोच बदल दी थी।

(ख) लिखित

1. गाँधी जी ने हमारे देश को स्वतन्त्र कराने के लिए, अंग्रेजों के साथ बिना शस्त्र उठाए युद्ध किया था इसलिए गाँधी जी को इतिहास सदैव याद रखेगा।
2. कवि ने गाँधी जी को कोटिरूप, कोटिबाहु इसलिए कहा है क्योंकि जो गाँधी के साथ रहता था, वह भी गाँधी जी की तरह ही कार्य करता था।
3. गाँधी जी की प्रसन्नता से युग आगे बढ़ जाता था और नाराजगी से युग पीछे हट जाता था।
4. कवि गाँधी जी को युगाधार कहकर इसलिए सम्बोधित करता है क्योंकि

वह युग के आधार थे। उन्होंने युग को परिवर्तित कर दिया था। वे जिधर चलते थे, युग भी उधर ही चलता था।

5. कवि ने गाँधी जी को युग निर्माता इसलिए कहा है क्योंकि युग गाँधी जी की हँसी देखकर, आगे बढ़ता है और भृकुटि देखकर पीछे हटता है।
6. इस कविता का सार यही है कि इसमें कवि ने गाँधी जी के समाज-सेवा और दलितों के उत्थान आदि को केन्द्र मानकर, गाँधी जी को युगनिर्माता, युग-संचालक बोला है क्योंकि इस कविता के माध्यम से गाँधी जी द्वारा देश के लिए किए गए कार्यों को ध्यान में रखा गया है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. **प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने गाँधी जी को एक राष्ट्रनेता के रूप में दिखाया है।

व्याख्या—इन पंक्तियों में कवि ने कहा है कि गाँधी जी के दो पग, जिस तरफ चल पड़ते थे। सभी लोग उसी तरफ चल देते थे और जिस तरफ वो दृष्टि डाल देते थे, सबकी दृष्टि भी, उसी ओर हो जाती थी।

2. **प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने गाँधी जी को एक युग निर्माता बताया है।

व्याख्या—गाँधी जी की हँसी देखकर, युग आगे बढ़ता था और भृकुटि को देखकर, पीछे हट जाता था। और वो पृथ्वी की स्थिर कमरबंध बनकर, उसको मिटाने वालों के लिए काल बन जाती हैं। और देश के दुश्मनों से देश की रक्षा करती है।

(ख) हे कोटिचरण! हे कोटिबाहु!
हे कोटिस्वरूप! हे कोटिनाम!
तुम एकमूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि,
हे कोटिमूर्ति! तुमको प्रणाम!

भाषा-बोध

(क)

भारतीय	—	ईय	—	राष्ट्रीय, नगरीय
सामाजिक	—	इक	—	राजनैतिक, सामूहिक
गुरुत्व	—	त्व	—	नेतृत्व, प्रभुत्व

(ख)

रक्षक	—	भक्षक	चल	—	अचल
मौन	—	वाचाल	धर्म	—	अधर्म
निर्माता	—	विध्वंसक	अपना	—	पराया

(ग) 1. समय को बदल देने वाला — युग परिवर्तक
2. रक्षा करने वाला — रक्षक
3. युग को आधार देने — युगाधार
4. चलाने वाला — चालक

(घ)

भृकुटि	—	भौंहे	डग	—	कदम
मग	—	मार्ग	दृग	—	आँख
अचल	—	स्थिर	कोटि	—	करोड़

(ङ) 2. कोटिनाम — क् + ओ + ट् + इ + न् + आ + म् + अ
3. संचित — स् + अं + च् + इ + त् + अ
4. संस्थापक — स् + अं + स् + थ् + आ + प् + अ + क् + अ
5. युगाधार — य् + उ + ग् + आ + ध् + आ + र् + अ

भारत की सांस्कृतिक एकता (लेख) 12

(क) मौखिक

1. सांस्कृतिक एकता भारतीय धर्मों के भेदों के अवरोधों की परिचायक है। वही त्याग और तप एंव मध्यम मार्ग की संयममयी भावना हिन्दू, बौद्ध, जैन और सिख सम्प्रदायों में समान रूप से विद्यमान है।
2. अश्वमेध यज्ञ विश्वविजयी राज्य की स्थापना के लिए किए जाते थे।
3. पारसी लोग अग्नि की पूजा करते हैं तथा गोमांस नहीं खाते हैं।
4. जैन तथा पारसी धर्म भारतीय धर्मों से समानता रखते हैं।
5. साहित्य में सांस्कृतिक राष्ट्रीय एकता के दर्शन होते हैं।

(ख) लिखित

1. भारत में विविध धर्म होते हुए भी सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं क्योंकि सांस्कृतिक एकता भारतीय धर्मों के भेदों के अवरोधों की परिचायक है तथा त्याग और तप एवं मध्यम मार्ग की संयमी भावना हिन्दू, जैन और सिक्ख सम्प्रदायों में समान रूप से विद्यमान है।
2. राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति, मानव हृदय के अधिक निकट है।
3. इस्लाम व इसाई धर्म के प्रभाव हिंदू धर्म की स्थापत्य कला, भाषा, रहन-सहन, वेश-भूषा, संगीत, साहित्य व कला पर पड़े।
4. भारत में भाषा को लेकर विवाद खड़े किए गए ताकि आपसी झगड़े और

भेद-भाव में हमारी शक्ति का ह्रास हो और विदेशी शासकों का राज्य अटल बना रहे।

5. भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सभी धर्मों का सामूहिक समावेश है। यह सभी को अपने आप में समा लेती है और किसी के प्रति भी कटुता का भाव नहीं रखती है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. भारत में सात पवित्र पुरियाँ स्थित हैं।

2. 'प्रात: स्मरण' से आशय, सुबह ईश्वर को याद करने से है। श्लोक इस प्रकार है—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षद्यिका:।।

3. उज्जयिनी का प्राचीन नाम अवंतिका था।

4. द्वारिका को द्वारावती तथा हरिद्वार को माया के नाम से संबोधित किया जाता था।

(ख) रिक्त स्थान

1. उपकरण 2. भेद और अभेद 3. ऋषभदेव
4. श्रीगुरुग्रन्थ साहब जी 5. स्वामी शंकराचार्य ने

भाषा-बोध

(क)	स्वार्थ	—	नि:स्वार्थ	आवश्यक	—	अनावश्यक
	प्राचीन	—	अर्वाचीन	दरिद्र	—	सम्पन्न
	एकता	—	अनेकता	सुसंगठित	—	असंगठित
(ख)	दशा	—	दशाएँ	हिन्दुओं	—	हिन्दू
	ग्रंथ	—	ग्रंथों	विचार	—	विचारों
	पुरी	—	पुरियाँ	दृश्यों	—	दृश्य
(ग)	समाज	—	सामाजिक	वेद	—	वैदिक
	धर्म	—	धार्मिक	भूगोल	—	भौगोलिक
	इतिहास	—	ऐतिहासिक	नीति	—	नैतिक

(घ) वृषभ — श्रेष्ठ
राष्ट्र — राष्ट्रीय

	ऋषभदेव		भूषण			
	ऋषि		सहिष्णु			
(ङ)	सत्याग्रह	—	सत्य का आग्रह	ग्रामगत	—	ग्राम को गत
	धर्म-कर्म	—	धर्म और कर्म	शब्दावली	—	शब्दों की अवली
	तुलसीकृत	—	तुलसी द्वारा कृत			
(च)	शक्ति	—	जोर, बल, ताकत	दरिद्र	—	दीन, गरीब, निर्धन
	मनुष्य	—	मानव, मनुज, नर	भूमि	—	पृथ्वी, धरा, वसुन्धरा
	नदी	—	सरिता, तरंगिनी, तटिनी	हाथी	—	गज, हस्ति, कुंजर

(छ)	उपयोगी	उपकरण
	विशाल	द्वीप
	केन्द्रीय	भाषा
	दरिद्र	ब्राह्मण
	सुंदर	आँखें
	संपन्न	परिवार
	मूर्ख	गधा
	सुखी	व्यक्ति

(ज)	पानी	—	जल, चमक, सम्मान
	जीवन	—	जिन्दगी, प्राण, नाम विशेष
	स्नेह	—	प्यार, एक तरह का चिकना पदार्थ, कोमलता
	हार	—	असफलता, फूलों का हार, पराजय
	फल	—	खाने वाला फल, परिणाम, संतान

विषम-ज्वर (कहानी) 13

(क) मौखिक

1. दीनानाथ की निगाह 109 के अंकों पर ठहर गई थी।
2. कैशियर ने दीनानाथ को बताया कि "पिछले महीने तुमने हर दिन घंटा-घंटा भर ज्यादा काम किया, यह रकम उसी की है। मालिक स्वयं तुम्हें काम करते देखते थे न।
3. दीनानाथ को याद आया कि उसके बच्चे पिछले छः महीने से फिल्म देखने को मचल रहे थे। छोटा छोकरा खिलौने की दुकान से रेल का इंजन मँगवाना चाहता था।

4. दीनानाथ सिनेमाघर से फिल्म देखे बिना वापस आ गया क्योंकि उसने सोचा फिल्म जाने अच्छी हो, न हो। अनदेखी-अनसुनी चीज के लिए दस आने पैसे क्यों फेंक दूँ।
5. दीनानाथ ने सोने से पूर्व अपनी पत्नी को कहा कि—"सुनती हो, अब शाम को, मैं कभी दफ्तर में नहीं रुकँगा।

(ख) लिखित

1. दीनानाथ को कैशियर के द्वारा 109 रुपये देने की बात पर आश्चर्य हुआ क्योंकि उसकी सैलरी 100 रुपये थी।
2. दीनानाथ ने वेतन में नौ अतिरिक्त रुपये खर्च करने के लिए, पहले तो सोचा कि अपनी पत्नी के लिए साड़ी ले लूँगा, उसके पास साड़ी नहीं है। वही साड़ी वह घर में पहनती है और वही बाहर, फिर सोचा कि बच्चों को फिल्म दिखा देता हूँ तथा छोटा गाड़ी के इंजन के लिए कह रहा था, फिर सोचा कि क्यों न ये पेसे, मैं अपने ऊपर खर्च करूँ। दस साल से मैंने किसी होटल में खाना नहीं खाया है, कोई फिल्म नहीं देखी और फटा कोट पहन रहा हूँ।
3. दीनानाथ अपने लिए कोट खरीदना चाहता था क्योंकि उसका कोट फट गया था और पिछले पाँच साल से वह फटा कोट पहन रहा था।
4. दीनानाथ बहुत ही साधारण व्यक्ति था। उसके घर में उसकी पत्नी थी और दो बच्चे थे। पिछले बारह वर्षों से दीनानाथ, इस दफ्तर में काम कर रहा था। वेतन की पूरी रकम पत्नी के हाथों में देता था। कभी धेला-पैसा भी उसमें से बचाकर नहीं रखता था। दीनानाथ को किसी चीज का व्यसन नहीं था। चाय वह पीता नहीं था। नाश्ता करता नहीं। पाँव-पैदल दफ्तर आता-जाता था।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. दीनानाथ अपनी पत्नी और बच्चों को होटल में खाना खिलाना चाहता था।
2. दीनानाथ रातभर अपने परिवार के साथ मिलकर, मौज मनाना चाहता था।
3. दीनानाथ ने रुपयों के सदुपयोग की बात इसलिए सोची क्योंकि हर महीने तो उसे ज्यादा पैसे मिलेंगे नहीं।
4. बढ़िया — अच्छा रात — रात्रि
   मौज — आनंद सदुपयोग — सही उपयोग

भाग्य — किस्मत

(ख) **व्याख्या**—उपर्युक्त पंक्ति में कहा गया है कि दीनानाथ को नौ रुपये ज्यादा मिले थे। वह यह निश्चित नहीं कर पा रहा था कि उन पैसों को कहाँ खर्च करे। इस बात से वह असमंजस में था, लेकिन नौ रुपये की मिठाई लेने के बाद वह निश्चित हो गया अर्थात् सामान्य अवस्था में हो गया और उसे नींद आ गयी।

भाषा-बोध

(क)	परिश्रमी	—	परिश्रम	अच्छा	—	अच्छाई
	परेशान	—	परेशानी	बच्चा	—	बचपन
	मनुष्य	—	मनुष्यता	सुंदर	—	सुंदरता
	सजाना	—	सजावट	युवक	—	यौवन
	पुरुष	—	पुरुषत्व	दुष्ट	—	दुष्टता
(ख)	घर	—	गृह	साल	—	वर्ष
	आदमी	—	मनुष्य	रात	—	रात्रि
	दिन	—	दिवस	आँख	—	अक्षि
(ग)	अंक	—	नंबर, हिस्सा, गोंद			
	कर	—	हाथ, ऋण			
	पास	—	समीप, सफल			
	बस	—	यातायात का साधन, वश			
(घ)	हाथ	—	हथियाना	गर्म	—	गर्माना
	जूता	—	जुतियाना	झूठ	—	झुठलाना
	अपना	—	अपनाना	दोहरा	—	दोहराना
	थरथर	—	थरथराना	भिनभिन	—	भिनभिनाना

(ङ) उल्लास — खुशी

दीनानाथ को नौ रुपये ज्यादा मिले थे, उसी **उल्लास** में वह सँभल नहीं रहा था।

रस्मोरिवाज — प्रथा

सबके अपने-अपने **रस्मोरिवाज** होते हैं।

चकाचौंध — तड़क-भड़क

होटलों की **चकाचौंध** देखकर दीनानाथ एक होटल में चला गया।

कैशियर — मुनीम

कैशियर एक जिम्मेदार व्यक्ति होना चाहिए।

हमारा घर (हास्य व्यंग्य) 14

मौखिक

1. लेखक मेहमानदारी के विषय में कहता है कि गल्ले की महँगाई, चीनी की कीमत या चावल के न मिलने के कारण, मेहमानदारी कुछ ज्यादा हो गयी है।
2. मेहमानों के आने और जाने को लेखक ने आवागमन की प्रथा कहा है।
3. लेखक अपने घर के बड़े कमरे की विशेषता बताता है कि वह बड़ा होने के कारण सामान से इतना भरा रहता है कि उसमें जाते ही ऐसा लगता है कि छोटे कमरे में चलो।
4. लेखक अपनी माताजी का परिचय देते हुए कहता है कि हमारी माता जी का कभी कोई कमरा नहीं रहा। दिन मुहल्ले में गुजरा और शाम हुई तो मंदिर चली गयीं। कहीं राधेश्याम कथावाचक का ड्रामा या कोई धार्मिक सिनेमा हो रहा हो तो, हो गया रातभर का इंतजाम। बांकी वक्त मिला तो उसमें धार्मिक चर्चा हुई।
5. लेखक बरामदे को कुरुक्षेत्र या नालंदा की भूमि का टुकड़ा कहकर सम्बोधित करता है।

(ख) लिखित

1. लेखक अपने घर की ये विशेषताएँ बताता है—मेरे घर का ज्यादातर इस्तेमाल मेरे मेहमान करते हैं। मेरे घर के छोटे कमरे में पुरानी चीजें इस प्रकार भरी हुई हैं कि यह कमरा कम व कबाड़ी की दुकान ज्यादा लगता है। मेरे घर में बच्चे सारा दिन खुराफात में लगे रहते हैं। घर का यह हाल रहता है कि सरकस या चिड़ियाघर जाने की तबीयत ही नहीं होती। बड़ी से बड़ी स्टंट फिल्म का निर्देशक अगर मेरे घर कुछ दिन रह जाए तो बहुत कुछ सीखकर जाए।
2. लेखक मेहमानों तथा मेहमानदारी से नाराज इसलिए दिखाई देता है क्योंकि घर के ज्यादातर प्रयोग वही करते हैं। उसका कहना है कि अगर अपने यहाँ चावल की पूर्ति न हो, तो दूसरे के यहाँ मेहमान बन जाओ।
3. लेखक पिताजी के कमरे का हाल बताते हुए कहता है कि उन्हें पुरानी चीजें सँभालने का शौक है। 1914 के लिखे दोस्तों के खतों का गट्ठर,

पुराने अखबारों की रद्दी, पुराने हुक्के, कलमदान, छड़ियाँ, लकड़ी का सामान वगैरह इस तरह भरा है कि यह कमरा कम लगता है कबाड़ी की दुकान ज्यादा।

4. लेखक के मित्र पहले 'हैरत' उपनाम से शायरी भी किया करते थे। पर जब किसी रिसाले ने इन्हें 'गैरत' नाम से छाप दिया, तब से शायरी छोड़ दी।
5. लेखक के घर में दो बच्चे हैं और उनकी रग-रग में खुराफात भरी है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क) 1. इस गद्यांश के रचयिता रवीन्द्रनाथ त्यागी जी हैं।
2. लेखक के अनुसार—गल्ले की महँगाई, चीनी की कीमत या चावल के न मिलने से मेहमानदारी की प्रथा को बढ़ावा मिला है।
3. लेखक के अनुसार अपने घर में खाना न हो, तो दूसरे के घर खाने में फायदा है।
4.
- **आवागमन–आवागमन** की इस प्रथा के कारण, गल्ले की महँगाई ज्यादा हो गयी है।
- **कीमत**–चीनी की **कीमत** दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।
- **मेहमानदारी**–मेहमानदारी कुछ ज्यादा ही हो गयी है।
- **उपाय**–दूसरे के घर खाना खाने से बेहतर **उपाय** और क्या हो सकता है?

(ख) 1. आवागमन की इस प्रथा पर गल्ले की महँगाई, चीनी की कीमत या चावल के न मिलने से कोई फर्क नहीं पड़ता।
2. घरवाले समझते हैं कि मेहमान का कुत्ता है और मेहमान समझते हैं कि घरवालों का कुत्ता है।
3. इन हजरत के साथ बात यह है कि दुनिया का कोई ऐसा विषय नहीं है, जिस पर ये, अप-टू-डेट ज्ञान न रखते हों।
4. बच्चों को इस सबसे कोई सरोकार नहीं।

भाषा-बोध

(क)	पसंद	—	नापसंद	दोस्त	—	दुश्मन
	बाहर	—	अन्दर	स्वार्थी	—	निस्स्वार्थी
	शौक	—	अरुचि	ज्ञान	—	अज्ञान
(ख)	पिता	—	माता	बरामदा	—	बरामदे
	बच्चा	—	बच्ची	कमरा	—	कमरे

	पति	—	पत्नी	मेहमान	—	मेहमानों
	भाई	—	बहन	सोफा	—	सोफे

(ग) घर — गृह, सदन, आलय
बच्चा — शिशु, बालक, बाल
मानव — आदमी, मनुष्य, इंसान
माँ — माता, अंबा, जननी
मित्र — दोस्त, सखा, साथी
चतुर — चालाक, होशियार, अक्लमंद

(घ) हाय! मेरी साइकिल चोरी हो गई।
ठीक! आप सही कह रहे हैं।
वाह! बहुत सुन्दर फूल है।
उफ! मेरे चोट लग गई।
छि:! कितना गन्दा व्यक्ति है।
ओहो! तो तुम आ ही गए।
शाबाश— तुम कक्षा में प्रथम आए हो।

निराकार एकांत–अमरनाथ (लेख) 15

(क) मौखिक

1. लेखक लिदर नदी के किनारे बैठकर स्वप्निल सौन्दर्य से परिव्याप्त, हरे–भरे पहाड़ों से घिरी व क्रीड़ा–कौतुक करती, यह सरिता देखता है।
2. पहाड़ों पर से खिसकती बर्फ सरिता पर, पुल बनाती है। और अनजाने ही मनुष्य की सहायता करती है।
3. असर निराकार एकांत की खोज में जुआँ घाटी और पिप्सू घाटी पर आए थे।
4. पाँच मील लंबे उतार का मार्ग 'पोषपथ' कहलाता है।

(ख) लिखित

1. लेखक चंदनवाड़ी की ओर जाते हुए, कभी सरिता के कलकल नाद को सुनता, जो चट्टानों से टकराती, प्रपात बनाती, आगे बढ़ रही थी। कभी गगनचुंबी देवदार और चीड़ के वृक्षों को देखता, चारों ओर व्याप्त हरीतिमा को देखता और देखता, उनके बीच में उमंगते–उमड़ते झरनों को।
2. असुरों की हड्डियाँ, चट्टानें बनकर मार्ग में बिखरी पड़ी हैं।
3. अमरनाथ की गुफा 12, 729 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

4. यह शिवलिंग प्रकृति द्वारा निर्मित होता है। यह दस फुट लंबा बनता है। चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के साथ-साथ, इस बर्फ का आकार भी घटता-बढ़ता है। श्रावण पूर्णिमा को यह पूरे आकार में आ जाता है। और अमावस्या तक धीरे-धीरे छोटा होता जाता है।
5. लारेंस डुरेल ने, यात्रा के बारे में कहा है कि यात्राएँ हमें केवल 'स्पेस' में ही नहीं ले जाती हैं, उन अज्ञात स्थानों की ओर भी ले जाती हैं, जो हमारे भीतर हैं।

विषय-वस्तु का ज्ञान

1. चंद्र ज्योत्सना हिम प्रदेश के सौन्दर्य को तरल बनाती है।
2. लेखक धुन्ध के आर-पार उभरते हुए, हिम श्रंगों को देखता है।
3. वायु की तासीर, चाकू की पैनी धार-सी तीखी है।
4. चन्द्र — चन्द्रमा ज्योत्सना — चाँदनी
   हिम — बर्फ सौन्दर्य — खूबसूरती
   झील — नदी (झरना)

भाषा-बोध

(क) नदी — सरिता, तटिनी पहाड़ — पर्वत, शैल
युद्ध — रण, संग्राम असुर — राक्षस, दैत्य

(ख) सुलभ — दुर्लभ प्रसन्न — अप्रसन्न
गहरा — उथला अंदर — बाहर
सुन्दर — कुरूप भव्य — साधारण
संकरा — चौड़ा संध्या — प्रात:
ऐश्वर्य — अनैश्वर्य ज्ञात — अज्ञात

(ग) 1. पुष्प 2. सौन्दर्य 3. हड्डियाँ
4. चन्द्र, ज्योत्सना 5. सुरम्य

चिड़िया चली चाँद के देश (कविता) 16

(क) मौखिक

1. चिड़िया के पंख नन्हें-नन्हें (छोटे-छोटे) हैं।
2. चिड़िया उड़ते हुए गाना गाती है।

3. इस पंक्ति का आशय यह है कि चिड़िया ऊपर उड़कर, यह देखना चाहती है कि ऊपर खाई है या बंजर भूमि।
4. चिड़िया चाँद पर बने मकान के बारे में सोचती है कि चाँद पर बने मकान आलीशान हैं या बंजर भूमि।

(ख) लिखित

1. चिड़िया चाँद के देश पंखों के सहारे जाती है।
2. चिड़िया चाँद के देश के बारे में कल्पना करती है कि ऊपर बाग-बगीचे हैं या ऊसर है, आलीशान मकान बने हैं या खाई, बंजर भूमि है। ऊपर उसे यह देखना है।
3. जो अपने पथ पर आगे बढ़ता जाता है, वही एक दिन उन्नति के शिखर पर पहुँचता है।
4. इस कविता का सार यही है कि इन्सान को कभी चिड़िया की तरह, हार नहीं माननी चाहिए और हिम्मत के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। इस तरह से उसे सफलता अवश्य प्राप्त हो जाती है।
5. **प्रसंग**—इस कविता में कवि ने धीरे-धीरे लक्ष्य की ओर बढ़ने की सीख दी है।

   व्यांख्या—इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि जो अपने पथ पर धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाते हैं, वो एक दिन निश्चित ही सफलता की ऊँचाई पर पहुँचते हैं। जिस तरह चिड़िया धीरे-धीरे मेहनत करके, ऊँचाई पर पहुँच जाती है, इसी प्रकार चिड़िया की भाँति ही व्यक्ति को भी धीरे-धीरे करके आगे बढ़ना सीखना चाहिए।

भाषा-बोध

(क)	चाँद	—	मयंक, चन्द्रमा	बगीचा	—	उद्यान, बाग
	मकान	—	घर, सदन	पथ	—	राह, मार्ग
(ख)	पर	—	लेकिन, पंख	मौज	—	मस्ती, आनंद
	खाई	—	खंदक, गहरी घाटी	जीवन	—	विशेष नाम, प्राण

(ग) चिड़िया चली चाँद के देश,
नन्हें-नन्हें पंख पसारे!
देखूँगी क्या-क्या है ऊपर!
बाग-बगीचे या है ऊसर?

(घ)	घमंड	—	अहंकार	मौज	—	आनंद
	ऐंठ	—	अकड़	लक्ष्य	—	उद्देश्य

सुखदा मणि (कहानी) 17

(क) मौखिक

1. गोपाल चतुर और समझदार युवक था।
2. गोपाल से ईर्ष्या, राज्य के पंडित करते थे क्योंकि वह कठिन से कठिन प्रश्न के उत्तर सरलता से दे देता था, इसी कारण राजदरबार में उसका बहुत सम्मान होता था।
3. पंडित गोपाल को सुखदा नामक मणि हासिल करने के लिए पीट रहे थे।
4. पंडितों ने सुखदा नामक मणि को जमीन से निकालने के लिए, जमीन को खोदा।

(ख) लिखित

1. गोपाल को राजदरबार में सम्मान इसलिए दिया जाता था क्योंकि वह कठिन से कठिन प्रश्न के उत्तर, सरलता से दे देता था।
2. गोपाल अपनी प्रसन्नता और सुख का कारण, सुखदा-मणि को बताता था।
3. गोपाल ने सुखदा-मणि के बारे में पंडितों को बताया कि चोरों के डर से मैंने उस मणि को, जंगल में जमीन के अन्दर गाड़ दिया है। आप मेरे साथ चलिए, मैं आपको वह स्थान बता दूँगा।
4. सुखदा-मणि का रहस्य था कि मनुष्य की बुद्धि ही सुखदा-मणि है।

विषय-वस्तु का ज्ञान

(क)

1. पंडितों ने मन-ही-मन ठान रखा था कि चाहें कुछ भी हो जाए, गोपाल से मणि छीनकर ही लौटना है।
2. पंडित गोपाल से सुखदा-मणि छीनना चाहते थे।
3. पंडित गोपाल से ईर्ष्या करते थे क्योंकि वह कठिन-से-कठिन प्रश्न का उत्तर सरलता से दे देता था। इसी कारण राजदरबार में उसका बहुत सम्मान होता था।

(ख)

1. सम्मान 2. मणि 3. सुखदा
4. आकाश 5. सो

भाषा-बोध

(क)

संयुक्ताक्षर	**नए शब्द**	
ण्ड	चण्डी	भिण्डी

	द्ध		बुद्धू	क्रुद्ध		
	न्न		सम्पन्न	उत्पन्न		
(ख)	बुद्धि	—	मूर्ख	सुखी	—	दुखी
	वृद्ध	—	युवक	दूर	—	पास
	जमीन	—	आसमान	झूठ	—	सच

(ग) 2. पण्डित 3. गोपाल 4. पण्डित

(घ)
- चतुर — **चालाक**
  गोपाल **चतुर** व्यक्ति था।
- ईर्ष्या — **जलन,(डाह)**
  पण्डित गोपाल से **ईर्ष्या** करते थे।
- मणि — **रत्न**
  गोपाल ने अपनी खुशी का कारण सुखदा-नामक **मणि** को बताया था।
- बुद्धिमानी — **अक्लमंदी**
  गोपाल **बुद्धिमानी** से काम लेता था।
- वृद्ध — **बूढ़ा**
  व्यक्ति एक दिन **वृद्ध** अवश्य होता है।
- सहर्ष — **प्रसन्नतापूर्वक**
  मैं **सहर्ष** आप सबको मणि दे देता।

(ङ)

कर	—	हाथ, ऋण
पानी	—	चमक, जल
मन	—	एक तौल, चित्त
बस	—	यातायात का साधन, वश
मणि	—	रत्न, एक नाग का नाम

(च)

समझदारी	—	समझ + दारी	लिखावट	—	लिखना + आवट
निश्चित	—	निश्चय + इत	श्रद्धालु	—	श्रद्धा + आलु
सुनहरी	—	सुनहरा + ई	झगड़ालू	—	झगड़ा + आलू
ईर्ष्यालु	—	ईर्ष्या + आलु			

(छ)

लोकप्रिय	—	लोकप्रियता	बच्चा	—	बचपन
ईर्ष्यालु	—	ईर्ष्या	आदमी	—	आदमियत
बुद्धिमान	—	बुद्धिमानी	अच्छा	—	अच्छाई
खुश	—	खुशी	पंडित	—	पांडित्य